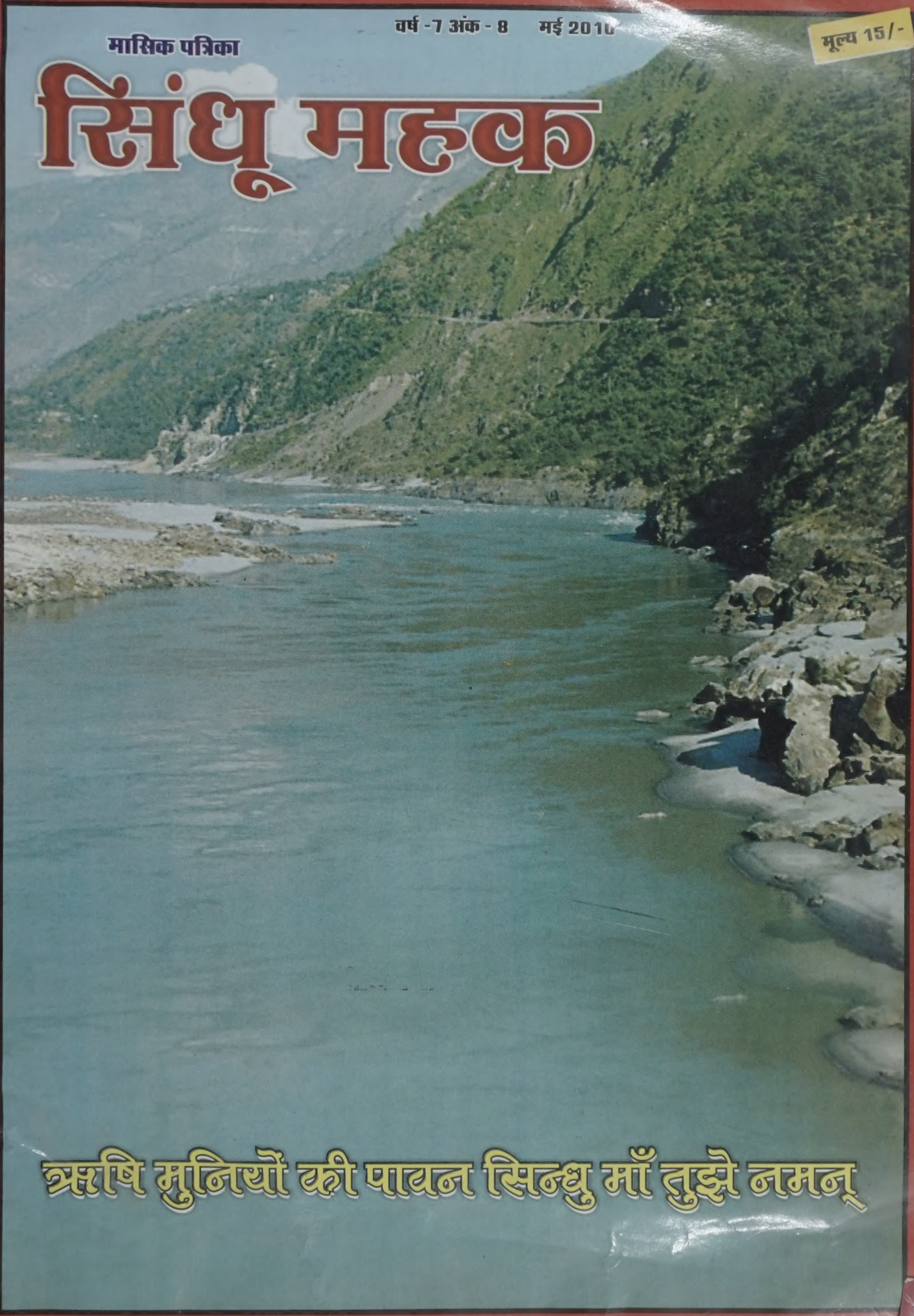


RNI NO-MPHIN/03/11977

मासिक पत्रिका

सिंधू महक

वर्ष-7, अंक - 8, मई 2010



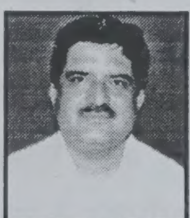
महेश चावला
प्रधान सम्पादक
मो. 9425012880



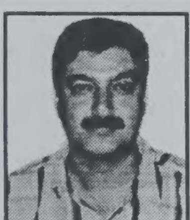
धर्मप्रकाश तेजा
सम्पादक
मो. 9300691132



परमानंद प्यासी
संरक्षक
मो. 09328311844



बसंत चेलानी
सलाहकार

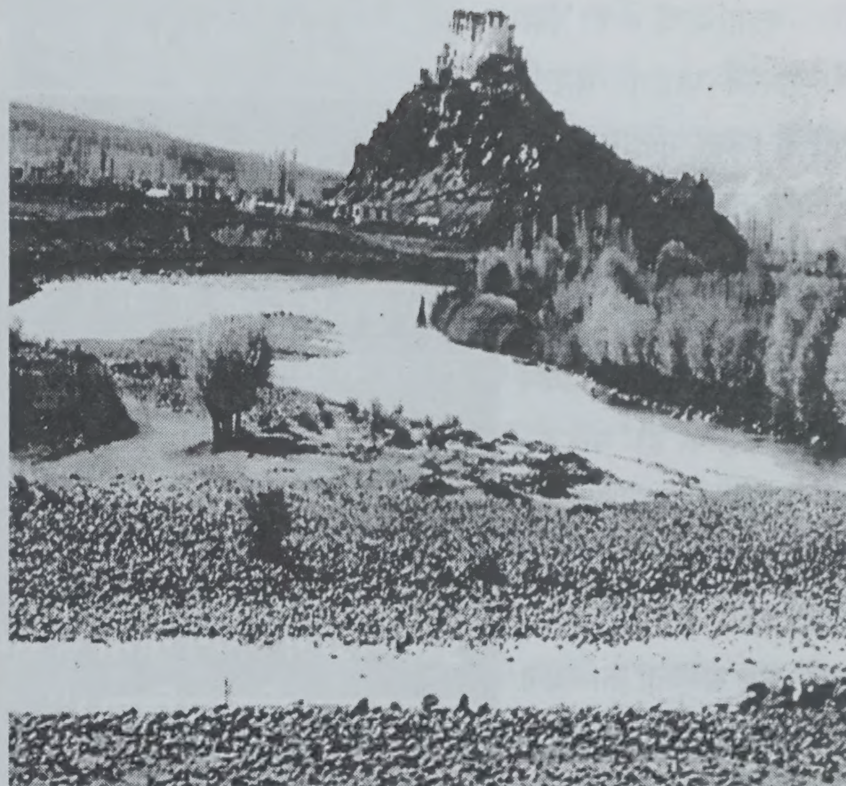


राजेश शर्मा
नगर संवाददाता
मो. 9425672277



राकेश वरंदानी
स्थानीय प्रतिनिधि
मो. 9755043515

डाक का पता : मासिक सिन्धू महक
पो.बाक्स नं. 5, बैरागढ़, भोपाल(म.प्र.)462030
कोरियर से भेजने का पता :
सम्पादक, सिंधू महक
एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट संस्कार स्कूल के पास,
बैरागढ़, भोपाल (म.प्र.)
E-mail : Sindhumahak@yahoo.com



सिन्धु नदी 'लेह लद्दाख'

- समाज के समाचार पत्र-पत्रिकाओं को खरीदकर पढ़ना एवं सहयोग देना आप सभी का कर्त्तव्य है। पाठकों का थोड़ा-थोड़ा सहयोग भी पत्र-पत्रिकाओं के लिये उनके प्रकाशन की निरंतरता को बनाये रखने में अत्यधिक सहयोगी सिद्ध होता है।
- अत: सम्माननीय बंधुओं से आग्रह है कि अधिक से अधिक संख्या में सदस्य बनकर सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही अपने उद्योग/संस्थान/या व्यक्तिगत विज्ञापन देकर अपने व्यवसाय को गति प्रदान करें, थोड़ा-थोड़ा प्रचार भी आपके व्यवसाय को अत्यधिक लाभ प्रदान कर सकता है।

-सम्पादक

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, **प्रकाशक-धर्मप्रकाश तेजा** द्वारा शाईन ऑफसेट, प्रेस कॉम्प.,जोन-1,एम.पी. नँगर, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं एफ-5,श्रद्धा अपार्टमेंट,संस्कार स्कूल के पास,बैरागढ़, भोपाल(म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-धर्मप्रकाश तेजा, मोबाईल : 09589024860, 09300691132 (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल होगा) RNI No. MPHIL/03.11977

माँ सिन्धु ! तुझे प्रणाम...

– वासुदेव 'सिन्धु-भारती'

❑ सिन्धु का महिमा-गान

शताब्दियों से ही '**सिन्धु**' नदी, सिन्धुजनों का मातृरूप में पालन-पोषण करती रही है। यह कदापि नहीं भुलाया जा सकता कि इसी सिन्धु-तट पर हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदों की रचना की थी। इस पावन सिन्धु-धरा पर ही 'मोहन-जो दड़ो' के भग्नावशेष आज भी अपना मस्तक ऊँचा किए हुए भारत की सर्वोत्कृष्ट सभ्यता का ध्वज फहरा रहे हैं।

स्वातंत्र्यवीर सावरकर ने अपनी पुस्तक '**हिन्दुत्व**' में सिन्धु का महिमा-गान करते हुए लिखा है- ''यह सुनिश्चित है कि आज के विश्व में प्राचीन मिस्र तथा बेबीलोन की प्राचीन सभ्यताएँ सुविख्यात हैं। जब उनका नाम भी किसी ने नहीं सुना था तब भी पवित्र सिन्धु सलिल की पावन कलकल ध्वनि के साथ अग्निहोत्र के यज्ञधूम्र की सुगंध प्रवाहित हुआ करती थी और यह महान सिन्धुतट के वेदों के पावन घोष से गुंजित होता था, जिससे आर्यजनों के अन्तःकरण में आध्यात्मिकता की पुनीत ज्योति प्रज्वलित होती थी।''

पुराणकारों ने इस महानद की पुण्य धारा में स्तवन करते हुए लिखा है कि इस महानद की पुण्य धारा में स्नान करने से लोग पापों से मुक्त हो जाते हैं और इसके जल का सेवन करने से मनुष्य का शरीर अधिक पुष्ट और शक्तिशाली होता है।... सिन्धु नदी का सबसे बड़ा महत्व यह है कि इसी नदी ने अपने नामों से समस्त विश्व को भारत का परिचय दिया।''

❑ सिन्धु गौरवमय नद

साहित्याचार्य **पंडित सीताराम चतुर्वेदी** ने अपनी पुस्तक '**जय साधुबेला**' में लिखा है-''यह सिन्धुनद भारत का वह गौरवमय नद है, जिसकी सरिताओं के कूलों और उपकूलों में भारतीय सभ्यता, साहित्य, धर्म और समाज ने अपना जन्म ग्रहण किया, पोषण प्राप्त किया, संस्कार सिद्ध किया और विश्व भर में अपने दिव्य उद्‌बोधन का संदेश फैलाया।''

उन्होंने आगे लिखा है- ''भारतीय संस्कृति की जिस उदात्त भूमिका ने एक बार संसार को चकित कर दिया था, जिसके आश्रय पर भारत ने स्वयं को संसार का गुरू कहलाने का गौरव प्राप्त किया था, जिसकी व्यापक परम्परा ने हमारे धर्म, साहित्य और समाज को आज तक अक्षुण्ण, अपराजित और अमर बनाए रखा, उसका जन्म और पोषण इसी महानद सिन्धु और उसकी सहायक नदियों से अभिषिक्त त्रिसप्त सिन्ध प्रदेश से हुआ।... पुराणकारों ने इस महानद की पुण्य धारा में स्तवन

करते हुए लिखा है कि इस महानद की पुण्य धारा में स्नान करने से लोग पापों से मुक्त हो जाते हैं और इसके जल का सेवन करने से मनुष्य का शरीर अधिक पुष्ट और शक्तिशाली होता है ।... सिन्धु नदी का सबसे बड़ा महत्व यह है कि इसी नदी ने अपने नामों से समस्त विश्व को भारत का परिचय दिया ।''

❑ **बहुरूपिणी सिन्धु**

गुजरात के विद्वान साहित्यकार **श्री इन्दुलाल गाँधी** ने अपने सिन्धु की यात्रा-वृतांत नुमा आलेख 'सिन्धु-स्मरण' में सिन्धु के विविध रूपों का सुंदर व सटीक विवरण दिया है। प्रस्तुत हैं कुछ अंश:-

''किशोरोवस्था की कोमल उमंग और उम्र की पहली पचीसी के आविर्भाव का वह पहला परिभ्रमण था। जिसे वेद में '**समुद्र-नंदिनी**' कहा गया है, उस पुण्यसलिला सिन्धु के किनारे-किनारे लगातार बारह महीने तक घूमने का शारीरिक और मानसिक सौभाग्य मुझे मिला था। या यों कह लीजिए कि यह तरुणावस्था के प्रारंभ् काल की एक अत्यंत मुग्धमंगलकारी यात्रा थी। जैसे टूटा हुआ दर्पण अपने अनेक टुकड़ों में हमारे मुखड़े के भिन्न-भिन्न भागों का खंडित होते हुए भी दर्शन कराता है, उसी तरह अनेक जलखंडों में फैली हुई बहुरूपिणी सिन्धु का अपूर्ण-पूर्ण दर्शन मुझे मिला था। ... कैलाश से उत्पाती तरूणी की तरह सरसराती नीचे उतरती हुई और पार्वती के चरणों की वंदना करके ससुराल जाती हुई गंभीर-गर्वीली, चतुर कन्या-सी सिन्धु पश्चिमोत्तर की और शरमाती-शरमाती आगे बढ़ती है। ... 'ब्राह्मानाबाद' के पश्चिम में बहती सिन्धु में मुझे माँ के वात्सल्य के दर्शन हुए। अथाह पानी जैसे स्वयं को समेटे हुए शांत बैठा हो। तट पर फैली वनश्री ने भी उद्भुत मौन धारण कर रखा था। यहां की सिन्धु मुझे ऐसी लगी, जैसे कौरवों से युद्धरत पांडवों की चिंताकातर माता कुन्ती उस संकट-काल में क्रंदन कर रही हो और उसकी आँखों से झरने वाली अश्रुधारा ही मानो सिन्धु के रूप में बह रही हो। सिन्ध तो एकदम ही सूखा प्रदेश है। वर्षा न हो, तो सिन्धु रूपी इस माँ के अलावा इस रेतीले प्रदेश को बारहों महीने हरा-भरा और उपजाऊ कौन बनाए रखेगा ?''

'ब्राह्मानाबाद' के पश्चिम में बहती सिन्धु में मुझे माँ के वात्सल्य के दर्शन हुए। अथाह पानी जैसे स्वयं को समेटे हुए शांत बैठा हो। तट पर फैली वनश्री ने भी उद्भुत मौन धारण कर रखा था। यहां की सिन्धु मुझे ऐसी लगी, जैसे कौरवों से युद्धरत पांडवों की चिंताकातर माता कुन्ती उस संकट-काल में क्रंदन कर रही हो और उसकी आँखों से झरने वाली अश्रुधारा ही मानो सिन्धु के रूप में बह रही हो। सिन्ध तो एकदम ही सूखा प्रदेश है।

करवट बदलता इतिहास और सिन्धु का शांति व विकराल रूप

वे आगे लिखते हैं-''इतिहास ने सिन्धु-तट पर कई बार करवट बदली है। कौन जाने इच्छा से या अनिच्छा से, पर लक्ष्मी-लोलुप विदेशियों को सिन्धु ने ही अपने सीने पर से गुज़ारकर भारत की धरती पर उतारा था। आखिर जननी तो जननी है। उसमें अपने-पराए का भेद नहीं। उसके द्वार पर जो भी आए, उसे आश्रय देना उसका धर्म है। भारत पर अधिकांश आक्रमण इसी मार्ग से हुए हैं। शक और हूण, सिकंदर और बाबर इसी मार्ग से भारत की धरती पर आए थे। ... महीनों तक मैं वहाँ घूमा हूँ, पर यहाँ की सिन्धु को मैंने उछलते हुए नहीं देखा। अत्यंत शांत प्रवाह-माँ की गोद जैसा। अथाह जल होते हुए भी ब्राह्मनाबाद की इस सिन्धु में इतना आकर्षण था कि मुझे उसमें स्नान करने की इच्छा हो आई थी।... एक बार आधी रात के समय मैंने एक अविस्मरणीय कौतुक देखा। रोहड़ी के उत्तर में पंद्रह मील दूर सिन्धु का पानी सुलगता हुआ-सा दिखाई दिया। पानी में भयंकर कंपन और धारा मानो उलटी बहती हुई। आकाश एकदम शून्य। एक भी तारा नहीं चन्द्रमा भी नहीं रात्रि की गोद में पृथ्वी अचेत पड़ी हुई थी और धुंधली दिशाएं धुएं के वस्त्र पहने चुपचाप बैठी हुई थीं। दूर-दूर तक सिन्धु के पानी को चीर कर छेड़े हुए भुजंग के फूत्कारों जैसी आग बाहर निकली। ऐसी लपटें उठीं जैसे शेषनाग का फन लपलपा उठे हों। बहुरंगी आग का वह फव्वारा ऊंचा उठता गया। युगों-युगों से भूखा वडवानल सिन्धु के पानी को पी नहीं रहा था, घास की तरह चबा रहा था। चरड़-चरड़ की आवाज़-जैसे पानी जल रहा हो। उस आवाज़ से वातावरण में भय व्याप्त हो गया। सिन्धु के जल-अश्वों की लगाम हाथों में पकड़े विकराल अग्नि तट की ओर बढ़ती आ रही थी। सिन्धु का यह अत्यंत भयावह और रोमांचक दर्शन था। वडवानल से लिपटी, जलती हुई सिन्धु को तभी मैंने पहली बार देखा और पार्वती के असंख्य नूपुरों जैसी चपल-चंचल, किन्तु दुर्धर्ष व्यक्तित्व वाली उस सिन्धु का बहुविध दर्शन मेरे मन में कविता की मालाएं गूंथ रहा था।''

नागर सभ्यता के विकास का कारण सिन्धु

रूसी पुरातत्ववेत्ता **श्री ग्रि.म. बोंगर्द एवं लेविन** अपनी पुस्तक 'भारत का इतिहास' में सिन्धु की महत्वपूर्ण भूमिका के सम्बंध में लिखते हैं-''नागरीकरण का रूझान

अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और सिन्ध में प्रारंभिक हड़प्पा काल की कई स्थलियों में लक्षित होता है, किन्तु इतनी उन्नत नागर सभ्यता का उदय केवल सिन्धु घाटी में ही हुआ था। निस्संदेह सिन्धु और उसकी सहायक नदियों के जाल सहित इस इलाके की भौगोलिक अवस्थाएं इस सभ्यता के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण थी, जिन्होंने भौतिक संस्कृति तथा कृषि के विकास के लिए और शहरी बस्तियों, व्यापार तथा दस्ताकारी के केन्द्रों की स्थापना के लिए अत्यंत अनुकूल परिस्थितियां प्रदान की। यह कोई संयोग नहीं है कि बहुत सी हड़प्पाई बस्तियां सिन्धु और उसकी सहायक नदियों के तटों पर स्थित हैं।''

उक्त समारोह में पहली बार लेह (लद्दाख) स्थित सिन्धु-तट पर विधिवत वैदिक रीति से सिन्धु की पूजा-अर्चना की गई। वहाँ उपस्थित रोमांचित सिन्धुजनों ने 'बहराणा साहिब' की शोभा यात्रा निकाली और 'आयोलाल-झूलेलाल!' के जयघोषों के बीच बहराणा साहिब को सिन्धु की लहरों में प्रवाहित किया। उस समय पूरा वातावरण 'झूलेलालमय' हो गया। आरती एवं 'पलउ' के समय तो वे ऐसे भाव विभारे हो उठे कि उनकी आँखों से आँसू छलक पड़े।

❑ सिन्धु दर्शन अभियान

इससे पूर्व यही समझा जाता था कि देश-विभाजन के पश्चात्, अखंडित भारत के महत्वपूर्ण सिन्ध प्रदेश के साथ-साथ पावन 'सिन्धु नदी' भी पाकिस्तान का हिस्सा बन गई, किन्तु तथ्य यह है कि भारत के दुर्गम क्षेत्र लेह (लद्दाख) में 'सिन्धु' उसी वेग के साथ प्रवाहित होकर सिन्धु संस्कृति का ध्वज फहरा रही है।

भारत के तत्कालीन केन्द्रीय गृह मंत्री **श्री लालकृष्ण आडवाणी** के प्रयासों से गत् शताब्दि में दि. 10 अक्टूबर, 1997 को लेह के सिन्धु तट पर प्रथम **'सिन्धु दर्शन अभियान'** तथा सिन्धु-पूजन के अनुष्ठान का शुभारम्भ करके एक नया इतिहास रचा गया। दिल्ली सरकार द्वारा प्रायोजित इस भव्य महोत्सव की सफलता में सिन्धु दर्शन अभियान के संयोजक तथा साप्ताहिक 'पाञ्चजन्य' के मुख्य सम्पादक श्री तरूण विजय की मुख्य भूमिका रही।

❑ 50 साल बाद सिन्धु दर्शन



इस अवसर पर **श्री लालकृष्ण आडवाणी** ने अपने वक्तव्य में कहा-''1962 में जब मैं 35 बरस का था तब भारत-चीन युद्ध के बाद पत्रकारों की एक टोली में पहली बार पत्रकार के नाते लद्दाख आया था। मुझे याद है वह दिसम्बर का महीना था, इसलिए वहां सर्दी बहुत थी। पर लद्दाख में सिन्धु है और देश के किसी भाग से यदि सिन्धु गुज़रती है तो वह केवल लद्दाख है, इसका पहला परिचय मुझे तब हुआ जब मैं तरूण विजय साथ-साथ गत वर्ष यहां आए थे और निकट ही एक अतिथि गृह में ठहरे थे। अतिथि गृह की बालकनी से जब मैंने देखा तो एक सुंदर नदी बहती

हुई दिखी। मैंने पूछा कि यह कौन सी नदी है तो जवाब मिला कि ये 'इण्डस' है। सुन कर मैं एकदम आश्चर्य चकित रह गया। मैं इस तथ्य से एकदम अनजान था। मैं अपना अज्ञान स्वीकार करता हूँ कि 1947 में सिन्ध छोड़ने के बाद 50 साल में सिन्धु का पहला दर्शन अगर किसी ने करवाया तो लद्दाख ने करवाया।''

''इन शब्दों में वैदिक ऋषियों ने सिन्धु का उल्लेख किया था। आज हम उसी सिन्धु नदी के किनारे एकत्र होने का सौभाग्य प्राप्त कर सके हैं। हृदय में एक खाली स्थान था, जो आज भर रहा है, भावनात्मक एकता में जो थोड़ी कमी थी और राष्ट्रगान गाते हुए जो कमी खलती थी, वह कमी आज पूरी हो गई।... केवल सिन्धु नदी का स्मरण ही नहीं अपितु सिन्धु सभ्यता, जो हड़प्पा और मोहन जो दड़ो से जुड़ी हुई है, उसका फिर से स्मरण करना, उस सभ्यता के आवयक अंगों को सुरक्षित रखने का प्रयास करना और भारत की विराठ सभ्यता में उनके लिए एक सम्माननीय स्थान ढूंढना बहुत आवश्यक कार्य है।

❑ **हे सिन्धु, हम तुझे भूले नहीं!**

सिन्धु दर्शन अभियान के संयोजक **श्री तरूण विजय** ने 'पाञ्चजन्य' के दीपावली विशेषांक-1997 में प्रकाशित आलेख 'हे सिन्धु! हम तुझे भूले नहीं!' में सिन्धु की महिमा का बखान करते हुए लिखा-''हे सिन्धु, हम तुझे भूले नहीं! अचानक मानों एक इतिहास घटित हो गया जब लेह में सिन्धु के तट पर देश भर से आए मनीषियों, राजनेताओं, समाज सुधारकों और लेखक, कलाकारों ने मिल कर लद्दाख के शीर्षस्थ पूज्य बौद्ध लामाओं के निर्देशन में सिन्धु का जल हाथ में लेकर पूजन किया, अर्चन किया, नमन किया और चतुर्दिक एक ऐसी आशीर्वदी आभा सी छा गई कि लगा सिन्धु माता प्रसन्न होकर मंद स्मित बिखेर रही हैं और शायद आंखें भी सजल हैं और अधर भाव विह्वल हृदय से निकले ये शब्द थरथराते हुए कह रहे हैं-'क्यों 50 साल बाद याद आई मेरी अब तक कहां थे!''

उन्होंने आगे लिखा-''यह कार्यक्रम नहीं था, यह यात्रा नहीं थी, यह तो ठीक उस प्रकार का एक ममता की छांव में चले आने का दृश्य था जैसे बहुत देर तक माँ से दूर रहने के बाद गाय का बछड़ा हलस कर, किलक कर अपनी कमज़ोर सी काया को पूरी ताकत से उछालते हुए रंभाती हुई गैया मैया से आ लिपटा हो। हम भी वैसे ही थे। और कुछ अर्थों में तो नियति की अजीब विडम्बना से ग्रस्त कि जिस सिन्धु का हम प्रतिदिन स्नान से पूर्व स्मरण करते हैं, जिस सिन्धु को शताब्दियों से हमारे पूर्वज स्मृति-अर्घ्य देते चले आ रहे हैं, जिस सिन्धु से संपूर्ण वैदिक वाङ्मय भरा पड़ा है, जिस सिन्धु ने हमारे राष्ट्र की आत्मा को सिंचित किया उसके विषय में पिछले पचास वर्षों में खंडित आजादी के पल-पल छिन-छिन बताते हुए कभी यह स्मरण नहीं किया कि चलो गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी, नर्मदा, सतलुज, ब्रह्मपुत्र के दर्शन तो हम करने चले जाते हैं और सबको इस विषय में जानकारी भी रहती है, इस बार हम सिन्धु के दर्शन करें। सिन्धु में स्नान करें और सिन्धु का जल घर में लाकर ठीक वैसे ही रखें जैसे हम गंगा जल

रखते हैं।''

❑ **आँखों से आँसू छलक पड़े**

उक्त समारोह में पहली बार लेह (लद्दाख) स्थित सिन्धु-तट पर विधिवत वैदिक रीति से सिन्धु की पूजा-अर्चना की गई। वहाँ उपस्थित रोमांचित सिन्धुजनों ने '**बहराणा साहिब**' की शोभा यात्रा निकाली और 'आयोलाल-झूलेलाल!' के जयघोषों के बीच बहराणा साहिब को सिन्धु की लहरों में प्रवाहित किया। उस समय पूरा वातावरण '**झूलेलालमय**' हो गया। आरती एवं 'पलउ' के समय तो वे ऐसे भाव विभारे हो उठे कि उनकी आँखों से आँसू छलक पड़े।

'सिन्धु दर्शन अभियान' की अपूर्व सफलता के कारण लेह क्षेत्र अब '**सिन्धु-तीर्थ**' का स्थान ले चुका है, राष्ट्र की आस्था का केन्द्र बन चुका है। परिणाम स्वरूप वर्ष 1997 से निरंतर लेह-लद्दाख में हर वर्ष हर्षोल्लास के साथ भव्य सांस्कृतिक समारोह आयोजित किया जाता है।

❑ **तीन दिवसीय भव्य महोत्सव**

7 जून, 2000 को लेह के सिन्धु तट पर आयोजित तीन दिवसीय चतुर्थ सिन्धु दर्शन अभियान के भव्य महोत्सव में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री **श्री अटल बिहारी वाजपेयी**, केन्द्रीय गृह मंत्री एवं इस अभियान के प्रणेता श्री लालकृष्ण आडवाणी, केन्द्रीय पर्यटक मंत्री, उड्डयन राज्य मंत्री, रेल राज्य मंत्री, गोवा एवं जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल, अरूणाचल व जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री, देश के विभिन्न भागों से आए अनेक गणमान्य व्यक्ति सैकड़ों श्रद्धालुओं एवं लद्दाख निवासियों ने भाग लिया।

इस असहिष्णुता, विपरीत परिस्थितियों एवं चुनौतियों के बावजूद भी सिन्धी समुदाय ने साहस का दामन नहीं छोड़ा। उसने अपने ही बलबूत पर उक्त अभियान को जारी रखने के लिए शंखनाद किया। कई गुणीजनों एवं समर्पित संस्थाओं ने सहयोग का हाथ बढ़ाया। भारतीय सिन्धु सभा की इसमें सक्रिय भूमिका रही। फिर क्या था देखते-देखते कारवां जुड़ता गया और जोत से जोत प्रज्जवलित होती रही। महत्वपूर्ण बात यह है कि सिन्धुजनों के अलावा अन्य कई समुदायों के सुधीजन भी इस पुनीत कार्य में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

❑ **सिन्धु जल का स्पर्श**



इस अवसर पर आदरणीय **श्री अटल बिहारी वाजपेयी** ने अभियान-समारोह का उद्‌घाटन करते हुए अपने भावपूर्ण उद्‌बोधन में कहा- ''जब से भारत स्वाधीन हुआ है, हम राष्ट्रगान में 'पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा' गाते रहे हैं। कभी कोई पूछता था कि आप गा तो रहे हैं पर सिन्ध है कहाँ? तो हमारे पास तत्काल यह उत्तर नहीं होता था कि सिन्धु संस्कृति लेह में है। हम कहते थे सिन्धु तो चली गई है, आगे देखेंगे क्या होता है? लेकिन सिन्धु लद्दाख में बह रही है, लेह में बह रही है। अतीत की सारी स्मृतियों को साकार कर रही है। उतार-चढ़ाव की पूरी गाथा हमारी आँखों के सामने खोल रही है। यह वास्तव में बड़े

सौभाग्य की बात है। आज सिन्धु के जल का स्पर्श कर मैं सचमुच गद्‌गद् हो गया हूँ।''

❑ सिन्धु की गौरव गाथा

उन्होंने आगे कहा-''सिन्धु की बड़ी महिमा है। हम अनेक नदियों का नाम लेते हैं, उनके बारे में जानते हैं, किन्तु सिन्धु के बारे में हमारी जानकारी बहुत कम है। वेदों में जहाँ और नदियों के नामों का उल्लेख है, वहाँ सिन्धु नदी के नाम का उल्लेख 30 बार से ज्यादा है। गंगा-यमुना भी बाद में हैं। ऋषियों का सम्बंध भी सिन्धु तट से था, उत्थान और पतन की कहानियाँ यहाँ लिखी जाती थीं। आज हमने सिन्धु का पूजन, आचमन किया, इससे हमारे हृदय में उल्लास होना स्वाभाविक है। यह सभी जानते हैं कि सिन्ध सिन्धु से उत्पन्न हुआ है तथा जो पाँच हजार वर्ष प्राचीन हमारी सभ्यता का परिचय देता है। वेद के एक मंत्र का मुझे स्मरण है, जिसमें सिन्धु नदी की महत्ता का वर्णन किया गया है। ऋग्वेद में सिन्धु नदी का प्रभावशाली वर्णन इस प्रकार से किया गया-सिन्धु नदी अन्य नदियों की तुलना में सबसे शक्तिशाली नदी है। इसकी गर्जना स्वर्ग तक सुनाई देती है। पलकें झपकते ही इसमें प्रचण्ड तूफान आ जाता है। जिस प्रकार दूध से भरे हुए थन वाली गाय अपने बछड़ों की ओर तेजी से भागती है, उस प्रकार दूसरी नदियाँ भी कल-कल करती हुई सिन्धु नदी में मिलने को आतुर रहती हैं। जिस प्रकार एक शूरवीर राजा दूसरे योद्धाओं का नेतृत्व करता है, उसी प्रकार सिन्धु नदी दूसरी नदियों का नेतृत्व करती हैं। यह तीव्र गति से बहने वाली नदी है, स्वर्ण भण्डार से परिपूर्ण है, नदियों में श्रेष्ठ है तथा धन-सम्पदा से पूरित है।''

''इन शब्दों में वैदिक ऋषियों ने सिन्धु का उल्लेख किया था। आज हम उसी सिन्धु नदी के किनारे एकत्र होने का सौभाग्य प्राप्त कर सके हैं। हृदय में एक खाली स्थान था, जो आज भर रहा है, भावनात्मक एकता में जो थोड़ी कमी थी और राष्ट्रगान गाते हुए जो कमी खलती थी, वह कमी आज पूरी हो गई।... केवल सिन्धु नदी का स्मरण ही नहीं अपितु सिन्धु सभ्यता, जो हड़प्पा और मोहन जो दड़ो से जुड़ी हुई है, उसका फिर से स्मरण करना, उस सभ्यता के आवश्यक अंगों को सुरक्षित रखने का प्रयास करना और भारत की विराट सभ्यता में उनके लिए एक सम्माननीय स्थान ढूंढना बहुत आवश्यक कार्य है। यह कार्य अब प्रारम्भ हो चुका है, अब रूकेगा नहीं। महात्मा बुद्ध के जीवन में भी सिन्ध की बात कही गई है। जब वे कपिलवस्तु जा रहे थे तब बताया गया कि उनको ले जाने वाले रथ में जो चार घोड़े थे, वे सिन्ध से लाए गए थे। आज मुझ प्रसन्नता है कि अनेक पंथ, सम्प्रदायों के प्रतिनिधि यहाँ उपस्थित हैं। यह सांझा नदी है, यह सम्मिलित नदी है।''

❑ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति

1 जून, 2001 को आयोजित 'पंचम सिन्धु दर्शन उत्सव' में देश के 11 प्रदेशों से 500 से भी अधिक विभिन्न सम्प्रदायों और पंथों के प्रमुखों, जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल, मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्रियों तथा राजनेताओं, सैनिक अधिकारियों व जवानों, साहित्यकारों, पत्रकारों, कलाकारों एवं अन्य कई गणमान्य व्यक्तियों ने सक्रिय भाग लेकर राष्ट्रीय एकता, सर्वधर्म समभाव तथा अंतर्राष्ट्रीय शांति और मैत्री की सद्‌भावना को साकार रूप दे दिया।

इस अवसर पर भारत सरकार के पर्यटन और सांस्कृतिक मंत्रालय द्वारा दिए गए एक करोड़ के अनुदान से निर्मित तथा भारतीय शिल्प एवं वास्तुकला की अनुपम कृति, भारत के प्रथम 'सिन्धु घाट' का उद्घाटन केन्द्रीय गृहमंत्री श्री लालकृष्ण

आडवाणी ने किया। फिल्म जगत के विख्यात चरित्र अभिनेता श्री अमरीशपुरी ने पर्यटन मंत्रालय द्वारा निर्मित फिल्म 'सिन्धु दर्शन' का लोकार्पण किया।

यह पहला अवसर था जब 'सिन्धु दर्शन उत्सव' के विविधरंगी कार्यक्रम को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाने के लिए 12 देशों से अनेक पत्रकार एवं छायाकार यहाँ आए। इस प्रकार उक्त कार्यक्रम को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हुई।

यह गौरव का विषय है कि वर्षों तक विस्मृतियों के भंवर में फंसी और अपनों द्वारा ही उपेक्षित माँ सिन्धु को अब 'देश की पहचान', 'राष्ट्रीय एकता का प्रतीक', 'भारतीय संस्कृति की धरोहर' जैसे अलंकारो से उसका अभिवादन कर, प्रतिष्ठित स्थान दिया जाने लगा है। यह एक शुभ संकेत है।

वीर सावरकर ने वर्ष 1952 में स्वयं द्वारा स्थापित संस्था 'अभिनव भारत' के समारोह में अपने उद्बोधन में कहा था- "हम सिन्ध को नहीं भूलेंगे। सिन्धु के तट पर हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने ऋचाओं के प्रथम साम गायन किए। उस अंबितमे, नदीतमे, देवीतमे सिन्धु को नहीं भूल सकते। समस्त भारत भूल जाए पर अेकला महाराष्ट्र तुम्हें विमुक्त करे बिना नहीं रहेगा।"

❑ 'सिन्धु' पर संकट के बादल

किन्तु सिन्धु-वंदना का यह सौभाग्य चिर स्थाई सिद्ध नहीं हो पाया। वर्ष 2004 में 'सिन्धु' पर संकट के काले बादल छाने लगे। सेक्यूलर सरकार का आगमन 'सिन्धु' के लिए अशुभ साबित हुआ। धर्म निरपेक्षता का चोला पहनने वाली यूपीए सरकार को 'सिन्धु दर्शन उत्सव' से साम्प्रदायिकता और सियासत की बू आने लगी, क्योंकि इसका शुभारंभ भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी के अथक प्रयासों से हुआ था। सर्वप्रथम दिल्ली राज्य की भाजपा सरकार ने और तत्पश्चात भाजपा शासित एनडीए की केन्द्रीय सरकार ने इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर की श्रेणी प्रदान कर चार चांद लगा दिए। अत: इस अभियान के बढ़ते प्रभाव और महत्व को समाप्त करने की साजिश शुरू हो गई।

❑ घिनौने कृत्य का कुचक्र

सबसे पहले 'सिन्धु दर्शन उत्सव' से 'सिन्धु' शब्द को हटाकर 'सिन्धे खबाब स्प्रिंग फेस्टीवल' रखने की घोषणा कर दी गई। सम्भवत: 'सिन्धु' शब्द से उन्हें बड़ा खतरा महसूस हो रहा था। बहाना यह दिया गया कि लेह के स्थानीय लोग 'सिन्धु' के स्थान पर 'सिन्धे' शब्द चाहते हैं। इस घिनौने कृत्य के कारण सिन्धी समुदाय का गुस्सा फूट पड़ा। यह स्पष्ट रूप से सिन्धु सभ्यता व संस्कृति की अनमोल धरोहर पर कुठाराघात था। परिणाम स्वरूप तिलमिलाए लोगों द्वारा किए गए प्रदर्शनों, धरनों तथा समाचार पत्रों के घोर विरोध के कारण उन्हें 'सिन्धु' शब्द न हटाने के लिए विवश होना पड़ा। लेकिन सिन्धी समुदाय को विरोध जताने का साहस दिखाने के अपराध के लिए दंडित तो करना ही था। अत: उक्त उत्सव के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप के ताने-बाने को तहस-नहस करते हुए, यूपीए सरकार ने उसे स्थानीय स्तर का उत्सव करार देकर विश्व-पर्यटन की संभावनाओं की भी कब्र खोद डाली।

❑ साहस का दामन नहीं छोड़ा

यह कैसी विडम्बना है कि प्रजातंत्र का परचम फहराने वाले इस महान देश की धड़कन बन चुके सिन्धी समुदाय को प्रताड़ित किया जाता रहा है। तिरस्कार, सौतेला व्यवहार, उपेक्षा और भेदभाव इस समाज की नियति बना दी गई है।

इस असहिष्णुता, विपरीत परिस्थितियों एवं चुनौतियों के बावजूद भी सिन्धी समुदाय ने साहस का दामन नहीं छोड़ा। उसने अपने ही बलबूते पर उक्त अभियान को जारी रखने के लिए शंखनाद किया। कई गुणीजनों एवं समर्पित संस्थाओं ने सहयोग का हाथ बढ़ाया। भारतीय सिन्धु सभा की इसमें सक्रिय भूमिका रही। फिर क्या था देखते-देखते कारवां जुड़ता गया और जोत से जोत प्रज्वलित होती रही। महत्वपूर्ण बात यह है कि सिन्धुजनों के अलावा अन्य कई समुदायों के सुधीजन भी इस पुनीत कार्य में अहम भूमिका निभा रहे हैं। गत् 6वर्षों से **'सिन्धु दर्शन यात्रा समिति, दिल्ली'** के तत्वाधान में इसे भव्य स्वरूप देते हुए, राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। अगर राष्ट्रीय एकता, स्वावलंबन, स्वाभिमान, समर्पण, समन्वय तथा नव जागरण का यह बहुआयामी गठबंधन सुदृढ़ रहा तो पुण्यसलिला सिन्धु के गौरवशाली इतिहास में एक और स्वर्णिम अध्याय जुड़ जाएगा। ईश्वर करे ऐसा ही हो... तथास्तु!

माँ 'सिन्धु' के चरण-कमलों में हमारा कोटि-कोटि नमन!

निवास :- सिन्धु सदन, 2/691, मालवीय नगर,
जयपुर-302017, मो. 096600 12488
फोन : 0141-2523283

सीमा पार की कहानी

यादें

– गुलजार अहमद

एक मित्र, अबु-अल-हसन हांगकांग से हो कर आये हैं। कुछ दिन हुए सहसा एक होटल में उनसे भेंट हो गयी हांगकांग की बातें बताते हुए उन्होंने कहा-

एक दिन बाजार की सैर करते-करते एक दुकान में चला गया। दुकान बहुत ही सुंदर तथा विदेशी वस्तओं से भरी हुई थी। मैंने जैसे ही दुकान में प्रवेश किया, एक सुंदर चीनी बाला ने आ कर मेरा स्वागत किया। वह मुझसे अंग्रेजी में बात करने लगी तथा भिन्न-भिन्न वस्तुएँ दिखाने लगी। इतने में वहाँ एक सुंदर युवक आया। शायद मेरी सूरत तथा वेशभूषा से अनुमान लगा कर वह मुझसे उर्दू में बोलने लगा। मुझे बहुत अच्छा लगा।

'आप कहाँ से आये हैं?'

'कराची से'

मेरा उत्तर सुनते ही वह अत्यंत प्रसन्न हो गया, उसके चेहरे पर रक्त दौड़ने लगा, आँखे चमकने लगी, अधर फड़कने लगे। वह युवक मुझे बाँह से पकड़ कर उस दुकान के एक कोने में स्थित कमरे में ले गया। वहाँ एक खूबसूरत मेज के सामने अधेड़ आयु वाले एक सज्जन बैठे हुए थे। वह अपने काम में व्यस्त थे। जैसे ही उनकी दृष्टि हम लोगों पर पड़ी वह कलम रख कर सीधे बैठ गये तथा बिना कोई प्रश्न पूछे मुसकरा कर उन्होंने हमारा स्वागत किया।

आज जितनी जागरूकता और प्यार सिंधी मुसलमानों और हिन्दुओं में अपनी जन्मभूमि के लिए है, इतना पहले कभी नहीं था। हिन्दू अपनी जन्मभूमि से जलावतन हैं और मुसलमान अपने ही देश में मानो शरणार्थी बनकर बैठे हैं। सिंध की यह कहानी इस देश प्रेम की पीड़ा और तड़फ की बेमिसाल कहानी है कि सिंधी हिन्दू अपने वतन से दूर रहकर उसकी मिट्टी के लिए कैसे तड़पते हैं!

मुझे भीतर ले आने वाले युवक ने उस व्यक्ति को मेरे विषय में कुछ बताया। वे लोग सिंधी में बातचीत कर रहे थे। युवक की बात सुनते ही वह खुशी के मारे झूम उठे। कुर्सी से उठकर उन्होंने मुझसे इतने जोर से आलिंगन किया कि मुझे लगा, मेरी पसलियाँ ही टूट जायेंगी, अपने दोनों हाथों में मेरा हाथ थामकर उन्होंने सिंधी में पूछा- 'आप कराची से आ रहे हैं?'

'जी हाँ।'

मेरा उत्तर उर्दू में सुनकर फिर उसी प्रकार मुसकराते हुए वह मुझसे उर्दू में बोलने लगे।

मेरे बहुत रोकने पर भी उन्होंने मेरा बहुत आद सत्कार किया गया। वे बार-बार मुझसे सिंध का समाचार पूछने लगे। सिंध के प्रति उनकी इतनी श्रद्धा देख कर मुझे बड़ा खेद हो रहा था, क्योंकि मैं सिंध की बातों से बिलकुल ही अपरिचित था। ऐसी दशा में मैं उन्हें हैदराबाद, लाड़काणा, सखर तथा शिकारपुर का क्या समाचार सुनाता! अपनी इस अयोग्यता पर मुझे शर्म आ रही थी।

आप समझते होंगे उन लोगों ने मेरा केवल उतना ही सत्कार किया होगा। नहीं, मैंने जो भी चीजें खरीदीं वे सब उन्होंने आधी कीमत पर दीं तथा एक पॉकेट ट्रांजिस्टर भेंट स्वरूप भी दिया। फिर वह युवक अपनी बड़ी शानदार मोटरकार से मुझे मेरे होटल तक पहुंचा गया तथा यह भी कह गया कि शाम को पाँच बजे आपको फिर

लेने आऊंगा।

मैं डरने लगा कि अगर वह युवक शाम को आ गया तथा मुझे अपने अन्य मित्रों के पास ले गया और उन लोगों ने कहीं फिर सिंध के विषय में पूछताछ शुरू कर दी तो फिर मुझे लज्जित होना पड़ेगा। यह सोच कर मैंने निश्चय कर लिया कि पाँच बजने से पहले ही कहीं बाहर चला जाऊंगा।

अभी साढ़े तीन ही बजे थे कि मैंने जाने की तैयारी शुरू कर दी। ठीक चार बजे मैंने अपने कमरे में ताला लगाया। होटल के मैनेजर को चाबी देकर अभी बाहर निकला ही था कि वही शानदार लाल मोटर गाड़ी आ कर मेरे समीप खड़ी हो गयी। मैं कुछ घबरा सा गया। सुबह वाला युवक गाड़ी से उतर आया। मुझसे हाथ मिला कर गाड़ी की ओर खींचते हुए उसने पूछा- 'आप शायद किसी आवश्यक काम से जा रहे थे?'

'नहीं तो, बस यों ही बैठे-बैठे तंग आ गया था। मैंने सोचा कहीं घूम आऊं।'

युवक हंस पड़ा। मुझे कार में बिठाकर वह अन्य मित्रों के पास ले गया, उनसे मेरी पहचान करायी। कुछ ही समय में हम एक बड़े स्टोर में पहुंच गये। वहाँ कुछ सज्जन पहले ही हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे।

सभी उपस्थित व्यक्तियों से मेरी जान-पहचान करवायी गयी। कमरा बहुत ही सुंदर लग रहा था। कमरे के एक कोने में एक मेज पर एक गुलदस्ता रखा हुआ था। बिल्कुल वैसा ही एक गुलदस्ता मैंने कराची में भी देखा था। मेरी दृष्टि उस गुलदस्ते पर स्थिर देख कर उस मोटर के मालिक ने बताया- यह मेरे प्रिय देश सिंध की भेंट है। यह जंडी (लकड़ी पर फूलदार नक्काशी की कला) का बना हुआ है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कुछ दिन हुए, फोर्ड मोटर कंपनी के मालिक का करोड़पति बेटा हांगकांग घूमने आया था। इत्तफाक से वह हमारे स्टोर में भी

मैं डरने लगा कि अगर वह युवक शाम को आ गया तथा मुझे अपने अन्य मित्रों के पास ले गया और उन लोगों ने कहीं फिर सिंध के विषय में पूछताछ शुरू कर दी तो फिर मुझे लज्जित होना पड़ेगा। यह सोच कर मैंने निश्चय कर लिया कि पाँच बजने से पहले ही कहीं बाहर चला जाऊंगा।

आया था। जब उसकी नजर इन गुलदस्तों पर पड़ी तब बड़ी उत्सुकता से उसने पूछा - 'ये अनोखी चीजें किस देश में बनती है?' मैंने उसे बताया यह कला हमारे सिंध देश की है जो इस समय पाकिस्तान का एक प्रांत है। मैंने उसे एक रल्ही (गुदड़ी) तथा शीशों से जड़ी हुई एक टोपी भी दिखायी। उन पर की गई हस्तकला देख कर वह आश्चर्यचकित रह गया। पहले उसने उनका मूल्य पूछा किन्तु जब मैंने कहा कि वह वस्तुएँ बेचने के लिए नहीं हैं। तब वह हठ करने लगा। जेब से एक हजार पाउंड का एक चेक निकाल कर मेरे सामने फेंकते हुए कहने लगा- उनमें से कोई भी एक वस्तु मुझे दे दो, उसकी इतनी रूचि देखकर मैं उससे इनकार नहीं कर सका। वह रल्ही जिसमें उसने अधिक दिलचस्पी दिखायी, मैंने उसे दे दी तथा वह चेक भी लौटा दिया। वह बहुत प्रसन्न हुआ।

इतने में एक युवक के साथ एक बूढ़ा व्यक्ति वहां आया। उसके आदर में सब लोग खड़े हो गये। भीतर आते ही वह अपने चश्मे के मोटे-मोटे शीशों में से इधर उधर कुछ ढूंढने लगा। उसके साथ आया हुआ युवक अपनी हाथ का सहारा देकर उसे मेरे पास ले आया। जैसे ही मैंने उस बूढ़े से हाथ मिलाया। उसने अपने दोनों हाथों से मेरे हाथ को जकड़ लिया। हम दोनों एक सोफा पर बैठ गये। उसने बड़े प्रेम से पूछा- 'तुम कभी शिकारपुर गये हो?'

मैंने हिचकिताते हुए उत्तर दिया-जी नहीं, कभी वहां जाने का मौका नहीं मिला। मेरे उत्तर से वह कुछ शांत सा हो गया किन्तु फिर कहने लगा-'क्या तुम कभी जाने वाले हो उस ओर?'

मैं उसे दुखी करना नहीं चाहता था अत: बोला हो सकता है कि चला जाऊं।

यह सुनते ही वह सीधा हो कर बैठ गया। फिर कहने लगा-'बेटे, तुम वहाँ अवश्य जाना। बहुत ही अच्छा शहर है शिकारपुर। वहाँ की मिठाइयाँ तथा कुल्फियाँ खा कर देखना। जीवन भर नहीं भूल सकोगे। स्टेशन पर उतर कर टांगे वाले से कहोगे तो वह तुम्हें

लखीदर के टॉवर के पास ले जायेगा। वहाँ तुम शहर की सुन्दरता का अनुभव कर सकोगे। उसकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। लगता था, वह अपना हृदय सिंध में कहीं खो आया था। कुछ समय के बाद वह फिर बोलने लगा- 'तुम्हें शिकारपुर जाना ही होगा। अपने लिए नहीं तो मेरे लिए।' थरथराते हुए उसने अपनी जेब में हाथ डाला। सौ-सौ के दो नोट मेरे हाथों में रखते हुए वह कहने लगा-'यह मेरी ओर से आने-जाने का किराया...।'

'हाँ, हाँ, चाचाजी, मैं अवश्य जाऊंगा। ये रुपये आप रख लीजिए। इनकी कोई आवश्यकता नहीं है।'

मगर वह नहीं माना। अन्य सज्जनों ने भी रुपये रख लेने का संकेत किया। वह फिर कहने लगा- 'जब तुम लखीदर पहुंच जाओ, तो वहां से सीधे बेगारी वाह (नदी) की ओर जाना। जहां रास्ता मुड़ता है, वहाँ कोने पर तुम्हें एक पुराना घर दिखाई देगा। तुम सीधे जा कर उस घर का द्वार खटखटाना। पता नहीं अब वहाँ कौन रहते होंगे... और हाँ... उस घर के आंगन में तुम्हें एक आम का पेड़ भी दिखाई देगा। इतना छोटा सा था तब मैंने अपने हाथों से उसे लगाया था... अब तो पेड़ बहुत बड़ा हो गया होगा... आम भी देता होगा... वहाँ जो भी लोग रहते हों, उनसे मिलना। फिर उन्हें बताना कि हमारे सिंध देश में आम किस प्रकार मजे से खाये जाते हैं। उन्हें बताना, जब बेगारी (नदी) में पानी भर जाये तब वे आमों को नये कोरे मटकों में भर कर, वाह पर ले जायें। जैसे ही वे पुल के पास पहुंचेंगे, बायीं ओर उन्हें एक घना सरों का पेड़ दिखायी देगा। उनसे कहना कि वे लोग उस पेड़ की ठंडी छाँव में जा कर बैठें। फिर उन मटकों को वाह की गीली मिट्टी में इस तरह दबा कर रखे कि दरिया शाह का निर्मल जल उन्हें ठंडा करता आगे बढ़े... फिर उनसे कहना कि वे लोग वहाँ दरिया शाह में स्नान करें... और स्नान करते-करते मटके से एक-एक आम निकाल कर खाते जायें... फिर उन्हें उन आमों के असली स्वाद का पता लगेगा...।' बूढ़ा अब अधिक प्रसन्न लग रहा था। सहसा वह गंभीर हो कर कहने लगा। बेटे, मेरा एक काम अवश्य करना। मैं तुम्हे आशीर्वाद दूंगा। जब तुम उस घर में जाओ, तब वहां रहने वालों से विनती करके उस आम के पेड़ का एक ताजा पत्ता मांग लेना। फिर वह पत्ता बड़ी खबरदारी से मेरे पास पार्सल कर देना। मैं यहां पार्सल छुड़ा लूंगा... यही मेरा सबसे बड़ा काम है, तुम्हारी मुझ पर बड़ी कृपा होगी। बहुत समय तक वह सिंध के विषय में बातें करता रहा तथा अपने हृदय का भार हलका करता रहा। पर्याप्त समय बीत चुका था। उसी रात दस बजे वाले हवाई जहाज से मुझे कराची लौट आना था। अत: मैंने उनसे विदा ली। सभी सज्जनों ने बड़े प्रेम से आलिंगन करके मुझे विदा किया, हर व्यक्ति कह रहा था- सिंधियों को हमारा प्रणाम कहना, हमारे देश को हमारा प्रणाम कहना...

हांगकांग में अंतिम दिन हुई उन सिंधी मित्रों की भेंट को अपने हृदय में संजोये मैं उसी लाल मोटरकार वाले मित्र श्री श्याम के साथ अपने होटल लौट आया। अंत तक वह मेरे साथ रहा। सामान बांधने तथा अन्य आवश्यक कार्यों में वह मेरी सहायता करता रहा। हवाई अड्डे तक वह मेरे साथ था ज्यों ही हवाई जहाज़ के उड़ने की सूचना दी गयी, उसने बड़े प्रेम से मुझे अपनी बांहों में जकड़ लिया। जब मैंने उसकी बांहों के बंधन को कुछ ढीला किया तो देखा, उसकी आँखे आँसूओं में डूबी हुई थी। मैंने पूछा- श्याम तुम्हारा कोई काम हो तो बताओ, मैं बड़ी प्रसन्नता से करूंगा।

वह आँसू पोंछते हुए बोला- 'नहीं बस इतनी दुआ करना कि कभी अपने देश सिंध के दर्शन कर सकूं।'

अबु-अल-हसन एक ठंडी सांस लेकर सिर झुका कर फिर कहने लगा- जीवन में पहली बार मैंने अनुभव किया कि आखिर कितने दिन हम अपने आपको परदेशी समझते रहेंगे? परदेशी, यह गलत विचार है। जुनून है, द्वेष है। नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं, हम अब परदेशी नहीं हैं। मैं सिंधी हूँ... सिंध मेरा देश है, यह विचार आते ही मैंने स्वाभिमान का अनुभव किया। हवाई जहाज बादलों में उड़ा जा रहा था। मैंने खिड़कियों से बाहर देखा, श्याम अब तक आँसू भरी आँखों से कह रहा था- दुआ करना... कभी अपने देश के दर्शन कर सकूं...

मेरा मन भर आया। मैं सोचने लगा, यह हवाई जहाज और तीव्र गति से उड़े... मैं अपने देश के दर्शन करूं... अपने सिंधी भाइयों से भेंट हो... मेरी बेचैनी बढ़ती जा रही थी...

अनुवाद : **प्रताप पुरूस्वाणी**

(सुरेश सिंधु के सौजन्य से)

सिंधी कहानी

'मुक्ति की तलाश में'

लेखक- बन्सी खूबचन्दानी (मुम्बई)
अनुवादक- विक्रम सहानी (अहमदाबाद)

मैंने फिर से दरवाज़े पर लगा घंटी का बटन दबाया, फ्लैट के अंदर घंटी बजने की आवाज साफ सुनाई दी। सोचा, अभी करुणा के पैरों की आहट दरवाजे के करीब आती हुई सुनाई देगी। वो दरवाजा खोलेगी और मुसकुराकर मेरा स्वागत करते हुए, मेरे हाथों से ऑफिस-बैग लेकर, दरवाज़े के बाईं तरफ खड़ी हो जाएगी। फ्लैट के अन्दर पहुंचकर सोफे पर बैठते ही वो मेरे करीब बैठने से पहले ऑफिस-बैग तिपॉय पर रखेगी फिर मेरे बाए कंधे पर अपना दाहिना हाथ रखकर पूछेगी- 'आज क्या पीएंगे ?' पिछले सात वर्षो से करुणा यही दस्तूर निभाती आ रही है।

लेकिन आज दरवाज़ा खोलने में करुणा ने इतनी देर क्यूँ लगा दी ? वैसे तो पहली घंटी बजते ही उसके पैरों की आहट सुनाई देती है, फिर आज इतनी देरी क्यूँ? यही सोचते-सोचते मेरी नजर अपने दरवाज़े पर लगी 'नाम की तख्ती' पर पड़ती है-'रमेश आडवाणी-एम.कॉम., एल.एल.बी., डिप्लोमा इन पर्सनल मैनेजमेंट, पर्सोनेल ऑफीसर, के.बी. इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड'। मेरे फ्लोर पर कुल तीन फ्लैट हैं। दायीं तरफ वाले फ्लैट के दरवाज़े पर बस एक छोटी सी साधारण 'नेम-प्लेट' लगी है जिस पर सिर्फ 'विद्यानाथ मुखर्जी' लिखा है। शायद विद्यानाथ सिर्फ मैट्रिक पास ही होगा तभी तो उसने अपनी 'नेम-प्लेट' पर अपनी डिगरियाँ नहीं लिखवाईं। इस मकान में रहते मुझे साल भर हुआ है, इस दरम्यान मैंने बस दो ही बार विद्यानाथ को देखा है पर उससे बात नहीं हुई। एक दिन करुणा ने बताया था मिस्टर मुखर्जी केन्द्रीय सरकार में अच्छे पद पर हैं। एक बार जब सीढ़ियों से उतरते हुए उसके साथ सामना हुआ था तो उसके चेहरे पर हल्की सी मुसकान थी पर मेरा गंभीर चेहरा देखकर वो भी सीधे मुंह निकल गया था। मुझे अच्छा ही लगा था मुझे क्या जरुरत है इस सरकारी बाबू से जान-पहचान बढ़ाने की।

बाईं तरफ के दरवाज़े पर कोई 'नेम-प्लेट' नहीं लगी है। करुणा ने बताया था कि इस फ्लैट में एक कच्छी व्यापारी रहता है, जिसकी मसजिद-बन्दर में अनाज की अपनी दुकान है। उसे आज तक एक बार भी मैंने देखा नहीं था। वो काफी देर से घर लौटते हैं। खैर, मुझे क्या गरज़ है उन्हें देखने की, होगा कोई मोटी तौंद वाला व्यापारी!

हाँ, आज मैंने एस्टेट-ब्रोकर मगनलाल मेहता को खूब डाँटा। महीने भर से उसे कहता रहा हूँ कि हमारी कंपनी में 'ट्रान्सफर' होकर आए, दो अधिकारियों के लिए दो फ्लैटों की जरुरत है। लेकिन वो एक महीने से टाल-मटोल कर रहा है। मैंने भी आज उसे साफ़-साफ़ कह दिया है-'अगर एक सप्ताह के अन्दर-अन्दर, उसने किराये के दो फ्लैटों का प्रबंध नहीं किया तो हमारी कंपनी के साथ उसके संबंध कट जाएंगे।' मेरी रौबीली आवाज़ सुनकर वो दब गया और गिड़गिड़ाने लगा था। मेरे गुस्सा होते ही ऑफिस के सभी कर्मचारी भी अपने-अपने काम में लग गए थे-उनको मेरे गुस्से का पता है। अगर काम ठीक से नहीं करेंगे तो नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा कंपनी के साथ मेरी अटूट वफादारी है। आखिर उसूल भी तो कोई चीज़ है! अगर मैं कंपनी का काम वफादरी से करता हूँ तो सबको ऐसा करना चाहिए।

ओफ्फोह! ये मैं किन विचारों में खो गया-दो ही मिनटों में, मैंने कितना भर सोच लिया। लेकिन दरवाज़ा खोलने में करुणा आज इतना समय क्यूँ लगा रही है ? इतनी लापरवाही! दो बार घंटी बजाई है जिसकी आवाज़ यहां बाहर तक भी सुनाई दे रही है। कहीं निमा को साथ लेकर, करुणा बाज़ार तो नहीं गई ? बाज़ार जाने पर वो दरवाज़े के बाहर ताला नहीं लगाकर जाती सिर्फ 'लैच' ही लगाती है। पर उसे ये भी तो पता है कि मैं सात बजे घर लौटता हूँ। वैसे तो निमा को घुमाकर वो छः बजे वापिस आ जाती है और घर पर ही निमा के साथ खेलते हुए मेरा इन्तजार करती है। निमा, मेरी चार साल

की बेटी का नाम है। कितनी प्यारी और मासूम है वो! पापा-पापा कहते जब वो अपनी कोमल बाहें मेरे गले से लिपटाती है तो ऐसा लगता है जैसे स्वर्ग यहीं है-नन्हीं सी निमा की बाहों में, उसकी तोतली बातों में! उसके बाद जब वो मेरी जेब में हाथ डालकर अपनी मनपसंद चीज़ ढूंढने लगती है तो उसके कोमल हाथों का स्पर्श से मुझे अलौकिक सुख की अनुभूति होती है! मेरी जेब से अपनी मनपसंद चीज़ निकालकर वो थोड़ी सी करुणा को खिलाती है फिर मुझे खिलाती है तब उसे मैं अपनी बाहों में भरकर खूब प्यार करता हूँ-इसे ही अपने जीवन का सार समझता हूँ मैं।

देखूँ तो ज़रा आज निमा के लिए खरीदे पेड़ों का पैकेट जेब में है या नहीं! हाँ, ये रहा! कल एक पड़ोस की लड़की अपने इम्तहान में पास होने की खुशी में, हमें चार पेड़े देकर गई थी। एक-एक पेड़ा मैंने और करुणा ने खाया था और बाकी दो पेड़े निमा को दे दिए थे- उसे वो बहुत अच्छे लगे थे- दोनों पेड़े खाने के बाद उसने और भी पेड़े माँगे थे तब मैंने उसके गाल पर पप्पी देते हुए कहा था 'कल बहुत सारे लाके दूँगा'- आज मैं यह पेड़ों का पैकेट उसे देने के लिए उतावला हो रहा हूँ। उसकी खुशी में शामिल होने के लिए बेचैन हो रहा हूँ। जल्द से जल्द मैं निमा से मिलना चाहता हूँ, उसकी तोतली बातें सुनना चाहता हूँ, उसके कोमल हाथों के स्पर्श द्वारा अलौकिक आनंद की अनुभूति करना चाहता हूँ। हाँ, मैं तुरंत निमा से मिलना चाहता हूँ।

मैं दरवाज़े पर लगे बटन को बेसब्री से काफी देर दबाए रखता हूँ। अबकी बार करुणा के पैरों की आहट सुनाई दे रही है। करुणा दरवाज़ा खोलकर मेरे सामने खड़ी है! पर यह क्या? यह उदास चुप-चुप सी, उलझी औरत क्या मेरी पत्नी करुणा ही है? आज उसकी मुसकान कहाँ गायब हो गई हैं? जैसे मेरे आने से आज वो खुश नहीं। आज उसने मेरे हाथों से ऑफिस-बैग भी नहीं ली। मुझे दरवाज़े पर ही छोड़कर वो अन्दर रसोई (किचन) में चली जाती है। मेरा मन अंदेशों से भर जाता है। करुणा पर गुस्सा भी आ रहा है। भला मेरे साथ बात किए बिना उसका यूँ किचन में चले जाना क्या उसे सुहाता है?

मैं दरवाज़े पर लगे बटन को बेसब्री से काफी देर दबाए रखता हूँ। अबकी बार करुणा के पैरों की आहट सुनाई दे रही है। करुणा दरवाज़ा खोलकर मेरे सामने खड़ी है! पर यह क्या? यह उदास चुप-चुप सी, उलझी औरत क्या मेरी पत्नी करुणा ही है? आज उसकी मुसकान कहाँ गायब हो गई हैं? जैसे मेरे आने से आज वो खुश नहीं।

मैं बैग रखकर, जूते उतार, चप्पल ढूंढने लगता हूँ, न मिलने पर झुंझलाकर किचन में जाता हूँ। देख रहा हूँ गैस पर चाय उबल रही है और करुणा फर्श पर बैठी घुटनों में मुंह छिपाए सिसक रही है। मेरा गुस्सा काफूर हो जाता है। मैं करुणा के पास बैठ उसकी बाहें पकड़कर प्यार से पूछता हूँ-'करुणा, क्या हुआ है आज तुम्हें? तुम इस तरह रो क्यूँ रही हो? करुणा की भावनाओं का बाँध टूट जाता है, वो फूट-फूटकर रोने लगती है।'

चाय उबलकर गैस के चूल्हे पर गिर रही है, मैं गैस बंद करते हुए करुणा से फिर वहीं सवाल पूछता हूँ। वो जवाब दिए बिना उसी तरह रोए जा रही है। मैंने जैसे ही उसके सर पर हाथ घुमाकर सहलाया, वो मुझसे लिपट गई और फूट पड़ी-'निमा... मेरी निमा... हमारी निमा...' कहते-कहते वो फिर फूट-फूटकर रोने लगी। निमा का नाम इस ढंग से सुनकर मुझ चक्कर सा आने लगता है। मुझे याद आ जाता है कि कल से निमा की तबियत कुछ ठीक नहीं-और करुणा आज उसे डॉक्टर के वहाँ ले जाने वाली थी।

मौके की नज़ाकत समझ, मैंने अपने आपको संभाला और करुणा को सहारा देकर किचन से बाहर ले आया जहाँ एक तरफ हॉल है, दूसरी तरफ बेडरुम। करुणा हॉल में आने के बजाय मुझसे अलग होकर बेडरुम में चली जाती है। मैं भी उसके पीछे-पीछे बेडरुम में जाता हूँ। वहाँ पलंग पर चादर ओढ़े निमा सोई है। उसकी सांस बिलकुल व्यवस्थित चल रही है। निमा को सही सलामत देख मेरी जान में जान आई। लेकिन करुणा तो अपने हाथ में निमा का हाथ पकड़े फूट-फूटकर रोए जा रही थी। फिर वो उसके हाथ को छोड़ उसकी टांगों को पकड़कर रोने लगी। मुझे समझ नहीं आ रहा था, ये सब क्या हो रहा है?

निमा की टांगे पकड़े करुणा कुछ बोलने की कोशिश करती है- 'डॉक्टर... ने... कहा... पोलियो...' ऐसा कहते-कहते वो निमा से लिपट जाती है।

पोलियो! तो क्या निमा को पोलियो हो गया है। निमा की ओढ़ी चादर तुरंत हटाकर उसकी टांगों की ओर निहारता हूँ। मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मेरी निमा के साथ ये सब हो सकता है। मेरे अन्दर कांच की तरह कुछ टूटकर बिखर जाता है।

उस दिन को गुज़रे आज लगभग तीन महीने हो चुके हैं। इन तीन महीनों में मेरी दुनिया ही बदल गई है। ऐसा लगता है इन तीन महीनों में मेरी उम्र दस साल बढ़ गई हो। क्या करूँ? कुछ समझ नहीं आता। शहर के लगभग सभी अस्पतालों के चक्कर काट चुका हूँ। दो स्पेशलिस्ट डॉक्टरों को भी दिखाया- नाम मात्र का भी लाभ नहीं। कुछ दिलासा देते है, कुछ साफ-साफ इसे ला-इलाज बताते हैं। दवाओं से, कसरतों से, मालिश से, ऑपरेशन से कुछ लाभ तो हो सकता है पर बिलकुल ठीक होने की कोई उम्मीद नहीं।

करुणा भी जैसे मृतप्राय: हो गई है। बस मशीन की तरह चलती-फिरती है। कभी-कभार मुझसे लिपटकर सिसकियाँ भरती है तो कभी निमा को गले लगाकर फफक पड़ती है। मेरी आँखों में आँसुओं के सूखने के साथ-साथ, मेरे अन्दर का गीलापन, लचीलापन भी सूखकर जैसे लकड़ी हो गया है।

रमेश आडवाणी-एम.कॉम. वगैरा... वगैरा... एक निहायत ही लाचार, पस्त, थका-हारा, दीन-हीन इन्सान! आत्मविश्वास या उसके आवरण में छिपा अभिमान, शर्म से न जाने किस कोने में दुबक गया है।

ऑफिस के काम में भी मन नहीं लगता। कम्पनी से अपनी अटूट वफादारी की सभी कसमें भूल गया हूँ। ऑफिस जाता हूँ क्यूँकि घर पर बैठे, ज्यादा दु:खी हो जाता हूँ। अब न किसी को झाड़ता हूँ, न गुस्सा होता हूँ और न ही ख़फा होता हूँ। फिर भी ऑफिस का काम-काज ठीक-ठाक चल रहा है। ऑफिस के लोग मेरे दु:ख को समझते हैं। शायद मैंने ही उन्हें ठीक से नहीं समझा था। अपने आपको ही कहाँ ठीक से समझ पाया हूँ मैं! अपने खोखलेपन, अपने अभिमान द्वारा उत्पन्न हीनता उजागर हो रही है। इन हालत में तलाश रहा हूँ। 'मुक्ति'। हालांकि 'मुक्ति' शब्द के अर्थ को पूरी तरह समझ नहीं पाया हूँ, फिर भी बस एक खयाल सा है।

मेरी निमा का चेहरा फीका पड़ गया है, उसकी मासूम मुसकान न जाने कहाँ खो गई है! उसका नर्सरी क्लास में जाना भी बन्द हो गया है। वो चुपचाप दवाईयाँ पी लेती है पर जब कसरत और मालिश के लिए करुणा उसे 'नर्सिंग होम' ले जाती है तब बहुत परेशान हो जाती है। कभी-कभार छुट्टी के दिन, मैं भी उसे 'नसिंग होम' ले जाता हूँ। पूरे रास्ते में वो मेरे कंधे पर अपना सिर रखकर चुपचाप पड़ी रहती है। मैं उसका मन बहलाने की कोशिश करता रहता हूँ। 'नर्सिंग होम' से लौटते समय, उसका मन बहलाने के लिए मैं उसे खिलौने और मनपसंद चीज़ें लेकर देता हूँ जो कभी-कभार वो खा लेती है। पर उस दिन के बाद करुणा को या मुझे उसने कभी कुछ खिलाया नहीं!

आज ऑफिस में सीनियर क्लर्क मि. भोजवानी मुझसे मिलने आए। करीब पचास वर्ष के होंगे वे। मुझसे बहुत पहले उन्होंने यह कंपनी ज्वाईन की है पर लगता है उन्हें 'प्रमोशन' लेने में कोई दिलचस्पी नहीं है। अब तक मेरे साथ उनका मेल-जोल बस ऑफिस के काम से ही कभी-कभार होता रहा है।

मेरे सामने कुछ देर चुपचाप बैठने के बाद मि. भोजवानी बोले- 'मि. आडवाणी, मैं तुम्हारा दु:ख समझता हूँ। बीस वर्ष पूर्व मैं भी ऐसी ही पीड़ा से गुज़र चुका हूँ। लोग बताते हैं कि बैंगलोर में मिलिट्री का एक जवान अपने सिद्ध-गुरु के आशीर्वाद से पोलिया की बीमारी को, प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा ठीक करने में सफल हुआ है। एक-दो महीने मरीज़ को उनके वहाँ देख-रेख में रहना होता है। मेरी सलाह है तुम एक-दो महीने ऑफिस से छुट्टी लेकर, बच्ची को बैंगलोर ले जाओ-अपनी धर्मपत्नी को भी साथ ले जाओ'। यह कहते हुए उन्होंने एक पर्ची मेरे सामने रख दी जिसमें बैंगलोर का पता लिखा था। उस वक्त मुझे याद आया कि कुछ समय पहले मैंने भी समाचार-पत्रों में इस जवान के बारे में पढ़ा था- तब मुझे इस बात का विश्वास नहीं हुआ था।

पर वो रमेश आडवाणी तो कोई और ही व्यक्ति था। उस रमेश आडवाणी के साथ, आज मिस्टर भोजवानी इस तरह अपनत्व से 'तुम' के संबोधन से बात भी न कर सकते। मैं मिस्टर भोजवानी का आभार मानकर सोच में पड़ जाता हूँ। डॉक्टरों और हर तरह के इलाज से निराश होकर मैंने उस जवान की प्राकृतिक चिकित्सा में पूर्ण विश्वास रखकर बैंगलोर जाने का मन बना लिया- हालांकि मन के किसी कोने में यह भी एहसास था कि एक हारे हुए इन्सान का फैसला है यह! ऑफिस में दो महीने की छुट्टी के लिए अर्जी की, जो मंजूर भी हो गई। आज ऑफिस से कुछ समय जल्दी निकलकर, बैंगलोर का टिकट निकलवाने के लिए वी.टी. स्टेशन की तरफ चल पड़ा।

आज अपने घर के दरवाज़े के सामने खड़े होकर फिर से 'डोरबेल' का बटन दबाता हूँ। जेब में रखी बैंगलोर के पते की पर्ची और गाड़ी की टिकिट, मेरे लिए जैसे निराशा के घनघोर बादलों से फूटकर निकली उम्मीद की सूर्य-किरणें हों जिन्हें करुणा तक पहुंचाने के लिए मैं बेताब हो जाता हूँ।

'मुक्ति' शब्द का पूरा अर्थ मुझे अब भी नहीं मालूम-बस एक धुंधला सा आकार है इस शब्द का मन में। अभी करुणा के पैरों की आहट सुनाई देगी दरवाज़े की तरफ आती हुई। मुझे विश्वास है निमा के ठीक होने के लिए, करुणा कुछ भी करने को तैयार हो जाएगी। तीन दिन बाद हम अपनी प्यारी निमा को साथ लेकर बैंगलोर के लिए रवाना जो जाएंगे-'मुक्ति की तलाश में'!

कर भला तो हो भला



जस्सूराम बजाज
बिलासपुर

एक गांव में एक किसान रहता था। किसान अच्छा सम्पन्न था। उसकी गांव में अच्छी खेती किसानी थी। वह बड़ा दयालु स्वभाव का था तथा गांव में उसकी अच्छी मान्यता थी।

एक दिन किसान अपने खेतों में फसल की रक्षा कर रहा था, कि अचानक एक बाज पक्षी आकर किसान के खेत के पास जाकर गिर गया। किसान को बहुत आश्चर्य हुआ, उसने देखा कि बाज पक्षी के पेट में एक तीर लगा हुआ है तथा बाज तड़प रहा है। किसान ने तुरंत बाज को अपने हाथों से उठा लिया और अपने घर ले गया। किसान ने बाज का तीर निकाल कर बहुत सेवा सुश्रुत की तथा कुछ दिन अपने घर में रखकर प्रतिदिन अच्छे तरीके से खाना खिलाकर अच्छा चंगा कर दिया। जब किसान ने देखा की बाज अब अच्छी तरह से चल फिर सकता है एवं उड़ सकता है तो उसने बाज को ले जाकर अपने खेत में जहां उसने उसे उठाया था छोड़ दिया। बाज भी बहुत समझदार निकला वह अपने साथियों से जाकर मिला एवं उसने शिकारी से लेकर किसान की सेवा के बारे में साथियों को बताया। उसके साथी भी बहुत खुश हुए।

एक दिन उक्त किसान के खेतों में जंगली जानवर घुसकर फसल नष्ट कर रहे थे, तभी घायल बाज एवं उसके साथीगण वहां से उड़कर अपने ठिकाने जा रहे थे, तो बाज के मन में आया कि जिस किसान ने मेरे को जीवनदान दिया था, उसकी फसल को हम लोग अवश्य बचायेंगे, बाजगण ने खेतों के ऊपर मंडरा-मंडरा कर जोर-जोर से चिंघाड़ने लगे एवं आवाज करने लगे। आवाज सुनकर किसान अपनी खेतों की तरफ भागकर आया तो देखा कि मेरे खेतों में जंगली जानवर चर रहे हैं, किसान ने लाठी के सहारे उन जानवरों को भगा दिया, जब तक जानवर खेतों से नहीं भागे तब तक बाजगण आवाज करते रहे। किसान ने ऊपर नजर करके देखा कि ये कौन पक्षी है, तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ कि अरे ये तो वहीं बाज है जिसे मैंने घायल अवस्था में उपचार करके ठीक किया था। किसान के मुँह से अचानक निकला कि कर भला तो हो भला, इसे कहते हैं।

''शुखरु मुहिंजा मालिक, जियें तूं हलाईं''

वदो जोरावर आहीं,
खट ते वेहारीं याँ पट ते वेहारीं''
वेदा जोरावर आहीं।

'हास्य व्यंग्य'

'हम हैं महागाँव के'



भरत चन्दानी
बिलासपुर (छ.ग.)

हमने अक्सर देखा है कि 'महानगरों' में रहने वाले लोग अपने को कुछ ज्यादा ही 'महा' समझने लगते हैं और हम गाँव वालों को हेय की दृष्टि से देखते हैं. अपने महानगरवासी होने पर उन्हें इतना गर्व होता है मानों वहाँ वे अपने माँ-बाप के कारण नहीं बल्कि अपनी कोशिश या मेहनत से जान-बूझकर पैदा हुए हों. लेकिन हम उन्हें बता दें कि हम जहाँ पर रहते हैं उस जगह को 'महागाँव' कहते हैं. अगर अपना नगर प्रगति करता हुआ 'महानगर' हो सकता है तो हमारा गाँव, 'महागाँव' नहीं हो सकता ? हो सकता है. महागाँव यानी शहर से थोड़ा छोटा मगर गाँव से थोड़ा बड़ा, 'आधा तीतर आधा बटेर'. यह बात ठीक है कि हम इसे शहर नहीं कह सकते क्योंकि यहाँ शहरों जैसी सुविधाएँ- सड़कें, अस्पताल, बिजली, पानी आदि नहीं है मगर आप इसे गांव भी नहीं कह सकते क्योंकि यहाँ गाँव जैसी शांति, सरलता, अमन-चैन और भाई-चारा भी तो नहीं हैं.

हम तो इतना ही कहना चाहते हैं इतना इतराने से पहले यह समझ लो कि यदि तुम अपने को 'महा' समझते हो तो हम भी कुछ कम 'महा' नहीं हैं. पहली बात तो हम भी एशिया महाद्वीप में हिन्द महासागर के किनारे उसी महादेश के महान नागरिक हैं जिसके तुम हो. हम महागीता पर हाथ रखकर कसम खा सकते हैं कि हमारे यहाँ जो भी होता है 'महा' होता है और 'महा' के अलावा कुछ नहीं होता. तुम्हारे यहाँ पंडित होते होंगे, हमारे यहाँ 'महापंडित' होते हैं, तुम्हारे यहाँ मूर्ख होंगे, हमारे यहाँ 'महामूर्ख' होते हैं. हमारे यहाँ पुरुष, पुरुष नहीं महापुरुष होते हैं, ज्ञानी, महाज्ञानी और चोर, महाचोर होते हैं, हम 'महाभारत' पढ़ते हैं, 'महावीर' की पूजा करते हैं और गर्मियों में कोला नहीं 'महाकोला' पीते हैं.

महागाँव में महानदी है, जिसके किनारे स्थित महाकाली और महादेव के मंदिर में महाशिवरात्रि के महापर्व पर महापुजारी श्री महानंद जी महाराज जब शिव महापुराण की महामहिमा का महागुणगान करते हैं तो मजा नहीं महामजा आता है.

एक महाकवि हैं जिन्होंने आज तक एक भी कविता नहीं लिखी. उनकी जिद है कि वे जब भी लिखेंगे 'महाकाव्य' ही लिखेंगे, वर्ना ऐसे ही इस संसार से महाप्रयाण कर जाएंगे. पिछले साल महागाँव के महादानी श्री गोकुल महाजन जी ने गायत्री महायज्ञ के बाद जो महाभोज दिया था उसके लिए रसोइये महाशय खास महाकौशल से आये थे महामाया एक्सप्रेस में बैठकर. और सुन लो, हमारे यहाँ के 'महा' किस्म के लड़के महाएक्सचेंज ऑफर के तहत अपनी पुरानी गाड़ी देकर नई

'या-महा' खरीदते हैं और उस पर बैठकर महाविद्यालय जाते हैं जो महात्मा गांधी रोड पर स्थित है. लड़कियाँ महामना मदन मोहन मालवीय कॉलेज में पढ़ती हैं और खुद को महारानी विक्टोरिया से कम नहीं समझतीं. छात्र-महासंघ के चुनाव में सारे छात्र बड़े उत्साह से भाग लेते हैं. वैसे भी चुनाव-उत्सव हमारे यहाँ का महा-उत्सव है फिर चाहे वह महाविद्यालयीन हो या महागाँव पालिका के महापौर का हो, चाहे जिला ऑटो महासंघ का, सारे महागाँववासी चुनाव के रंग में रंग जाते हैं. छात्र नेता, नेता पहले, छात्र बाद में होते हैं और उनकी एक पर्सनल इज्जत होती है. हर छात्र नेता अगर किसी विद्यार्थी महापरिषद् का वर्तमान या पूर्व महासचिव नहीं हुआ तो कम से कम किसी राजनैतिक पार्टी की ग्रामीण इकाई का महामंत्री अवश्य होता है और यदा-कदा अपने पल्ले से खर्च करके अपने ही नाम से अखबार में मय-फोटो बधाई संदेश छपवाता रहता है.

हर साल महाराजा हॉल में 'महाधूर्त' कंपनियों की महासेल लगती है. जिसमें पचास रुपये वाले रिजेक्टेड माल की कीमत दो सौ रुपये बताकर फिर उसमें पचास प्रतिशत की महाछूट देकर सौ रुपये में बेचा जाता है. सारे महागाँव के स्त्री-पुरुष यहाँ आकर 'महाबचत योजना' का पूरा लाभ उठाते हैं.

हम देखते हैं कि आप महानगरों वाले, दूरदर्शन पर मौसम समाचारों के बाद कहते हैं 'अब सुनिये चार महानगरों का तापमान' आप कहना क्या चाहते हैं ? आप लोग वी.आई.पी. हैं कि सारे देश को मालूम होना चाहिए कि आप कितनी गर्मी, सर्दी बर्दाश्त कर रहे हैं ? क्या हम लोग इंसा नहीं है ? हमारे यहाँ भी तापमान होता है जो न्यूनतम और अधिकतम होता रहता है. हम भी तो मौसम की मार सहते हैं. बहुत जल्द हम दूरदर्शन के महानिदेशक से यह माँग करेंगे कि इसमें हमारे महागाँव को भी शामिल किया जाये और समाचार के अंत में सुन्दर समाचार वाचिका कहे 'अब सुनिये चार महानगरों और एक महागाँव का तापमान'. अगर हमारी माँग मंजूर नहीं हुई तो हम जेहाद छेड़ देंगे. (आजकल जेहाद कमीनेपन का पर्याय हो गया है) महागाँव में 'महाबंद' का आयोजन करेंगे और हर दीवार पर लिखा होगा 'महानगर चलो'.

एक बार महागाँव में कोई बीमारी फैल गई थी जिसमें हमारी जनसंख्या की समस्या थोड़ी सी हल हो गई. सारे महागाँववासी हैरान, परेशान ये कौन सी बीमारी है ? महापंचायत बैठी. महासभा में महाविचार हुआ. जहाँ तक बजबजाती नालियों, (यह शब्द अख्बारों से 'साभार') कचरे के ढेरों, मच्छर, मक्खियों का सवाल है, सारे देश का वही हाल है फिर बीमारी हमारे यहाँ क्यों ? बाद में जब अधिकृत तौर पर घोषणा हुई कि असल में वो महामारी थी तब सबने चैन की सांस ली. आखिर महागाँव में कोई छोटी-मोटी बीमार हो कैसे सकती है, महागाँववासी मरेंगे तो महामारी से मरेंगे, आखिर ऊपर जाकर उस महाप्रभु को भी तो कुछ जवाब देना होता है. इज्जत का सवाल है.

और क्या अपनी महानता बताएँ ? कुल मिलाकर 'महा' से कम में हमारा काम नहीं चलता. हम चाहें तो इसे और लंबा खींचकर. 'महाव्यंग्य' बना दें मगर डरते हैं कि आप लोग कहेंगे ये आदमी तो 'महाबोर' है.

मुमताज

लेखक- तेज 'काबिल'
अनुवाद- डी.पी. तेजा

यह मुमताज इतिहास की मुमताज शाहजहां वाली नहीं है। इसके मरने के बाद ताजमहल नहीं बनाया गया। पर वह एक बदनसीब खूबसूरत मुमताज थी, जिसके मरने के बाद कोई यादगार तो क्या किसी ने भी उसकी लाश पर दो आंसू भी न बहाए।

कराची में 1991 में एक महिला की मौत हुई, जिसका नाम था मुमताज उस हसीन औरत की जुबान पर आखरी सांस तक इन्दौर का नाम था। उसे आम लोगों की तरह दफनाया गया और उसी के साथ ही दफन हो गई इन्दौर के महाराज तुकोजीराव और मुमताज़ के इश्क और अय्याशी की कहानी, जिसकी भारत तो क्या इन्दौर की जनता को भी जानकारी नहीं होगी। उसकी जवानी की कहानी की जानकारी कुछ बुजुर्गो को जरूर होगी, उसने शादी की। मगर जल्द विधवा हो गई। बंटवारे के बाद वह पाकिस्तान चली गई। कभी लाहौर तो कभी कराची में ज़िदंगी के बाकी दिन काटने लगी। पति के स्वर्गवास होने के बाद उसे उसके घर से निकाला गया और वह हिंदुस्तान को अलविदा कर पाकिस्तान चली गई।

इन्दौर के तुकोजीराव और मुमताज दोनों अपने दिलों में प्यार और वासना का तूफान लिये संसार से चले गये। तुकोजीराव को गद्दी से हटाने की बात सारे भारत को मालूम थी। पर मुमताज़ अपनी ज़िदंगी सुख से न गुज़ार सकी।

फरीदा खानम के कहे मुताबिक कि वो अक्सर इन्दौर को याद करती थी। ऐसा मालूम चला है कि मुमताज़ 18 बरस की थी तथा तुकोजीराव के आगोश में नहीं आई थी तब वह बम्बई चली गई। तुकोजीराव ने हथियार बंद फौजी उसकी निगरानी के लिये भेजे। बम्बई में मुमताज एक अरबपति बाओला पर फिदा हुई। यह बात तुकोजीराव तक पहुंचाई गई और ऐसा भी उन्हें कहा गया कि वे जल्द ही बम्बई से फरार होने वाले हैं।

•मुमताज़ के शोहर अब्दुल्लाह रहमान के दिमाग की नस फटने के कारण मौत हुई। बंटवारे के बाद वह पाकिस्तान गई। वह होशियार गायिका थी उसे फिल्म वालों ने अपने साथ जोड़ना चाहा। पर उसने किसी को तवज्जो नहीं दी। बाओला की मौत के बाद उसने इंदौर जाना चाहा। मगर उसकी माँ ने उन्हें जाने नहीं दिया। मुमताज़ की माँ अपने समय की मशहूर तवायफ थी।

खबर मिलते ही महाराज खुद बम्बई पहुंच गया और अपने फौजी उनके पीछे भेजे। फौजियों ने बाओला की लाश और मुमताज को महाराज के यहां पहुंचाया। बाओला के खानदान वालों ने केस दाखिल किया। तुकोजीराव महाराजा थे इस कारण उन्हें फांसी नहीं दी गई। लेकिन उन्हें गद्दी से हटाया गया। बाओला की मौत• की बाद के मुमताज का विवाह अमृतसर के व्यापारी के बेटे अब्दुल्लाह रहमान के साथ हुआ। वह मुमताज़ को अमृतसर ले आया।

कुछ दिनों बाद मुमताज के शौहर अब्दुल्लाह रहमान के दिमाग़ की नस फटने के कारण मौत हुई। बंटवारे के बाद वह पाकिस्तान गई। वह होशियार गायिका थी उसे फिल्म वालों ने अपने साथ जोड़ना चाहा। पर उसने किसी को तवज्जो नहीं दी। बाओला की मौत के बाद उसने इंदौर जाना चाहा। मगर उसकी माँ ने उन्हें जाने नहीं दिया। मुमताज की माँ अपने समय की मशहूर तवायफ थी। उसने मुमताज की आड़ में तुकोजीराव के साथ बड़ा सादा करना थे चाहा। इस कारण ही वह मुमताज को इन्दौर से बम्बई ले आई थी। खुद मुमताज़ में कोई भी लालच नहीं था। वह तो बस यहीं चाहती थी कि उसे गृहस्थी जीवन में सुख मिले। मुमताज़ की चाहत ने ही तुकोजीराव को मुम्बई जाने के लिये आमादा किया और उसने इतना बड़ा जोखिम लिया। उसे मुमताज़ तो न मिली, पर उसने अपना राज्य भी गंवाया।

सिंधी सूफी संगीत कार्यशाला ऐं उत्सव

सिंधी अकादमी दिल्लीअ जे ज़ेर साये ते दिल्लीअ जे सिंधू भवन, ओल्ड राजेन्द्र नगर में टिनि डींहंनि जी सिंधी सूफी संगीत कार्यशाला जो आयोजन कयो वियो। जंहिं में 35 खनि संगीत प्रेमियुनि ऐं गायक कलाकारनि शिर्कत कई, जिनि में के ख़ासि हुआ- श्रीमती उमा लाला, पुष्पा भावनाणी, लज्जा भाटिया, लीलू झांगियाणी, नंद भाटिया, देवी बदलाणी, नीतू मटाई, जयश्री, नीलम मंशारामाणी, शकुंलता मिर्चू शर्मा, राजन झांगियाणी, अरुण हेमराजाणी ऐं बिया। हिन दफे, कार्यशाला हलाइण लाइ बतौर उस्ताद-आदीपुर (कच्छ) जे मशहूर फ़नकार श्री दुष्यंत आहूजा खे घुरायो वियो।



दुष्यंत आहूजा गुज़रियल चालीहनि सालनि खां सिंधी संगीत जी शेवा कई आहे। हुन खे शास्त्रीय संगीत में एतिरी त महारत हासिल आहे जो हू हर गीत ऐं राग खे हिक अलगि अंदाज में पेश करण जो मादो रखे थो। हुनखे गुजराती अकादमीअ मां टे साल लगातार 1978खां वठी 1980 ताईं पहरियों नंबरु हासिल करे नामूस हासिल कई आहे। दुष्यंत आहूजा संगीत जी तालीम पंहिंजे पिता साहिब-दादा चूहड़राम आहूजा ऐं वडे भाउ श्री जय किशन आहूजा खां वर्ती आहे।

संगीत कार्यशाला में दुष्यंत आहूजा पद्मश्री दादा हूंदराज 'दुखायल', किशनचंद 'बेवसि' ऐं हरी 'दिलगीर' जा गीत सेखारिया, जिनि गीतनि जी तर्ज ऐं धुन खुदि दुष्यंत आहूजा तैयार कई हुई। सभ खां पहिरीं हुन दादा हुंदराज 'दुखायल' जो गीत-सदा शाह नानिक, शहनशाह नानिक सेखारियो, श्री हरी 'दिलगीर' जो कौमी तरानो- 'मुंहिंजो प्यारो वतनु... जीअ ज़ियारो वतनु... तो तां घोरे छडियां, पंहिंजो तनु मनु ऐं धनु... ऐं किशनचंद 'बेवसि' जो गीत-'मेहर करि ऐ मेहर जा वाली' निमाणनि माण तूं... ऐं बिया घणेई गीत-ग़ज़ल पेश करे संगीत जे गहरायुनि खे समझाइण जी कोशिश कई। शास्त्रीय संगीत जी अहिमियत समझाईंदे श्री आहूजा चयो त ''क्लासीकल संगीत सिखणु निहायत जरुरी आहे, जंहिं जंहिं खे बि इहो संगीत अचे थो, हुन लाइ कंहिं बि बोलीअ में गाइण सवलो थी पवंदो। असां जो सिंधी संगीत 'लाल-झूलेलाल साईंअ' ताईं महदूद न आहे, इहो एतिरो त वसीउ आहे जंहिं जो कोई अंतु न आहे।''

शाम जो सिंधी अकादमी दिल्ली ऐं इंडिया हेबीटाट सेंटर जे गडियल सहकार सां 'सिंधी सूफी संगीत उत्सव' जो आयोजन बेहद कामियाब नमूने कयो वियो। अकादमीअ जी सचिव श्रीमती सिंधू भागिया मिश्रा ऐं मेम्बरनि- गोपी गजवाणी, शंकर मूलवाणी (अगूणे मेम्बरनि), सुश्री निर्मल चैनाणी ऐं लज्जा भाटिया जोति जलाए प्रोग्राम जो मुहूरत कयो। हीउ प्रोग्राम महान सिंधी संगीत हिदायतकार सी. अर्जुन जे याद में रखियो वियो। सी. अर्जुन हिक अहिड़ी शख्सियत जा धणी हुआ जिनि खे संगीत ते पूरी महारत हासिल हुई। हू निउड़त, त्यागु ऐं सादगीअ जी हिक मुज़सिम तस्वीर हुआ। हिंदी फिल्मुनि खां सवाइ हुननि घणनि ई सिंधी फिल्मुनि लाइ संगीत तैयार कयो। हुननि अनेक सिंधी नृत्य नाटिकाउनि लाइ बि संगीत तैयार कयो। श्री अर्जुन सिंधी संगीत खे बुलंदीअ ते आणण लाइ खूब पाण पतोड़ियो, एतिरे कदुरि जो हू पंहिंजी आखिरी घड़ीअ वक्ति बि अनेक सिंधी कलाकारनि सां संगीत तैयार करे रहिया हुआ ऐं अचानक

हार्ट-अटैक सबब हुननि हिन फ़ानी दुनिया खे अलविदा कई हुई। अहिड़े महान सिंधियत जे शैदाईअ खे श्रधांजली पेश करे प्रोग्राम जो आगाज कयो वियो।



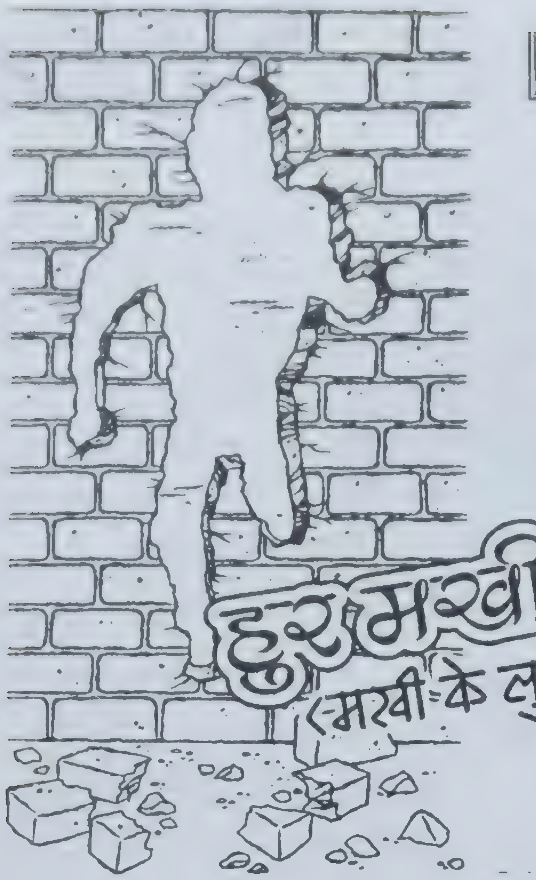
शुरुआत में संगीत जो प्रोग्राम पेश कयो दिल्लीअ जी हिक ज़ातल सुञातल कलाकारा- श्रीमती साधना भाटिया। श्रीमती साधना भाटिया, मश्हूर उस्ताद दादा कान मोतीहर खां सिंधी संगीत जी तालीम वर्ती आहे। हुन पंहिंजे मिठड़े आवाज में श्री मोहन मंशारामाणी ऐं दादा कान मोतीहर जा तैयार कयल गीत पेश करे हाजरीननि खे खूब मुतासिर कयो। हुन पहरियों 'गुल' साहिब जो लिखियलु ऐं श्री मोहन मंशारामाणीअ जे तैयारु कयल गीतु-'मिठड़ी अबाणी बोली, दिलबर अबाणी बोली वाह वाह अबाणी बोली... पेश कयो। साधना जे पहरियें गीत में ई सिंधी बोलीअ लाइ एतिरो सोजु ऐं उकीर हुई जो घणनि इएं महसूस कयो त असां पाण में सिंधी न गाल्हाए पंहिंजो पाण ई खता करे रहिया आहियूं। तंहिं ते अकादमीअ जी सचिव श्रीमती सिंधू भागिया बुधायो, 'इहा वेधन फ़कति सिंधी बोलीअ सां न पर सभिनी बोलियुनि सा आहे, एतिरे कदुरि जो वेझिड़ाईअ में मश्हूर हिन्दी अख़बार 'जनसत्ता' में श्री असगर वज़ाहद जो संपादकीय में लेख हो त हाणे हालत अहिड़ी थी वई आहे जो कुझु माण्हू हिंदी भाषा लाइ बि रोमन लिपीअ जो इस्तेमाल कनि था।' साधना भाटिया बिया बि के गीत पेश कया, जिनि जा बोल आहिनि-हिति मूमल मांदी, मोटु मिठा, थी मारे जुदाई मोटु मिठा, प्रभु 'वफ़ा' जो गीतु-खणी नेण कोई निहारे रहियो आ, कोई यादि में आंसू हारे रहियो आ ऐं हिकु बियो गीतु-छो वएं राति मुंहिंजा राणा, तूं दिलिड़ी चोराए, डींदयसि दांहं दर्द जी, अर्जी लिखाए... हिननि गीतनि खे हाज़रीननि खूबु माणियो।

पुरातन कहानी

हुर मखीजा

(मखी के लुटेरे)

- लालचन्द अमरडि़नोमल



मखी झील सांघड़ के निकट, आधे कोस की दूरी पर है। इसकी चौड़ाई 16कोस, लम्बाई 22 कोस और क्षेत्रफल 512 वर्ग कोस है। झील के चारों तरफ कान्ह, लेवन, कन्डर, भितर के गुल, करन्झ, बुकनि, कान्डेरो और बिहण (सभी छोटे पेड़ और पौधे) साल भर पैदा होते रहते हैं। बरसात के मौसम में, पानी के अन्दर, पबुण, लोहड़, बिह (कमल के डंठल) बहुत मात्रा में उत्पन्न हो जाते हैं। पत्ते भी बहुत होते हैं जिससे चटाईयाँ बनायी जाती हैं। जब पानी कम हो जाता है तब गेहूँ, सरसों, चने और मूंग की फसल होती है। जुआर भी बोई जाती है, मछली काफी मात्रा में मारी जाती है। झील की हूण (पेटे बेसिन) में छोटे-छोटे बहुत जंगल (वनरोपण) हैं। हुरों (डाकुओं) ने इन्हीं जंगलों (वनरोपण) में अपने छिपने का स्थान बनाया। लूट में जो कुछ माल हाथ लगता था वे इसी स्थान पर ला कर इकट्ठा करते थे।

शुरू में केवल पाँच व्यक्तियों ने इस अभियान को प्रारंभ किया-ये थे, बच्चू खास खेली, पेरू सांद, तग़ियो चांग, ईसो दाहिरी और खमीसो वसाणु। वे पाँचों ही पीर साहब पागारे के मुरीद (अनुयायी) थे।

आओ देखें वे किस तरह आपस में मिलते हैं। बच्चू के पिता का नाम वरियाम था। उनके पीर (गुरु) मठड़ाऊ (गांव) प्रवास में आये थे और वरियाम ने इन्हें अपने घर पधारने के

लिए आग्रह किया। वहां पर बच्चू का पीर के एक नौकर के साथ झगड़ा हो गया। बच्चू उसकी हत्याकरके घर से भाग गया।

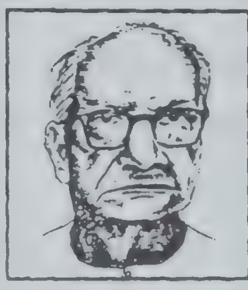
इस पर सरकारी ऑफिसरों ने वरियाम पर भी हत्या में शामिल होने का इल्जाम लगाया और बेटे को सुपुर्द करने के लिये कहा। बेटा तो गायब था, फरार बेटे को कहाँ से लाये, वरियाम को जेल में बन्द कर दिया गया। जेल में उसने जहर खा कर आत्महत्या कर ली।

तत्पश्चात बच्चू ने डाके डालना शुरू कर दिया और अपनी पसन्द का साथी भी तलाश करने लगा तब उसे पेरू मिल गया।

पेरू भड़े (गाँव) का निवासी था। पेरू पर सांघड़ निवासी लाले के बेटे तेजू की डिकिरी थी, जिसकी तामील के लिये वारन्ट भी निकला था परन्तु पेरू भाग कर बच्चू से मिल गया।

इस दौरान, तग़ियो चांग, मठड़ाऊ गाँव में पारू धोबी के मकान में सेन्ध लगाकर और ईसो दाहरी अपने ही गाँव संदाण में चोरी करके बच्चू और पेरू के गिरोह में शामिल हो गये।

खमीसो वसाणु, मोरी बाखोड़ी गांव का रहने वाला था और दादी नामक एक महिला पर फिदा था। वह महिला उस्मान नामक व्यक्ति की विवाहित पत्नी थी। इश्क अन्धा और ईर्ष्यालु होता है। उसने तलवार से उस्मान के हाथ-पाँव काट कर उसे अपंग बना दिया और स्वयं भाग कर उन चारों के साथ मिल गया।



सिंधी गद्य के सुप्रसिद्ध चार स्तंभों में से एक लालचंद अमर डि̱नोमल (1885-1954) थे। 'हुर मूखी जा' (मखी गाँव के लुटेरे) सन् 1915 में लिखी हुई उनकी कहानी है, जिसमें उस समय की सामाजिक व्यवस्थाओं एवं प्रशासनिक विफलताओं का उल्लेख है। यह सिंधी भाषा की पुरातन कहानी (Classical Story) मानी जाती है।

मखी झील में जब पानी छिछला होता तब वे वहाँ रहते थे, वरना वे बियोछन गाँव में अली बख्श वसाण के यहाँ रहते थे। वह भी कुख्यात अपराधी था।

सबसे पहिले उन्होंने रजा मुहम्मद दफदार के घर पर बड़ा डाका डाला। रजा मुहम्मद मठड़ाऊ गाँव का था और इनका पक्षधर था। मठड़ाऊ गाँव में से कुछ भैंसे चोरी हो गयी और रजा मुहम्मद को इसकी सूचना मिली। उसने अपने नौकर कारू मीर बहर को उनकी तलाश करने के लिये भेजा। कारू पदचिन्द देखता, मीर के गाँव में आ गया। वहाँ उसने शर और चाण्डिया जाति के लोगों को चोरी के जुर्म में पकड़ा। मीर के कामदार छुटल भरगड़े को जब यह समाचार मिला तो वह वहाँ पहुँचा। अपने आदमियों से उसने कारू को पकड़वा कर बहुत पीटा और लानत मलामत करके उसे वहाँ से भगा दिया। कारू ने सारी आपबीती रजा मुहम्मद को आ कर सुना दी। सुनकर वह आग बबूला हो गया। बच्चू पेरू और उनके साथियों को बुलाकर कहा, 'हम हमेशा आप पर हाथ रखते आये हैं, अब आपकी बारी है' उन्होंने उत्तर दिया, 'परवर्दगार पर भरोसा रखो, देखना उसकी कैसी हालत बनाते हैं।'

उसके बाद उन्होंने आसपास के सभी उठाईगीरों, बदमाशों, चोरों और जबर लोगों को पत्र भेज कर आमंत्रित किया कि 'आओ, हमारे गिरोह में शामिल हो जाओ खुदावन्द करीम के करम (कृपा) से अपनी बादशाही (राज्य) कायम करें। पुलिस हमारे साथ है और कोई डर नहीं है तलवारें और बंदूकें हमारे पास हैं।'

इस पर सांघड़ निवासी परियों का बेटा गुलू मोची, मखी निवासी बलू गाही, मगरारी निवासी मिसरी गाहो तहसील शहदादपुर, बाखोड़ी निवासी राणो वसाणु, चोटियारी निवासी मीर खान का बेटा फतलू गाहो और उसका भाई सोमार, कुल छः व्यक्ति, ये भी पीर साहब पागारे के मुरीद थे, आ कर उनके गिरोह में शामिल हो गये।

बच्चू को बादशाह बनाया गया क्योंकि वह पहिला व्यक्ति था और बन्दूक चलाने में माहिर था। यद्यपि वह बदन में थोड़ा पतला और शक्ति में औरों से कम था फिर भी किसी ने उसके अधिकार को नहीं छीना। पेरू बदन का भारी भरकम मोटा पर्वत के समान था। उसे वजीर (मंत्री) बनाया गया, खमीसो बना कोतवाल और बाकी सभी दरबार के अमीर उमराव हो गये।

पूरी तैयार के साथ घोड़ों पर सवार हो कर छुटल भरगड़े के अतिथि बनकर आए। द्वार पर बुलंद आवाज में कहा, 'दम बहाव अल्हक' (अल्लाह के बल पर आए हैं) चोरों तरफ छुप कर अंधेरी रात में नहीं आए हैं परन्तु दिन के उजाले में आए हैं। शाहों के समान, सम्मानित व्यक्ति बनकर, सम्मानपूर्वक उनकी सारी उमर की कमाई गहने आदि बन्दूकें और तलवारें तो ले ही ली, उसकी सुन्दर सलोनी कुंवारी बेटी को भी साथ ले गये।

बच्चू और इस नवयुवती की बाद में मुहब्बत हो गयी और दोनों ने निकाह कर लिया। उसे खुदा बख्श ने अपने गहरे दोस्त टेरल गारी के गाँव के पटेल के यहाँ ठहराया। जब कभी उसे मौका मिलता वहाँ जाकर उससे मुलाकात करता था।

छुटल भरगड़े के साथ जो दुर्गति हुई थी, उसे चुपचाप सहन कर बैठने वाला वह नहीं था। मदद खान और जहानखान भी मीर के कामदार थे। उनको साथ लेकर पदचिन्ह देखता हुआ वह सांघेड़ आ गया। हगऊखान सूबेदार से मदद मांगी। उसने कहा, 'आदमी पहिचानो तो मैं उनको लाकर दे दूं।'

उन्होंने बहुत तलाश की, जोखम उठाए किन्तु सब बेकार हुआ। वे तो मखी में सुरक्षित थे वहाँ छोटे टापूओं (द्वीप) की तरफ पानी के बीच, रास्तों के बारे में, इनके अतिरिक्त अन्य किसी को मालूम नहीं था। इस कारण छुटल भरगड़े और उसके साथी सिर पीटते निराश होकर अपने गाँव लौट गये। डाकुओं को माल हजम हो गया।

मुल्क में लूटमार और डाके शुरू हो गये। आज इसको लूटा, कल उसके मकान में सेंध लगायी। सभी समाचार पत्र इनकी हरकतों और कारगुजारियों से भरे रहते थे। पुलिस के छोटे ऑफिसर उनसे मिले हुये थे, इसलिये वे निडर होकर कहर ढहा रहे थे। पुलिस वालों ने खूब अपने पेट भरे। बड़े ऑफिसरों के बारे में सुना जाता था कि हुरों ने उनको भी खूब दिया। घी के डिब्बों में धन डालकर किसी न किसी बहाने उनके पास पहुंचाते थे और उन्हें खुश रखते थे।

उन्होंने दूसरा बड़ा डाका नौशहरे फेरोज गाँव के एक बनिये के यहाँ डाला। वहाँ से उनको लाख सवा लाख का माल मिला। वहाँ की पुलिस भी पद चिन्ह पहचानती सांघड़ गयी। वहाँ ज्वाला सिंह साखरू सांघड़ का दफेदार भी उनके साथ हो गया। सारा गाँव छान मारा परन्तु कुछ हाथ नहीं लगा।

अस्तु वे तो लौट गये परन्तु ज्वाला सिंह हुरों को ढूंढने में लग गया। ज्वाला सिंह कौआ था, उसने पता लगा लिया कि उनके साथ कौन-कौन है। वह उनके साथ सख्ती बरतने लगा, 'सच बताओ' सबने एक ही उत्तर दिया, 'या हुस्सेन! हमें कुछ मालूम नहीं।'

ज्वाला सिंह ने उनको कहा, 'खैर! देखा जाएगा एक बार ये उठाई गीर (हुर) पकड़ में आ जाएँ फिर देख लूंगा। उनके साथ आप भी लटके रहोगे-याद रखना।'

किन्तु बन्दे के मन में एक तो

साहिब के मन में और कुछ। प्रत्येक वर्ष माघ महीने की चौदह तारीख, सांघड़ के आसपास शेर बरी का मेला भरता था, वहाँ समूहों में लोग आते थे। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष मेले में अधिक लोग आये थे-ज्वाला सिंह पाँच सात सिपाहियों के साथ हुरों की तलाश में आया। सारा दिन खाक छानी। उसका खाना पीना हराम हुआ। उसे हुर नहीं मिले। थक हार कर अपने डेरे पर लौटा- एक खाट पर भरी बन्दूक रखकर बैठा ही था कि उस पर गोलियों की बौछार होने लगी। बहुत कोशिश की कि बन्दूक उठाए परन्तु दुश्मन की एक गोली उसकी कनपटी पर लगी और वह वहीं ढेर हो गया।

डाकुओं को पता था कि ज्वाला सिंह उनका पीछा कर रहा है इसलिये जब तक ज्वाला सिंह उनको पकड़ ले, उसके पहले ही उसको ठिकाने लगाने के लिए वे उसके डेरे पर छुपकर बैठे रहे। मौका मिलते ही उसे मार गिराया। इस घटना पर एक छोटी कविता बनी है-

भलो रे बहराम शेर परे
वाह ! जे तुहिंजी पत परे
वियो ज्वाला सिंह मरी
तेरह तारीख मेलो मोचारो
चौदुहीं वयोम चढ़ी भलो रे.....

अब पुलिस उनके (हुरों के) पीछे पड़ गयी, परन्तु वे अधिक शक्तिशाली हो गये थे। नए-नए अड्डों पर बैठकें रखते। सांघड़, भेड़ी, झोल, मीरपुर, हथोंगो, संझोरो, कंगो पट्टी, जमड़ाओं और भबड़स (सभी गाँव) में, उनका दबदबा था। करीबन 1500 लोग तो केवल सांघड़ में और करीबन 1600 लोग भड़े में उनके गिरोह के अन्दर थे।

उसके बाद भी उन्होंने बहुत से डाके डाले, पुलिस के साथ भी मुकाबला किया। नायक महरे खान रन्द, राइन्तयारी में उनकी तलाश में आया, तीन हुरों को इसकी भनक पड़ गयी।

महरे खान घोड़े पर सवार होकर कहीं बाहर जा रहा था। ये हुर भी आसपास छुपे बैठे थे और मौका मिलते ही उस पर बन्दूकें चला दी। गोली घोड़े की टांग में लगी घोड़ा भड़का और उछला। सवार नीचे गिर गया। हुरों ने उसे फिर उठने ही नहीं दिया, एकाएक उस पर टूट पड़े। तलवार से उसके हाथों की अंगुलियाँ और कान काट दिये। बन्दूक चलने की आवाज से काटो मुहाणो, जिसकी छुटल ने पीट कर मरम्मत की थी और आरब मुहाणो, जमान शाह पंजाबी और अन्य पठान आ गये और हुरों पर गोलियाँ चलायी परन्तु हुर भाग गये। कारतूस बनाने की मशीन और बहुत से कारतूस पीछे छोड़ गये। घायल महरे खान को मय समान सांघड़ थाने में पहुंचाया गया। दूसरी बार, एक वरियाम खास खेली नामक सिपाही हुरों के हाथ लग गया। वह उमर कोट से बन्दूकें और बारूद लेकर सांघड़ जा रहा था। उनको तो अल्लाह ने अवसर दिया था। उससे बन्दूकें और बारूद छीन कर उसका गला दबा कर लाश को ही गायब कर दिया।

इसी बीच बीन बड़े डाके डाले

गये। तीरथ बनिये को दोदन के मोड़ पर लूटा, बाखड़े में लूटमार की और चोटियारियुनि में गाँव के सभी सम्पन्न आसामियों को लूटा। बाखड़े और चोटियारन वालों को तो पहिले से ही कहलाया था 'इतने समय में शराफत से चुपचाप इतनी नकदी भेज दो तो ठीक वरना अमुक दिन उसी समय हम मेहमान बन कर आपके यहाँ आएंगे।'

उन्हें नकदी नहीं मिली तो वे पूर्व घोषित दिन एवं समय पर वहाँ पहुंचे। इसी बीच बनियों ने पुलिस की गश्त लगा दी थी, सोचा था कि पुलिस की लाल पगड़ी देखकर हुर भाग जाएंगे।

किन्तु वे डरने वाले थे क्या?

पुलिस से उन्होंने मुकाबला किया, उनमें से कईयों के कान काट दिये। बनियों की भी मरम्मत की, घरों के सभी गहने, कपड़े, नकदी आदि बोरों में भर कर चल दिये।

यहाँ यह बात याद रखने की है कि हुर उनको ही लूटते थे जिन्होंने उन्हें कभी सताया था अथवा गरीबों को लूटा था या मुफ्त का माल इकट्ठा कर धनवान बने थे। वे गरीबों, निर्धनों को कुछ नहीं कहते थे, उनकी तो वे मदद करते थे।

एक बार जंगल में बैठ कर हुर जश्न मना रहे थे। जंगल के बाहर निकट ही चौड़ी सड़क थी। उस समय वहाँ से एक जुलाहा (बुनकर) कपड़े के दो थान लेकर जा रहा था उसे देख कर हुरों ने आवाज लगायी, 'जाना मत'।

बेचारा बुनकर थान सहित हाथ बांध कर सामने खड़ा हो गया। उन्होंने पूछा 'क्या समाचार है मियां!' उसने उत्तर दिया, 'साहब, सेठ सलामतराय ने पेशगी पैसे दिये थे, उनका थान बुना था। वही देने जा रहा हूँ।'

हुर: भला... अब?

बुनकर: मालिक, यह आपके हवाले हैं आप लें, मैं दूसरा बुन कर सेठ को पहुंचाऊंगा

हुर: मियां... हमें नहीं चाहिये, परन्तु यह थान खोल तो सही...।

हुर: अब यह सारा थान अपने सिर पर बांधो

बुनकर ने एकदक आज्ञा का पालन किया।

हुर: अब जाओ सेठ सलामतराय के पास। उससे कहना कि हमने तुमको यह पाग पहनाई है अगर हिम्मत है तो उतार दो। जो उत्तर दे, वह आकर हमें सुनाना।

बुनकर 'जी हुजूर' कहकर उड़ता हुआ सेठ के पास पहुंचा। सेठ ने संदेश सुन कर कहा, 'मियां! तुम्हारा एहसान है। यह जोड़ी तुम्हारी है और पेशगी पैसे भी तुमको मुबारक। जल्दी जाकर उनको यह समाचार सुनाओ। देर मत करना, कहीं वे गुस्से नहीं हो जाएँ।'

बुनकर वापस हुरों के पास आया, सारी बात बतायी। हुरों ने दूसरा थान भी उसे देकर कहा, 'अब अपने गाँव जा कर सुखी रहो, परन्तु हमारा एहसान मत भूलना।'

वह बुनकर उनका दोस्त बन गया। उन्हें बहुत सी सूचनाएँ देता था। सेठ सलामतराय भी उनके पास आता जाता था समय-समय पर उनकी

सहायता भी करता था। वे भी उसका एहसान नहीं भूलते।

लोगों में हुरों के विरुद्ध आक्रोश बढ़ने लगा। सरकार ने देखा कि स्थानीय लोग कुछ कर नहीं पाते हैं, इसलिए सांघड़ में गोरे सिपाही बुलाए गये। आते ही उन्होंने लखी जंगल में आग लगा दी। उस समय तो जंगल खाक हो गया, बाद में जली जड़ों पर जब पानी पड़ा तब जंगल और भी घना हो गया।

उस वक्त मिस्टर ल्यूकस डिप्टी कमिश्नर और मुहम्मद याकूब नारी के डिप्टी कलेक्टर बन कर आए। दोनों अधिकारियों ने लगातार कई दिनों तक मखी के अन्छर बाखोड़े के निकट, हुरों का पीछा किया, हुरों ने भी मुकाबला किया परन्तु वे भाग निकले।

ल्यूकस ने भी पीछा नहीं छोड़ा। मखी में, भरशाह की भिट्ट पर उन तक पहुंचे। डाकू नारी के पश्चिम में छिप कर बैठे थे। ल्यूकस पूर्व दिशा में ही था, कि उस पर दूर से गोलियाँ चला दी। हुरों ने देखा कि रूकेंगे तो पकड़े जाएंगे, इसलिये भाग खड़े हो गये।

उस समय पीर साहब पागारो हैदराबाद आए हुए थे। ल्यूकस ने कार्यवाही करके उसे वहीं पर नजरबन्द करा दिया। पीर साहब हुरों द्वारा जनता को परेशान करने की हरकतों और कार्यों को पसन्द नहीं करते थे। उसने फरमान जारी किया कि डाकुओं को पेश किया जाय।

मुर्शिद कहे और मुरीद इन्कार करे, ऐसा मुसलमान का मर्क (स्वभाव) ही नहीं है। पीर साहब का हुकुम हुआ, 'या आत्मसमर्पण करो या लड़कर मरो।' उत्तर दिया 'किबला! लड़कर सिर देते हैं।'

तब पीरो वजीर, तगियों चांग और गुलू मोची तैयार हो कर आए और जंगल में, झोड़ी की लई के निकट डेरा डाला। वहाँ से ही ल्यूकस को कहलाया, 'आइये साहब, लड़ाई कीजिए, हम तैयार हैं।'

ल्यूकस सेना ले कर आ गये। डाकुओं ने खूब मुकाबला किया, किन्तु कहाँ सारी फौज और कहाँ केवल तीन व्यक्ति, बिचारे मारे गये। कहते हैं कि पीरो को पेट में गोलियाँ लगी तो भी लड़ता रहा। अन्त में एक गोली ललाट में से पार हो गयी और वह लुढ़क गया।

इसके तुरन्त बाद और तीन व्यक्ति आए बलू गाहो, मिसरी गाहो और उस्मान हंगोरोजो। साहब सेना के साथ फिर आये और लड़ाई हुई। वे भी लड़ कर मर गये। ज्वाला सिंह के बेटे को, झाटू ने इस झगड़े में पकड़ लिया, बाकी बचे बच्चू बादशाह, ईसो, फतलू, सोमार खमीसो और राणो।

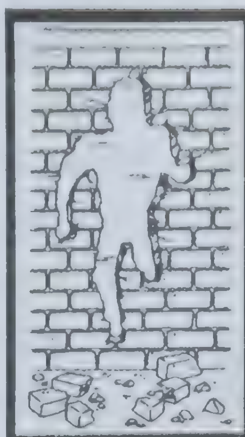
जब पीर साहब ने नजरबन्दी के समय फरमान जारी किया था कि मुरीदों को सौंप देंगे, तब फतलू और सोमार तैयार हो कर पीर साहब के नौकर को मारने आये थे, यह सोच कर कि पीर साहब को गलत खबरें देने के कारण ही यह फरमान हुआ है, परन्तु वे स्वयं मारे गये।

राणा ने ल्यूकस के सामने आत्मसमर्पण किया। उसे सात वर्ष की काले पानी की सजा हुयी। शेष तीन ईसो, बच्चू और खमीसो बचे। उनमें से खमीसो फरार होगया, इसो ने हिम्मत हार दी और ल्यूकस के सामने आत्मसमर्पण करने का संदेश भेज दिया। परन्तु बच्चू बादशाह अब भी निडर बना हुआ था और डाके डालता रहा, किसी की पकड़ में नहीं आया।

अन्त में सरकार ने उसकी प्रेयसी को पकड़कर अफवाह फैला दी कि 'अमुक दिन अमुक स्थान पर उसकी

नीलामी की जाएगी।'

बच्चू वैसे तो आत्मसमर्पण करने वाला कतई नहीं था और न ही उसने दिल छोटा किया था, परन्तु इस समाचार के बाद उसकी हिम्मत टूट गयी। बच्चू उसे बहुत प्यार करता था वह उसके प्रति वफादार थी।



आखिर बच्चू ने कहा, 'ए दिलबर! अब अन्तिम बिदाई!' उसकी महबूबा ने कपड़ों में छिपी कटार निकाली और उसे देकर बोली 'दिलबर तुम बिना इस जग में जीना बेकार है, अब ले लो यह कटार और चीर दो मेरे सीने को। पहिले तो बच्चू का मन नहीं माना और हाथ नहीं उठा। परन्तु उसी क्षण यह सोच कर कि कहीं मेरे पीछे किसी दूसरे की न हो जाये, कटार उठा कर प्रेमिका का सिर धड़ से अलग कर दिया।

बच्चू बादशाह ने देखा कि गिरोह बिखर गया है, भाग्य ने साथ नहीं दिया, इस कारण शीघ्र ही सरदार मुहम्मद याकूब खान के पास आ गया। सरदार ने उसे पहिचाना, सोचा कि किसी नापाक इरादे से आया है। उठकर दूसरे कमरे में गया और वहाँ से ही कड़क आवाज में पूछा 'कौन हो? क्या चाहिये?' उसने उत्तर दिया, 'मैं बच्चू बादशाह हूँ, आत्मसमर्पण करने आया हूँ परन्तु मेरी माशूका (प्रेयसी) को आजाद कर दो।'

उसके शरीर की तलाशी ले कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया और ईसो के साथ मीरपुर भेज दिया। वहाँ स्पेशल जज हार्ट डेविज के पास उसका मुकदमा चला और उसे फांसी की सजा सुना दी गयी।

फांसी के फंदे पर झूलने से पहिले, बच्चू को उसकी प्रेमिका से मिलने दिया गया। प्रेमी-प्रेमिका सबके सामने एक दूसरे के आंलिगन में बंध गये। कुछ समय तक एक-दूसरे के साथ लगे रहे और कुछ नहीं बोले। आखिर बच्चू ने कहा, 'ए दिलबर! अब अन्तिम बिदाई!' उसकी महबूबा ने कपड़ों में छिपी कटार निकाली और उसे देकर बोली 'दिलबर तुम बिना इस जग में जीना बेकार है, अब ले लो यह कटार और चीर दो मेरे सीने को।'

पहिले तो बच्चू का मन नहीं माना और हाथ नहीं उठा। परन्तु उसी क्षण यह सोच कर कि कहीं मेरे पीछे किसी दूसरे की न हो जाये, कटार उठा कर प्रेमिका का सिर धड़ से अलग कर दिया।

सरकार से स्वीकृति लेकर ईसो और बच्चू को सांघड़ में फांसी दे दी गयी। उनकी लाशों को चौराहे पर दफना कर उस पर सड़क बनवा दी। अब आने-जाने वाले दोनों को उलांघते रहते हैं। कहते हैं कि यदि अंग्रेजों ने बच्चू को क्षमा कर किसी नौकरी में लगा दिया होता तो वह बहुत ही काम का साबित होता।

अनुवाद :
नन्दलाल परसरामाणी
(साभार-सुरभि)



प्रांतीय सिंधी महापंचायत (म.प्र.) भोपाल द्वारा आयोजित प्रांतीय वार्षिक अधिवेशन एवं सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे पूर्व केन्द्रीय कानून मंत्री श्री राम जेठमलानी, समाजसेवी श्री मोहनलाल लालवानी को रेडक्रास सोसायटी रायसेन जिले का चेयरमैन मनोनीत होने पर उनका शाल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए। साथ में हैं महापंचायत के महासचिव साबू रीझवानी एनसीपीएसएल दिल्ली के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीकांत भाटिया, म.प्र. अवास संघ के चेयरमैन सुशील कुमार वासवानी एवं डॉ. सी.पी. देवानी।

कहानी

कुंवारी

लेखक : एम.टी. भाटिया
अनुवाद : धर्मप्रकाश तेजा

वह बेहद खूबसूरत थी, ऐसा लगता था जैसे मालिक ने उसे फुर्सत में बैठकर बनाया है। उसकी खूबसूरत शक्ल, काले-काले लंबे बाल, लाल-लाल गालों और होठों के कारण वह अप्सरा जैसी लगती थी। मालूम नहीं उस पर कितने फिदा हुए होंगे। यह ईश्वर को पता।

वह किसी को भी घास डालने वाली नहीं थी। उसके लिए कितने ही रिश्ते आये होंगे, पर उसे अपनी खूबसूरती पर घमण्ड होने के कारण उसने सभी रिश्ते ठुकरा दिये, उन रिश्तों में कई बड़े अधिकारियों ने भी उसे पाना चाहा पर उसने सभी को ना में जवाब दिया। उसका नाम तो दूसरा कुछ था। पर हम उसे कुंवारी कहकर पुकारते थे। वह मेरे साथ सर्विस करती थी नौकरी करते यदि गलती से उसके हाथ से हाथ किसीका हाथ छू गया तो फिर उस बेचारे के लिए शामत आई। नौकरी में रहते कई लोगों को उसने सरकारी चिट्ठियां पत्र दिलवाए। इस कारण नौकरी में हरकत से हर व्यक्ति दस कोस दूर भागता था। उसे कहते थे नागिन वो भी कुंवारी। उसके इसी रवैये के कारण ऑफिस में उसे कम चाहते थे। हमारे ऑफिस में मेरे साथ फतू नामक एक लड़का नौकरी करता था। हम उसे कहते थे फतू फकीर वह कोई सच में पैसे या चाल चलन से फकीर नहीं था पर उसकी शक्ल का रंग काला था पर चमकदार लगता था। फतू भी कुंवारी पर फिदा हो गया। फतू धुन का पक्का था, जो कुछ कहता था, वह कर दिखाता था। मैं भी पता करता रहता था कि फतू की ओर कुंवारी का झुकाव था। मैं दिल में सोचता था कि कुंवारी कैसी न बेवकूफ है जो हीरे छोड़कर पत्थर चुन रही है। पर मेरा यह सोचना शायद गलत था। इस बात में शक नहीं है कि कुंवारी ऑफिस में काम करते हुए तिरछी आँखों से फतू की ओर देखती थी और फतू भी कुंवारी की ओर देखता रहता था। किसी समय ऑफिस में क्लर्क आपस में कहते रहते थे कि विधाता का रंग भी अजीब है। कुंवारी अच्छे और खूबसूरत लड़कों को छोड़कर फतू को अपना करना चाह रही है। फतू अपने ऑफिस की परीक्षाएँ देता जा रहा था वक्त आया जो फतू एक क्लास वन आफीसर बन गया।

कुंवारी के यह शब्द सुनने के बाद फतू अपना तबादला करवाकर किसी दूसरे शहर चला गया। जाते वक्त फतू ने मुझसे कहा मैं फतू तब, जब तक इस कुंवारी को मैंने अपना न किया है। भरे दिल से फतू मुझसे मिलकर चला गया।

एक बार फतू ने कुंवारी से कहा कुंवारी मैं अब क्लास वन आफीसर बन गया हूँ। आओ तो आपस में शादी कर लें। तुम कब तक कुंवारी रहोगी? फतू के यह शब्द सुनकर कुंवारी होंश खो बैठी और उसने फतू को फटकारते हुए कहा तुम्हें इतनी हिम्मत कहाँ से आ गई जो तुमने मुझसे शादी के लिए कहा। तुम्हे शर्म आनी चाहिये। क्या मैं तुम जैसे काले सांड से शादी करूंगी? खबरदार, फिर कभी ऐसी बात जुबान पर लाए हो।

कुंवारी के यह शब्द सुनने के बाद फतू अपना तबादला करवाकर किसी दूसरे शहर चला गया। जाते वक्त फतू ने मुझसे कहा मैं फतू तब, जब तक इस कुंवारी को मैंने अपना न किया है। भरे दिल से फतू मुझसे मिलकर चला गया।

कभी-कभी मेरे पास उसका पत्र आता था जिसमें हमेशा लिखता था कि कुंवारी को समझाओ, मैं सोचता था कि आग में हाथ कौन डाले। फतू के जाने के बाद वह उदास दिखने में आती थी। मैंने एक दिन दिल बांधकर

कुंवारी से पूछा तुम शादी से इन्कार क्यों करती हो? हर एक में से मीन मेख क्यों निकालती हो? पर उसने जवाब नहीं दिया। एक दिन मेरे पास और कुंवारी के पास शादी के दो कार्ड आए जिसमें लिखा था अमुक दिनों को फतू की शादी हैं, शादी में आकर शरीक हो। मैंने देखा कि कार्ड पढ़ने के बाद कुंवारी के चेहरे पर गर्मी छा गई और उसकी आँखों से दो आँसू टपक पड़े। मैंने फिर कुंवारी से पूछा तुम शादी क्यों नहीं करती? मैं शादी इसलिये नहीं करना चाहती जो मेरे पिता एक आफीसर है। वह शक्की स्वभाव के है। मेरी माँ भी मुझ जैसी खूबसूरत है। मेरे माँ और बाप के बीच में हमेशा झगड़ा होता रहता है। मेरी माँ एक पवित्र स्त्री हे, पर उसकी खूबसूरती के कारण मेरा पिता के दिल में हमेशा शक बना रहता है।

उन्होंने मेरी माँ के पीछे जासूस भी छोड़े है। हम आपस में दो भाई और दो बहिने है। मैं सबसे बड़ी हूँ। बहिन और दोनों भाईयों ने शादी कर ली है पर मैं विवाह नहीं करना चाहती। मुझे मालूम नहीं है क्यों? फतू के लिये प्यार जागा पर वह भी खत्म हो गया। मैंने उसे कहा, फतू ने तो तुमसे शादी करने का इरादा जताया था, पर तुमने उससे उल्टा सीधा बोला और उसकी बेइज्जती की। कुंवारी ने कहा मैं समझ नहीं पा रही हूँ कि मैंने उसे उल्टा सीधा क्यों कहा? मैंने उससे कहा, जो होना था हो गया। अब रोने से क्या फायदा, अब क्या होगा? मेरे यह शब्द सुनकर कुंवारी जोर-जोर से रोने लगी। मैंने उसे पुचकारते हुए कहा, कुंवारी तुम फ्रिक न करो। ईश्वर सब कुछ ठीक करेगा। आगे देखो क्या होता है? थोड़े समय बाद मैं भी आफीसर बनकर कहीं और चला गया। सभी एक दूसरे से बिछुड़ गये थे, पता नहीं चलता था कि कुंवारी कहां है। मैं भी अपने बच्चों और घर गृहस्थी के साथ मशगूल रहता था। घर गृहस्थी के कारण किसी के लिए सोचने की फुर्सत नहीं मिलती थी।

समयानुसार मैं भी नौकरी से रिटायर हुआ। रिटायर होने के बाद बच्चों के साथ मसूरी घूमने गया। मैं बच्चों सहित एक होटल में रूका हुआ था। एक दिन मैंने एक जोड़ा देखा जो सड़क पर घूम रहा था। उसकी शक्ल कुंवारी और फतू जैसी लग रही थी। मुझे ऐतबार नहीं हो रहा था कि दोनों जने फतू और कुंवारी हो सकते हैं। मैं जल्दी-जल्दी उस जोड़े के सामने जा खड़ा हुआ। जोड़े को देखकर मेरा अनुमान सही निकला। मेरे मुंह से चीख निकल गई और में ताज्जुब में पड़ गया, मैंने दोनों से पूछा यह मैं क्या देख रहा हूँ? सही है या ख्वाब। फतू ने कहा, तुम्हें याद है या नहीं मैंने तुमसे कहा था, कुंवारी को एक दिन मैं अपना करूंगा, सो मैंने अपना प्रण पूरा किया। यहाँ हम हनीमून करने आये हुए है। मैंने ताज्जुब से पड़कर कहा हनीमून वो भी इस उम्र में। फतू ने कहा हाँ, मैंने क़हा, यह फिर कैसे? ऐसा हनीमून तो अंग्रेजों में होता है, मुझे यह बात समझ में नहीं आ रही है। फतू ने कहा, मैंने शादी की। मुझे बेटी और बेटा हुआ। दोनों का विवाह करवा दिया। दोनों परदेस में है। पत्नि मर गई मैं अकेला हो गया। मुझे मालूम पड़ा कि कुंवारी के साथ हादसा हो गया है। उसके माँ-बाप मर चुके है उसके भाई और बहिन पहले ही शादी कर चुके थे और खुद चारपाई पर पड़ी है। मैं उससे मिलने गया। मैंने देखा कि कुंवारी की हालत खराब हैं। मैं उसे अपने साथ लेकर अपने शहर आया। उसकी सेवा की। कुंवारी ठीक हो गई। जैसा कि मैं भी अकेला था और कुंवारी भी अकेली थी। इसलिये हम दोनों ने साथ रहने की कसम उठाई। मुझे इस उम्र में जीवन साथी की जरूरत नहीं है पर दोस्त की जरूरत है। ऐसा कह कर फतू जोर से हंसने लगा उसके साथ कुंवारी भी हंसने लगी। मैं फिर विधाता के लेख पर जोर-जोर से हंसने लगा।

मैं भी अकेला था और कुंवारी भी अकेली थी। इसलिये हम दोनों ने साथ रहने की कसम उठाई। मुझे इस उम्र में जीवन साथी की जरूरत नहीं है पर दोस्त की जरूरत है। ऐसा कह कर फतू जोर से हंसने लगा उसके साथ कुंवारी भी हंसने लगी। मैं फिर विधाता के लेख पर जोर-जोर से हंसने लगा।

अजन्मी बेटी का अपनी माँ के नाम खत

मेरी प्यारी माँ, मैं खुश हूँ और भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि आप भी सुखी रहें। यह पत्र मैं इसलिए लिख रही हूँ क्योंकि मैंने एक सनसनीखेज खबर सुनी थी, जिसे सुनकर मैं सिर से पाँव तक काँप उठीं।

स्नेहदात्री माँ आपको मेरे कन्या होने का पता चल गया है और आप मुझ मासूम को जन्म लेने से रोकने जा रही है-यह सुनकर मुझे तो यकीन नहीं हुआ। भला, मेरी प्यारी-प्यारी कोमल हदया माँ ऐसा कैसे कर सकती है ? कोख में पल रही अपनी लाड़ली के सुकुमार शरीर पर नश्तरों की चुभन एक माँ कैसे सह सकती है ?

पुण्यशीला माँ बस, आप एक बार कह दीजिये कि यह जो कुछ मैंने सुना है वह सब झूठ है। दरअसल यह सब सुनकर मैं दहल-सी गयी हूँ। मेरे तो हाथ भी इतने सुकोमल हैं कि इनसे डॉक्टर की क्लीनिक की तरफ जाते वक्त आपकी चुन्नी भी जोर से नहीं खींच सकती ताकि आपको रोक लूँ। मेरी बाँहे भी इतनी पतली और कमजोर हैं कि इन्हें आपके गले में डालकर लिपट भी नहीं सकती।

मधुमय माँ! मुझे मारने के लिए आप जो दवा लेना चाहती हैं वह मेरे नन्हें से शरीर को बहुत कष्ट देगी। स्नेहमयी माँ! उससे मुझे बहुत दर्द होगा। आप तो देख भी नहीं पायेंगी कि वह दवाई आपके पेट के अंदर मुझे कितनी बेरहमी से मार डालेगी। डॉक्टर की हथौड़ी कितनी क्रूरता से मेरी कोमल खोपड़ी के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगी उसकी कैंची मेरे नाजुक-नाजुक हाथ-पैरों को काट डालेगी। अगर आप यह दृश्य देखतीं तो ऐसा करने का कभी सोचती भी नहीं।

सुखदात्री माँ मुझे बचाओ... कृपा करो, दयामयी माँ मुझे बचाओ... वह दवा मुझे आपके शरीर से इस तरह फिसला देगी, जैसे गीले हाथों से साबुन की टिकिया फिसलती है। भगवान के लिए, माँ ऐसा कभी मत करना। मैं यह पत्र इसलिए लिख रही हूँ क्योंकि अभी तो आपके आंगन में मुझे नन्हें-नन्हें पैरों से छम-छम नाचना हैं, आपकी ममता भरी गोद में खेलना हैं।



चिंता नहीं कर, माँ मैं आपका खर्चा नहीं बढ़ाऊंगी। मत लेकर देना मुझे पायल... मैं दीदी की छोटी पड़ चुकी पायल पहन लूंगी। भैया के छोटे पड़ चुके कपड़ों से तन ढॉक लूंगी, माँ बस, एक बार... एक बार मुझे इस कोख से निकलकर चाँद-तारों से भरे आपके आसमान तले जीने का मौका तो दीजिए। मुझे भगवान की मंगलमय सृष्टि का विलास तो देखने दीजिए।

मैं आपकी बेटी हूँ, आपकी लाड़ली शहजादी मुझे अपने घर में आने दो, माँ बेटा होता तो आप पाल लेती, फिर मुझमे क्या बुराई है ? क्या आप दहेज के डर से मुझे नहीं चाहतीं ? ना... ना... आप दहेज से मत डरना। यह सब भुलावा है। कुछ कोशिश आप करना, कुछ मैं करूंगी। बड़ी होकर मैं अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊंगी, फिर दहेज क्या चीज है ? इसका भय तो फुर्र हो जायेगा। देखना... मेरे हाथों पर भी मेहंदी रचेगी, शगुन भरी डोली निकलेगी और आपके आंगन से चिड़िया बनकर मैं उड़ जाऊंगी। आज, अभी से मुझे मत उड़ाइये। मैं आपका प्यार चाहती हूँ।

एक बेटे के लिए कई मासूम बेटियों की बलि देना कहाँ तक उचित है ? आखिर यह महापाप भी तो आप और आपके चहेते बेटे के सिर पर ही चढ़ेगा। ना... ना... ऐसा कभी मत होने देना, माँ... मेरी प्यारी माँ बस, अब कृपा करके मुझे जन्म दे दीजिये। मुझे मत मारिये, अपनी बगल की डाल पर फूल बनकर खिल लेने दीजिये...।

(आज भ्रण हत्या जैसे जघन्य अपराध हो रहे हैं जो कि अनुचित हैं बेटियाँ भी बेटों से कम नहीं है।)

कहानी

पारस

लेखिका : सरला मंगलाणी (जयपुर)   अनुवाद : धर्म प्रकाश तेजा

चन्द्र बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि का था। अलबत्ता जब उसका चार वर्षों की उम्र में एल.के.जी. में दाखिला कराया गया तो पहले दिन उसके पिता ने उसे समझाया पर वह माँ की गोद में छुपकर बैठा। माँ से उसका रोना नहीं देखा गया और उसने अपने पति से जाकर कहा कि आज उसे मत भेजें पर पिता ने सख्त आवाज में कहा कि कल भी तो यही हाल होगा। चन्द्र को माँ की गोदी में से खींचकर किशनचंद ने बेटे को एक चांटा मारा। इसके बाद चन्द्र घबरा गया और चुपचाप जाकर रिक्शा में बैठा। स्कूल में उसे नये दोस्त मिले और पढ़ाई के साथ खेलकूद का माहौल भी मिला।

दूसरे दिन से लेकर चन्द्र खुशी से स्कूल के समय से पूर्व माँ की मदद से तैयार होकर रिक्शा का इंतजार करने लगा। यह हकीकत थी कि चन्द्र शुरू से समझदार बालक था और कुछ स्कूल के माहौल के कारण और कुछ घर के अनुशासन के कारण वह एक समझदार और प्रतिभाशाली बालक के रूप में आगे बढ़ता रहा। घर में सिर्फ माता-पिता ही थे।

बचपन से ही उसके पढ़ने का तरीका यह था कि स्कूल से वापस आने पर खाना खाकर एक-दो घंटे की नींद लेता था फिर उठकर होमवर्क करके थोड़ी पढ़ाई करके बाद में खेल-कूद के लिए पड़ोस के बच्चों के साथ लग जाता था। स्कूल में, क्लास में हमेशा प्रथम अथवा दूसरे नंबर पर आता था।

चन्द्र के पिता किशनचंद खुद ग्रेज्युएट थे और उसकी चाहत थी कि चन्द्र इंजीनियर या डॉक्टर बनें। जब चन्द्र मैट्रिक में सभी विषयों में डिस्टिंक्शन लेकर आया तो पिता ने पूछ की बेटा तुम इंजीनियरिंग तक पढ़ोगे या डाक्टरी। चन्द्र ने कहा कि वह इंजीनियर बनेगा। इस कारण उसने साईंस के साथ गणित विषय लिया। उनके घर में रुकी नाम की एक नौकरानी थी पर घर के समस्त सदस्य उससे सदस्य के समान व्यवहार करते थे। कभी-कभी वह अपनी बेटी नानकी को भी लेकर आती थी। रुकी कहती थी कि वह खुद भी अच्छे घर की थी, पर वक्त ने यह हाल बना दिया है। नानकी बहुत ही खूबसूरत तथा सुकन्या थी। चन्द्र जो खुद पढ़ता था वह अपनी माँ को कहता था कि दादी रुकी को कहो कि वह नानकी को भी लड़कियों के स्कूल में भेजे।

चन्द्र के माँ पर जोर डालने पर नानकी भी स्कूल जाने लगी। उसकी फीस और किताबों का खर्च चन्द्र की माँ भरती थी।

वक्त की रफ्तार बड़ी अजीब होती है, खुशी के माहौल में लगता है कि वक्त पर लगाकर उड़ता जाता है पर मुसीबत के मौके पर वक्त बहुत ही आहिस्ता चलता है।

चन्द्र जो खुद पढ़ता था वह अपनी माँ को कहता था कि दादी रुकी को कहो कि वह नानकी को भी लड़कियों के स्कूल में भेजे। चन्द्र के माँ पर जोर डालने पर नानकी भी स्कूल जाने लगी। उसकी फीस और किताबों का खर्च चन्द्र की माँ भरती थी। वक्त की रफ्तार बड़ी अजीब होती है, खुशी के माहौल में लगता है कि वक्त पर लगाकर उड़ता जाता है पर मुसीबत के मौके पर वक्त बहुत ही आहिस्ता चलता है।

चन्द्र ने बारहवीं पास करके इंजीनियरिंग कालेज का फार्म भरा। अचनाक एक हादसे में किशनचंद का देहांत हो गया। घर की माली हालत अच्छी होने के बावजूद उनके घर में गम का आलम छा गया। माँ बेटे दोनों सख्त परेशान थे। पिता के सहारे के सिवाय चन्द्र का तो यह हाला था कि वह दुकान के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। पर इन हालातों में चन्द्र पढ़ाई छोड़कर दुकान पर जा बैठा। आहिस्ता-आहिस्ता दुकान अपने पूर्व हालात से अधिक चलने

लगी।

माई रुकमणी घर का कामकाज बराबर करती थी। अब नानकी की पढ़ाई के पैसे चन्द्र दुकान से अपने नौकर के हाथों भेजता था। उसकी माँ रुकमणी को तनख्वाह के अतिरिक्त भी जरूरत के अनुसार कपड़े लाने में पैसों की मदद करती थी। कभी-कभी रुकमणी अपनी बेटी को लेकर दुकान पर जाती थी। चन्द्र का एहसान मानकर उसे दुआएं देती थी। नानकी भी जैसे बड़ी होती गई वैसे ही अधिक खूबसूरत होती गई। गरीब की बेटी पर कुछ लोगों की उल्टी नजरें होती हैं पर चन्द्र की सरपरस्ती के कारण उनकी रक्षा हो रही थी।

इधर चन्द्र के अच्छे चाल-चलन तथा धंधे की अच्छी हालत देखकर अच्छे घरों से शादी के लिए रिश्ते आने लगे पर चन्दर अभी तैयार नहीं हो रहा था। जिस दिन नानकी के मैट्रिक का नतीजा निकला तो रिजल्ट में पहला नंवर देखकर रुकमणी ने मिठाई लेकर चन्दर की माँ के आगे रखी तथा उनके पाँव छूकर कहा कि अम्मां यह सब आपकी मेहरबानी का फल है। चन्द्र की माँ ने कहा कि सिर्फ पैसा खर्च करने से फल नहीं मिलता है। यह सब नानकी की मेहनत का ही नतीजा है। नानकी सुलक्ष्णी है। इस कारण आपको यह खुशी मिली है। उसने चन्द्र को भी बुलाकर मिठाई खिलाई। उस दिन रविवार था इस कारण चन्द्र घर पर बैठा था। चन्द्र के घर में खुशियों का माहौल था जैसे अपने घर का कोई सदस्य अच्छे नम्बरों से पास हुआ हो। नानकी का चेहरा भी खुशी से महक रहा था। अगली बार जब फिर दुकान से छुट्टी का दिन आया और चन्द्र घर पर बैठा था। तब उसने अपनी माँ से कहा माँ तुम मुझे रोज-रोज कहती हो कि दुल्हन ले आओ तो अब मैं तैयार हूँ।

माँ ने बेहद प्रसन्न होकर कहा कि दो तीन घरों से काफी अच्छे रिश्ते आए हैं। मैं लड़कियां देख आऊं फिर बताऊंगी। चन्द्र ने मुस्कारकर कहा कि एक लड़की मेरी नज़र में भी है, वह आपको जरूर पसंद आएगी।

माँ ने कहा तुमने तो मेरा काम आसान कर दिया। तुम्हारी पसंद की मेरी बहू बनेगी तुम मुझे लड़की का नाम बताओ तो मैं उनके घर वालों से बात बढ़ाऊं। चन्द्र ने कहा कि माँ अपनी नानकी ही तो वह लड़की है जिससे मैं शादी करना चाहता हूँ।

नानकी का नाम सुनकर उसकी मां सकते में आ गई और धीमी आवाज में कहा बेटा यह कैसे होगा। इस पर चन्द्र ने कहा क्यों माँ वह खूबसूरत, अच्छी सलीकेदार नहीं है क्या? जब वह हमारे घर आती है तो तुम कितना खुश होती हो। कितने प्यार से अपने पास बिठाती हो तुम्हें उसमें क्या कमी नजर आ रही है?

माँ ने कहा इसमें कोई शक नहीं है कि नानकी अच्छी लड़की है। जिस घर में जाएगी उसे स्वर्ग बना देगी, पर बेटा थोड़ा दुनियादारी का भी ख्याल करना है। अड़ोस-पड़ोस, रिश्ते-नातेदार क्या कहेंगे कि क्या चन्द्र के लिए हैसियत वाले घर के रिश्ते नहीं मिल रहे थे जो माई रुकी की बेटी के साथ जाकर रिश्ता किया है। चन्द्र का मन खराब हो गया और कहा कि माँ लोग माली हालत के जोर पर ही अच्छा कहेंगे। उसके असली गुणों तथा सीरत (कैरेक्टर) को बिल्कुल नकार देते हैं। माँ ने कहा कि अगर अच्छे गुणों वाली, अच्छी माली हालात वाले घर की सुलक्ष्णी लड़की मिले तो अच्छा ही है। तुम में क्या कमी है? चन्द्र ने कहा किसी गरीब घर की अच्छी लड़की उठाने से उसकी आत्मा कितनी न खुश होगी साथ ही घर की रौनक भी दुगनी होगी। बाकी लोग दो दिन कहकर चुप हो जाएंगे। हम कोई गलत काम तो कर नहीं रहे हैं।

खुशी वाले इस घर में एक बार फिर उदासी के बादल छा गए। बार-बार समझाने के बाद भी चन्द्र ने कभी भी दूसरे घर की लड़की देखने की हाँ

नानकी का नाम सुनकर उसकी मां सकते में आ गई और धीमी आवाज में कहा बेटा यह कैसे होगा। इस पर चन्द्र ने कहा क्यों माँ वह खूबसूरत, अच्छी सलीकेदार नहीं है क्या? जब वह हमारे घर आती है तो तुम कितना खुश होती हो। कितने प्यार से अपने पास बिठाती हो तुम्हें उसमें क्या कमी नजर आ रही है? माँ ने कहा इसमें कोई शक नहीं है कि नानकी अच्छी लड़की है। जिस घर में जाएगी उसे स्वर्ग बना देगी, पर बेटा थोड़ा दुनियादारी का भी ख्याल करना है।

नहीं की। उसकी माँ अत्यधिक कठिन समय बिताने लगी। उसका एक-एक दिन मुश्किल से गुजरने लगा। रुकमणी घर में काम-काज के लिए आती थी पर चन्द्र की माँ को उदास देखकर हैरान होती थी। वैसे दुनियादारी की बात रुकमणी के साथ करती थी पर अब चन्द्र की माँ चुप्पी ओढ़े हुए थी।

कुछ दिनों के बाद चन्द्र की माँ ने रुकमणी से पूछा कि चन्द्र तुम्हारे घर आता जाता होगा। रुकमणी ने बताया कि मैं तो उसे दुकान पर कहकर आती हूँ कि घर आओ पर कहता है कि दुकानदार लोगों को समय कहां मिलता है तनख्वाह तथा दूसरी मदद के लिए पैसे नौकर मोहन के हाथों भेज देता है। चन्द्र की माँ ने मायूस होकर बताया कि चन्द्र-नानकी के साथ शादी करना चाहता है। रुकमणी यह सुनकर हैरान हो गई और कहा अम्मा ऐसा न कहो। आपके हमारे ऊपर इतने एहसान हैं जो उतार नहीं सकेंगे। पर हमारी हैसियत और दुनियादारी देखकर ऐसी हिम्मत नहीं होती है जो ऐसा काम करें। लोग क्या कहेंगे। वह चन्द्र की माँ के पैरों में गिरकर कहने लगी हम तो आपके काबिल भी नहीं है। फिर यह कैसे करेंगे।

चन्द्र की माँ अपने बेटे का दिल रखने के लिए यह नापसंद काम करने के लिए तैयार हुई थी पर रुकमणी का जवाब सुनकर उसे कुछ राहत मिली थी और वापिस आकर चन्द्र से कहा कि रुकमणी को यह रिश्ता मंजूर नहीं है। चन्द्र ने माँ से कहा कि यदि तुम दिल से मेरी बात मानों तो मैं रुकमणी को मनाऊंगा। चन्द्र की माँ चुप हो गई। दूसरे दिन बेटे का गमगीन चेहरा देखकर माँ ने कहा कि रुकमणी से जाकर बात कर आओ। उधर रुकमणी ने बेटी से पूछा तो वह घबरा गई और जवाब नहीं दे पाई, रुकमणी भी आखिर शांत हो गई।

चन्द्र ने नानकी से भी अपने बारे में बात की पर जवाब नहीं मिलने पर एक दिन रुकमणी के घर गया। रुकमणी उसे देखकर खुश हुई और पूछा कि इस घर में कैसे आपने अपने पैर घुमाए हैं। चन्द्र ने कहा कि चार माह पूर्व भी मैं यहाँ आया था आप नहीं थी। मैं नानकी के रिश्ते की बात करने आया हूँ।

बढ़ती हुई कन्या को ज्यादा वक्त अविवाहित नहीं रखा जाता। रुकमणी के ऊपर फिर मुसीबत का पहाड़ आ पड़ा। चन्द्र के घर आने से वह बात समझ गई थी। अब क्या जवाब दे इसलिए वह एकदम चुप्पी साध गई चन्द्र ने फिर कहा कि आप चुप हो गई हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आप मेरा कहना नहीं टालेंगी। रुकमणी समझ नहीं पा रही थी कि क्या कहूँ, क्या न कहूँ... खामोशी को तोड़ते हुए चन्द्र ने कहा मेरे दुकान का नौकर मोहन बहुत ही अच्छा है मैं समझता हूँ कि नानकी और वह खुश रहेंगे। आप दो तीन दिनों में मुझे या मेरी माँ को संदेश भेजें। कुछ वक्त बाद मोहन और नानकी की शादी सादगी से की गई, इस मौके पर चन्द्र ने भी काफी भाग-दौड़ की और मोहन को मदद की। चन्द्र की माँ भी काफी खुश थी कि नानकी को अच्छा और समझदार पति मिला है।

विवाह और विदाई समारोह चन्दर के घर में हुआ। विदाई के बाद रुकमणी ने चन्दर और उसकी माँ के पैरों पर गिरकर उनका बड़ा एहसान माना और कहा जैसे दादा सेठ किशनचंद्र थे वैसे ही आप हैं। इंसान के रूप में देवता हैं जो सिर्फ औरों को ही खुशी दे सकते हैं। आपके एहसान हम नहीं उतार पाएंगे। पर ईश्वर सदैव आपको खुश रखेंगे।

उस समय चन्द्र के चेहरे पर दर्द भरी मुस्कान और आँखों में खुशी के आँसू थे। कोई भी समझ नहीं पा रहा था कि उसके मन की स्थिति क्या है। दूल्हा और दुलहन चन्द्र की माँ और चन्द्र के पाँव छू रहे थे। अब चन्द्र की माँ उस दिन का इंतजार करने लगी जब उसका लाड़ला शादी के लिए हाँ करके अपना घर बसाएगा और उसके घर में पोते की किलकारी सुनने में आएगी।

उस समय चन्द्र के चेहरे पर दर्द भरी मुस्कान और आँखों में खुशी के आँसू थी। कोई भी समझ नहीं पा रहा था कि उसके मन की स्थिति क्या है। दूल्हा और दूलहन चन्द्र की माँ और चन्द्र के पाँव छू रहे थे। अब चन्द्र की माँ उस दिन का इंतजार करने लगी जब उसका लाड़ला शादी के लिए हाँ करके अपना घर बसाएगा और उसके घर में पोते की किलकारी सुनने में आएगी।

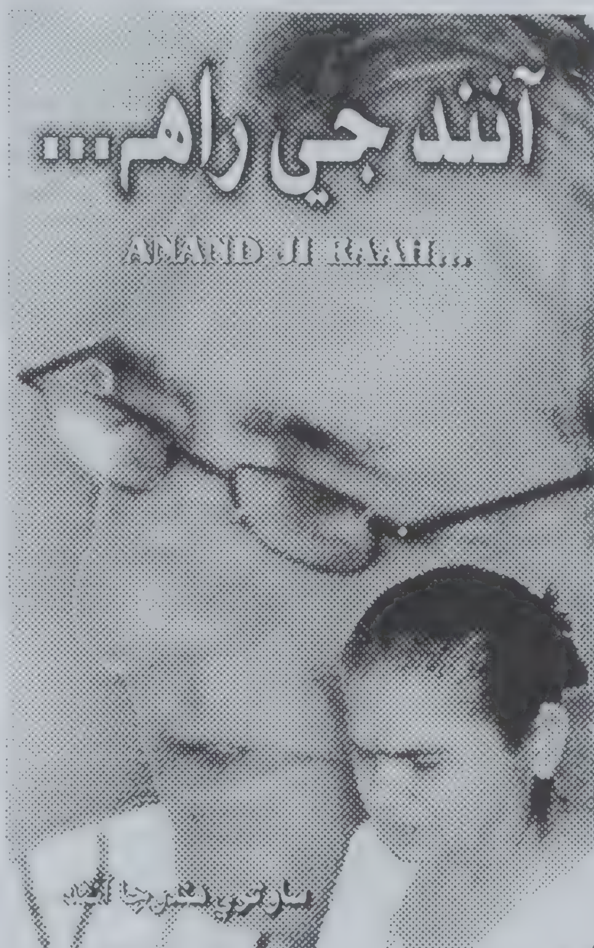
समालोचना

आनन्द जी राह

लेखिका : सावित्री हिन्दूजा आनन्द
सदानन्द पब्लिकेशन : 404, नालन्द पैलेस, उल्हास नगर-421001
सुफ़्हा :- 125 कीमत :- डेढु सउ रुपिया
समालोचकु : खीमन यू. मूलाणी

सावित्री हिन्दूजा आनन्द जो लिखियल 'आनंद जी राह' किताबु मुंहिंज हथनि में आहे। हीउ संदसि पहिरियों किताबु आहे किताब खे सतनि भाङनि में विरिहायो व्यो आहे। मुहाग॒ु कहाणियूं ऐं वारिताऊं लेख ऐं मूज़िमून पहाका चविणियूं ऐं उपिटर, कविताऊं, बाल संसार वारिताऊं, पंहिंजनि पाठकनि जा राया वीचार। किताब जो मुहाग॒ु 'पेशि लफ़्ज़' जे सिरे हेठि सिंधी ब॒ोलीअ जे बर्खु साहित्यकार डॉ. ज॒ेठे लालवाणीअ लिख्यो आहे! जंहिं विश्वासु ज़ाहिरु कयो आहे त हीउ किताबु जरूरु अदिबी उत्र मिटाइण में मदद रूपु थींदो। किताबु सिंधी लिपी ऐं देवनागरी ब॒िन्ही लिपियुनि में अलगि॒ अलगि॒ छपायो व्यो आहे।

किताब जे बारे में पंहिंजा ब॒ अखर लिखंदे लेखिका पंहिंजे ज़िंदगीअ जूं यादिगीरियूं दर्जु कयूं आहिनि। हिन किताब बाबत लिखे थी त हुन 2000 खां 2009 ताईं लिखियल डाइरियूं पढ़ियूं ऐं उन्हनि मां के अधूरा, अणपूरा वीचार ख़्याल, लेख, मज़िमून, कहाणियूं, कविताऊं सोधे संवारे वरी लिख्या जीअं उहे अमिदा वीचार लेख इएं डाइरीअ जे पननि में बन्दि थी, व॒ुसाटिजी मरी न वञनि। खेसि इहो सभु करण लाइ शाह अब्दुल लतीफ़ भिटाईअ जे हिन सिट



उत्साहु डि॒नो-

'दिल्बर! हिन दुनिया में वञी रहंदो वासु!'

कहाणियुनि ऐं वारिताउनि वारे भाङे में कुल पंज कहाणियूं आहिनि सभई कहाणियूं इएं थो लगे॒ ज॒णु सचूं आहिनि। हुन जेकी डि॒ठो आहे, उन खे कहाणीअ जो रूपु डे॒ई कलम बंदि कयो आहे। लेख ऐं मज़िमून वारे भाङे में बि पंज लेख ऐं मज़िमून आहिनि। इन्हनि में बि ज़िंदगीअ खे खुशिहालु ऐं आनन्द मइ बणाइण लाइ सुठा वीचार दर्जु कयल आहिनि। पहाका ऐं चविणियूं वारे भाङे में बि हरि पहाके ऐं चविणीअ जे पुठियां हिकु नंढो मज़िमूनु डे॒ई उन पहाके ऐं चविणीअ जी सार्थकिता साबितु कई वेई आहे। इन भाङे जा मज़िमून बि आनन्दु डीं॒दड़ आहिनि। कविताउनि वारे भाङे में भली खणी शहरी/अदिबी सतह ते कीअं बि हुजे पर उन में डि॒नल नुक्ता ज़िंदगीअ खे बहितर बणाइण लाइ सुठि यूं टिपिस आहिनि। अजु॒ जे वक्त जी अकासी कंदड़ हीउ कविताऊं पाठकनि खे ज़रूरु कुझुन कुझु आनन्दु अवसिं डीं॒दियूं आहिड़ी उम्मेद ई न पर पूरी पक अथमि। ब॒ार आईंदह जा अबा लेखिया वेंदा आहिनि। शायद हिन किताब में इन करे उन्हनि खे बि कोन विसारियो व्यो आहे। किताब जे 'ब॒ाल संसार-वारताऊं' भाङे में ब॒ारनि लाइ सिखियादायकु आखाणियूं डि॒नल आहिनि। वडी॒ गा॒ल्हि त उन्हनि कहाणियुनि सां वास्तो रखंदड़ चित्र बि हरि कहाणीअ पुठियां डि॒नल आहिनि। जेके ब॒ारनि खें छिकींदा। इहे कहाणियूं ब॒ारनि खे बहादुरु बणाइण में कारिगरु थींदियूं। इहा पक अथमि ऐं बसि।

सिन्धू सहकारी साख संस्था मर्या. की 13वीं वार्षिक साधारण सभा की बैठक सम्पन्न

इन्दौर। समाज की प्रथम सहकारी साख संस्था, सिन्धू सहकारी साख संस्था है। जिसकी प्रगति सदस्यों के अटूट विश्वास का प्रतिफल है।



उक्त उद्गार सिन्धू सहकारी साख संस्था मर्या. इन्दौर द्वारा आयोजित 13वीं वार्षिक साधारण सभा, शैलसिटी, खण्डवा रोड पर सभा को संबोधित करते हुए संस्थाध्यक्ष गुलाब ठाकुर द्वारा व्यक्त किए गए। सभा के समक्ष उन्होंने वर्ष 2008-09 के पारित वित्तीय पत्रक, लाभ हानि खाता, वर्ष 2010-11 के लिए अनुमानित बजट, वर्ष 2008-09 का सदस्यों की अंश पूँजी पर 25 प्रतिशत लाभांश देना स्वीकृति हेतु प्रस्तुत किया। साथ ही उन्होंने सभा को यह भी बताया कि पिछले वर्ष भी संस्था द्वारा सदस्यों को उनकी अंश पूँजी की राशि पर 25 प्रतिशत लाभांश दिया गया था। उन्होंने सदस्यों को यह भी जानकारी दी कि संस्था के सदस्यों को 1 अप्रैल 2010 से चोईथराम की जाँचों में रियायत दी जाएगी एवं एकल खिड़की प्रणाली से सभी सुविधाएँ प्राप्त होगी तथा शीघ्र ही चोईथराम अस्पताल के विशेषज्ञों द्वारा संस्था के सदस्यों के लिए विशाल स्वास्थ्य परीक्षण शिविर लगाया जाएगा।

सभा में उपस्थित तीरथदास भठेजा, गोपाल दरियानी एवं अन्य द्वारा संस्थाहित में आए सुझाव प्रस्तुत किए गए।

इसके पूर्व सभा संचालनकर्ता प्रकाश लालवानी द्वारा सभा में उपस्थित संस्था के वरिष्ठ सदस्य परमानंद वलेचा को दीप प्रज्वलित करने हेतु आमंत्रित किया गया, उनके द्वारा एवं संचालक मंडल द्वारा इष्टदेव भगवान झूलेलाल की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर सभा का शुभारंभ किया गया।

सभा समाप्ति पश्चात सदस्यों के मनोरंजन हेतु संचालक जवाहर मंगवानी, श्रीमती सरोज भाटिया, कमल मटाई, उपाध्यक्ष प्रकाश लालवानी, सदस्य श्रीमती सरिता मंगवानी द्वारा कई मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। अंत में संचालक कमल मटाई ने सभा में उपस्थित सदस्यों का आभार माना।

सिंधी ग़ज़ल

आहिंया मां खुश्बु मुखे घर न खपे
जिन्दगी जेल जे हुन भर न खपे
पहिन्जे पहिन्जे घर खे कयो रौशन
रौशनी घर जे ब़ाहिर न खपे
परे रखो शोहरत जी चमक खां
बाहि जो ही समन्दर न खपे
थी सघेव त ड़ियो मुहिंजो हकु मुखे
ब़ियन जो कोई मुक़्दर न खपे
परावन रस्तन ते उहो पथ्थर न रखे
जेहंखे पहन्जे रस्तन ते पथ्थर न खपे
मूं साण दोस्तीअ जी पहरीं शर्त अथव
दोस्तन जे आस्तीन मे खन्जर न खपे।

- शत्रुघ्न जेसवानी
बिलासपुर

(स्वतंत्रता संग्राम और सिन्ध का योगदान)

- प्रेम मोतीराम तनवाणी

गतांक से आगे :

गाँधी से पहिले हरिकिशन दास पारदासाणी ने किया था खादी-प्रचार

गाँधी जी से बहुत पहिले ही 1917 में नवाबशाह-साहिती जिले के भिरियन गाँव में खादी-प्रेमी श्री हरिकिशनदास पारदासाणी ने सिन्ध में खादी-प्रचार का श्री गणेश कर दिया था। सिन्ध के व्यक्तिगत पाठशालाओं में चर्खे पर सूत कातने का नियम था। कई पाठशालाओं में खादी-उद्योग भी लगाए गए थे। छात्र, अपने हाथ से खादी में वस्त्र बुनते थे। सिन्ध के कई शहरों व गाँवों में खादी-केन्द्र स्थापित किए गए थे। इस सम्बंध में श्री मेठाराम हरूमल खिलनाणी अपनी पुस्तक, आजादीअ लाइ आंदोलन में लिखते हैं, "हरकिशनदास, भिरियन गाँव में निवासरत थे और वे टन्डो आदम गाँव में अंग्रेजी स्कूल के प्रधानाचार्य थे। उन्होंने इस सरकारी नौकरी का त्याग करने के बाद खादी के प्रचार को अपना धर्म समझ लिया था। उन्होंने इस विषय पर एक छोटी सी पुस्तक छपवाई थी। जिसमें बताया गया था, "खादी के पहिनने से गृह-उद्योग पनप सकेंगे एवं गरीबों को रोजगार मिलेगा। देश का जो धन विदेशी कपड़ों की खरीदी के कारण बाहर जा रहा है, वह देश में ही रहेगा और बड़ी बात यह कि इससे स्वास्थ्य पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा।"

वे खुद खादी वस्त्र पहिनकर, सारे सिन्ध में प्रचार करते थे। उन्होंने 1920 में भिरियन गाँव में खादी-उद्योग भी स्थापित किए थे, जहाँ पर छात्र खादी बुनने का काम सीखते थे। साहिती और थरपारकर जिले, खादी-उद्योग के प्रमुख केन्द्र थे। साहिती जिले के बेराणी, शहदादपुर, टन्डो आदम, नौंशहरो, दौलतपुर, हालाणी और मियाणी में खादी के उद्योग थे। इसके सिवा हर गाँव में सूत कातने के केन्द्र थे।

विदेशी वस्त्रों को घरों में जमाकर, होली जलाने के सिवा कार्यकर्ता खादी की बिक्री के लिए कन्धों पर खादी के थान लेकर घर-घर बेचने निकलते थे। यह कार्य प्रांतीय सरकारों के गठन के बाद तक जारी था। सिन्ध के मुख्यमंत्री श्री अलहबख्श सूमरो भी खादी बेचने वाली टोलियों में शामिल थे।

एक और स्वदेशी-प्रचारक परसराम बालाणी

1921 में नवाबशाह के नौंशहरों के जमींदार परिवार के परसराम नारायणदास बालाणी ने जमींदार परिवार के सदस्य होने के बाद भी संकल्प कर रखा था कि जब तक देश में स्वराज नहीं आता तब तक वे नंगे-पाँव चलते रहेंगे। तेज गर्मी के मौसम में भी वे नंगे-पाँव तिलक स्वराज-फँड के लिए धन जमा करते फिरते थे। ऐसे तपस्वी कर्म के कारण वे बीमार हुए और 1924 में स्वर्ग-सिधार गए। वे, नवाबशाह जिला काँग्रेस कमेटी के ज्वाइंट सेक्रेटरी थे। वे, नवाबशाह के प्रसिद्ध बालाणी परिवार के सदस्य थे।

होम रूल के बदले रोलट एक्ट और जलियाँवाला नरसंहार

1914 में अँग्रेजों और जर्मनी के बीच यूरोप में पहिला विश्व -युद्ध शुरू हुआ। बम्बई में बम्बई के गर्वनर ने एक कान्फ्रेंस बुलवाई, जिसमें हिन्दुस्तानी सेना की सहायता लेने के लिए एक प्रस्ताव लाया गया।

लोकमान्य तिलक ने इस प्रस्ताव में अँग्रेज सरकार से, विश्व-युद्ध की समाप्ति के बाद हिन्दुस्तान में होम रूल लागू करने का वचन देने की शर्त रखी। किन्तु गर्वनर ने यह वचन दिए बिना प्रस्ताव पास करवा लिया। इस कारण लोकमान्य तिलक और उनके कई समर्थकों ने काँग्रेस छोड़ दी। महाराज लोकराम शर्मा ने हिन्दू अखबार में लिखा, 'जब तक हिन्दुस्तान को स्वतन्त्रता नहीं मिलती, तब तक हिन्दुस्तान भी विश्व-युद्ध में सहायता नहीं देगा।' इस पर हैदराबाद के कलेक्टर ने उन्हें बुलाकर, सेना में भरती-कार्य में बाधा उत्पन्न करने वाले ऐसे विचार भविष्य में न लिखने की चेतावनी दी।

काँग्रेस में इस विषय पर फूट पड़ने के बाद भी अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी ने अँग्रेजों को साथ दिया और कहा, 'विश्व-युद्ध के कारण जब अंग्रेज मुसीबत में हैं, तब हमें उनके लिए समस्याएँ पैदा नहीं करनी चाहिए।' गाँधीजी अँग्रेजों के लिए सेन में हिन्दुस्तानियों को भरती भी करने लगे। जबकि लोकमान्य तिलक के सिवा कई अन्य नेता, अँग्रेजों की नीयत का विश्वास नहीं करते थे।

1918में विश्व-युद्ध समाप्त हुआ। इस युद्ध में 10 लाख हिन्दुस्तानी सैनिकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे अँग्रेजों की जीत सम्भव हो सकी। अँग्रेजों ने सैनिक भरती करते समय घोषणा की थी कि वे यह युद्ध हिन्दुस्तान की सुरक्षा और स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे हैं। किन्तु जैसी कि लोकमान्य तिलक और अन्य नेताओं की शंका थी, अँग्रेजों ने होम रूल लागू करने की अपेक्षा, रोलट-एक्ट लागू कर दिया। इस कानून के अर्न्तगत किसी भी व्यक्ति को बिना वारन्ट के गिरफ्तार किया जा सकता था। इसके विरूद्ध न तो कोई वकील किया जा सकता था और न ही कोई अपील की जा सकती थी। इस कारण सारे देश की जनता में अँग्रेजों के विरुद्ध क्रोध भड़क उठा। जबकि जन-साधारण को गाँधीजी के कहे अनुसार विश्वास था कि होम रूल लागू किया जाएगा।

लोकमान्य तिलक ने इंडियन होम रूल लीग और श्रीमती एनी बेसेन्ट ने होम रूल लीग ऑफ इंडिया नामक संगठन का गठन किया। सिन्ध में लोकमान्य तिलक की लीग में डॉ. चोइथराम गिदवाणी, महाराज विष्णू शर्मा, सच्चानन्द फेरूमल, वीरूमल बेगराज, चोइथराम वलेचा और महाराज लुणीदाराम बूलकाणी आदि थे। एनी बेसेन्ट की लीग में शामिल हुए जयरामदास दौलतराम, ज़ेटमल परसराम, सन्तदास मंघाराम, दुर्गादास आडवाणी और डॉ. मोहनलाल सोन्यार।

रोलट एक्ट के विरुद्ध गाँधी ने सत्याग्रह शुरू किया और सारे देश में 30 मार्च 1919 के दिन हड़ताल करने का आव्हान किया। सिन्ध में अभूतपूर्व हड़ताल की गई। दिल्ली में हड़ताल के दिन हिन्दू और मुसलमानों ने मिलकर अभूतपूर्व एकता का प्रदर्शन किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने पुलिस को ललकारते हुए कहा, 'हम सीना खोल खड़े हैं, अब गोलियाँ चलाओ।' पंजाब में विरोध को दबाने के लिए सत्याग्रहियों के नेता डॉ. सत्यपाल और डॉ. कचलू को गिरफ्तार किया गया। इसके विरुद्ध 13 अप्रेल, 1919 वैसाखी के दिन अमृतसर के जलियाँवाला बाग में लगभग 20 हजार आंदोलनकारी जमा हुए। सभा शुरू होने के पहिले ही जनरल डायर ने चेतावनी दिए बिना सेना को अंधाधुंध गोलियाँ चलाने का आदेश दिया। जिससे लगभग एक हजार आंदोलनकारियों का जघन्य नरसंहार हुआ और दो हजार घायल हुए।

इस जलियाँवाला नरसंहार का बदला, वीर शहीद सरदार उधमसिंह ने लंदन में जाकर लिया।

अमृतसर काँग्रेस सम्मेलन के लिए सिन्ध से स्पेशल ट्रेन

19 दिसम्बर, 1919 में जलियाँवाला नरसंहार के शहीदों को श्रद्धांजलि देने और अँग्रेज सरकार के सामने निडरता का प्रदर्शन करने के लिए काँग्रेस का 34वाँ अखिल भारतीय सम्मेलन अमृतसर में हुआ। इसमें शामिल होने के लिए सिन्ध में इतना अधिक उत्साह था कि एक पूरी विशेष ट्रेन की व्यवस्था की गई। डॉ. चोइथराम गिदवाणी ने इसके लिए पूरे सिन्ध के काँग्रेस-जनों का आव्हान किया था। राष्ट्रीय-झन्डों से सजी-

धजी इस ट्रेन से झांझ-मंजीरे की इन्कार के साथ देश-भक्ति गीतों और नारों की गूँज हर स्टेशन पर सुनाई पड़ती थी। हर स्टेशन पर इस सिन्धी जत्थे का भाव-भीना स्वागत किया गया।

अमृतसर पहुँचकर सिन्धी कार्यकर्ताओं ने शहीदों की उस पवित्र धरती को चूमकर प्रणाम किया। डॉ. चोइथराम गिदवाणी की अगवानी में आए सिन्धीजनों ने अपने खाने-पीने की व्यवस्था खुद की।

स्वागत समिति पर अतिथि के रूप में बोझ बनने की अपेक्षा सम्मेलन के हर काम में हाथ बंटाने के लिए सिन्धी कार्यकर्ताओं ने साथ दिया। डॉ. गिदवाणी की अगवानी में प्रभात फेरी निकाल कर सारे अमृतसर में झुमिरि-छेज़ (सिन्धी लोक नाच और डांडिया) के साथ देश-भक्ति गीत, भजन और नारे गुँजाए गए। शाम को शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए शहीदों की जय-जयकार के साथ, सिन्धी-जत्थे ने जलियाँवाला बाग में प्रवेश किया। सिन्धी-जनों का उत्साह और उमंग देखकर, अन्य प्रदेशों के काँग्रेसियों में भी उत्साह की एक लहर सी दौड़ गई।

सिन्धी-जनों के उत्साह को देखकर पंजाब की स्वागत समिति के अध्यक्ष डॉ. कचलू और सम्मेलन के अध्यक्ष पं. मोतीलाल नेहरू ने डॉ. गिदवाणी के बहुत मना करने के बाद भी अपने विचार रखने के लिए मन्च पर आमंत्रित किया। डॉ. साहब ने थोड़े ही शब्दों में अपने विचार रखे और अन्त में अपने साथी तोलाराम बालाणी की कविता की ये पंक्तियाँ कहीं-

आ मिलो मैदान में जौहर दिखाने के लिए, जौहर दिखाने के लिए और वीर बनने के लिए।

मत हटो, अय्यार के जुल्मों-सितम से भाईयों! हम फकत पैदा हुए हैं आजमाने के लिए ।।

इन पंक्तियों को सुनकर लोग खड़े होकर तालियाँ बजाने लगे और झूमने-नाचने लगे, यहाँ तक कि मन्च पर बेठे नेता भी 'वन्दे मातरम' और 'भारत माता की जय' के नारे लगाने लगे। कुछ लोगों ने डॉ. साहब को बाहों में उठाकर, मंचासीन लोकमान्य तिलक और गाँधी के बीच में बिठा दिया।

डॉ. गिदवाणी के आव्हान पर सभी प्रान्तों के जत्थों ने अपनी भाषा में गीत व भजन गाने के साथ अपने प्रान्तीय लोकनृत्य भी प्रस्तुत किए।

जब पंजाबी जत्थे ने झूमर के साथ झूमते हुए-'तोप-तलवार कोलूं, खन्डे दे धार कोलूं, असां नईं हारना।' वाला गीत गुंजाया तो डॉ. चोइथराम ने मन्च से उठकर नाचते हुए नई तुक जोड़ी--'कदे नई हारना, भावे साडी जावे, असां नई हारना।'

इस सम्मेलन में महात्मा गाँधी और लोकमान्य तिलक के बीच मान्टीगो चेम्स फोर्ड सुधारों के विषय में गहिरे मतभेद उत्पन्न हुए, काँग्रेस इनके नेतृत्व में दो दलों में बंट गई थी। ऐसी स्थिति में जयरामदास दौलतराम ने इन सुधारों का एक ऐसा रूप तैयार किया जिस पर दोनों दल सहमत हुए। इस तरह एक सिन्धी की बुद्धिमानी का लोहा सभी को मानना पड़ा और कांग्रेस में एकता स्थापित हो सकी। इसीलिए गाँधीजी ने जयरामदास दौलतराम को 'सच्चा सोना' कहकर सम्बोधित किया था। ये वही जयरामदास दौलतराम थे, जिन्होंने आजादी के बाद पं. नेहरू के प्रधानमंत्री रहते हुए, आसाम के राज्यपाल के रूप में अपनी सूझ-बूझ से आसाम की हजारों एकड़ भूमि, चीन के कब्जे में जाने से बचाई थी।

सम्मेलन में डॉ. गिदवाणी ने बम्बई प्रान्त में शामिल सिन्ध की अलग प्रान्तीय काँग्रेस समिति के गठन का प्रस्ताव रखा, जो एकमतेन स्वीकार किया गया। जिसके बाद सिन्ध में प्रान्तीय काँग्रेस का गठन किया गया। जिसके पहिले अध्यक्ष पद पर डॉ. गिदवाणी आसीन हुए और अन्त तक प्रान्तीय काँग्रेस अध्यक्ष के रूप में कार्य करते रहे। वे सिन्ध में शेर-ए-सिन्ध के उपनाम से प्रसिद्ध थे।

स्वतन्त्रता के नाम पर विभाजन के बाद काँग्रेस द्वारा सिन्धी-जनों के विरुद्ध अन्याय-पूर्ण षड्यन्त्र किए जाने के कारण, उन्हें अपनी जन्म-भूमि से निर्वासित होना पड़ा। स्वतन्त्र भारत में भी सिन्धी-जनों की उपेक्षा और निर्मम व्यवहार किए जाने के कारण, डॉ. गिदवाणी ने काँग्रेस छोड़ दी। सिन्धी-जनों के पुनर्वास हेतु अथक सेवाएँ प्रदान कीं। 1952 के प्रथम लोकसभा चुनावों में डॉ. साहब, सोशलिस्ट पार्टी की टिकट पर महाराष्ट्र के थाणे से लोकसभा सदस्य चुने गए और आजीवन देश व समाज हितैषी कार्यों में लगे रहे।

सिन्ध का प्रतिबन्धित और जब्त-साहित्य

2200 पृष्ठ--हिन्दू अखबार एक अंक और 22 पुस्तकें

1857 के प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम के समय देश भर में अँग्रेज सरकार ने नरसंहार किया था। नरसंहार की इन खबरों को प्रकाशित करने पर अँग्रेज सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगाया गया था। इसका तुरन्त कड़ा विरोध करते हुए सिन्ध से प्रकाशित एक अखबार 'सिन्ध कासिद' ने 1857 के जुलाई अंक में सरकार को चेतावनी देते हुए लिखा था कि इन नादिरशाही फरमानों से जो परिणाम निकलेंगे वे स्वयं अँग्रेज सरकार के लिए हानिकारक सिद्ध होंगे। किन्तु अँग्रेज सरकार की यह दमनकारी नीति स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय तक सतत् चलती रही जिसके चलते भारत की विभिन्न भाषाओं के साथ सिन्ध से सिन्धी और गुरमुखी लिपी में लिखा गया साहित्य भी प्रतिबन्धित कर जब्त किया गया था। इसके पहिले 1907 में सिन्ध के विद्रोही कवि तोलाराम मेंघराज बालाणी 'आजिज' की 'मुल्क मदाह' नामक पुस्तक जब्त की गई थी।

स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु रचे गए साहित्य में कुल 2200 पृष्ठों वाली 22 पुस्तकें और टेबलाईज साईज की 40 पृष्ठो वाली 'हिन्दू' अखबार का अगस्त, 1931 में प्रकाशित 'लोकमान्य तिलक पर्चो' नामक अन्क भी जब्त किया गया था। इस साहित्य में प्रमुख रूप से देश-भक्ति गीतों के साथ कहानियाँ, लेख अैर बलिदानी जीवन-चरित्रों सहित सिन्धी में अनुवादित उपन्यास भी थे। इनमें राष्ट्र कवि हूँदराज 'दुखायल' द्वारा रचित 'फासी-गीत माला' और 'आलापे-आजादी' नामक दो पुस्तकों के सिवा द्वारकाप्रसाद रोचीराम शर्मा लिखित 'इंकलाब जिन्दाबाद' नामक रोमांचक कहानी प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है।

आलापे-आजादी के एक गीत की हिन्दी में अनुवादित दो पंक्तियाँ इस प्रकार थीं --

अब भी आने से अगर, करोगी इन्कार आजादी!

तो देखोगी नवजवानों के शीश, धड़ से अलग आजादी!!

'इंकलाब जिन्दाबाद' कलकत्ता निवासी दस वर्ष की बिन माँ की बच्ची गंगा और पाले हुए तोते की कहानी है। गंगा ने तोते को 'इंकलाब जिन्दाबाद' और 'हिन्दुस्तान आजाद' के नारे रटवा दिए थे। गंगा के पिता अँग्रेज सरकार के पुलिस विभाग में सब इंस्पेक्टर थे। शहर में नमक बनाने वाले हजारों सत्याग्रहियों पर पुलिस द्वारा निर्ममता से लाठियाँ बरसाईं जाती हैं जिससे कई सत्याग्रही घायल हो जाते हैं और कई शहीद हो जाते हैं। गंगा भी बन्दर सेना के साथ इस सत्याग्रह में भाग लेते हुए शहीद हो जाती है। सब इंस्पेक्टर पिता, अपनी बच्ची को शहीद होते हुए देखता है। इस हत्याकाँड के बाद सब इंस्पेक्टर घर पहुँचकर तोते के सामने आता है। तोते को दूर से ही देखकर 'इंकलाब जिन्दाबाद' का नारा उसके मुंह से फूट पड़ा है किन्तु गंगा के विछोह के कारण तोते के प्राण-पखेरू उड़ चुके थे।

1. फासी-गीत माला--रचयिता-हूँदराज 'दुखायल'
2. आलापे-आजादी (गीत)--रचयिता-हूँदराज 'दुखायल'
3. गाँधी माला (कविताएँ)-- रचयिता-महाराज कालीदास
4. मनमोहन भजनावली (देश-भक्तिगीत) --रचयिता-नथुरमल शर्मा
5. गाँधी गुलशन -- रचयिता- मोहनदास उधाराम
6. गाँधी गीत--रचयिता-चर्तुभुज लछीराम
7. आजादी भजनावली --रचयिता -नारायणदास 'आजाद'
8. स्वराज जो सनीहो -- रचयिता - जयरामदास मूलचन्दाणी
9. देशमाला (गुरमुखी लिपी में)
10. देशमाला (गुरमुखी लिपी में) भाग दो
11. तिलक जी याद--रचयिता -महाराज कृपालदास
12. स्वराज महातम --रचयिता-मोटणदास सोभराज
13. हिन्दू (अखबार) तिलक पर विशेषांक
14. बन्दी-जीवन (दो भाग) शचीन्द्रनाथ सान्याल के क्रान्तिकारी जीवन पर आधारित बंगला उपन्यास का सिन्धी अनुवाद

15. अजु-कल्ह जो सुधारो (नारायणदास किशन चतुर्वेदी के गुजराती उपन्यास का सिन्धी अनुवाद)
16. इंकलाब जिन्दाबाद (द्वारकाप्रसाद रोचीराम शर्मा की लिखी एक रोमांचक कहानी)
17. धारासना कहाणी (तीरथदास लेखराज की धारासना नमक डिपो सत्याग्रह पर लिखी रिपोर्ट)
18. धारासना ते काह (धारासना नमक सत्याग्रह पर लिखी पुस्तक)
19. कम्युनिस्ट पधरनामो (भाग एक)
20. कम्युनिस्ट पधरनामो (भाग दो)
21. जिन्ना खे जवाब (चन्द्रगुप्त विद्यालंकार द्वारा लिखित और लालचन्द आर्य द्वारा सिन्धी अनुवाद)
22. अँग्रेजी शासन के विरुद्ध एक छोटा पोस्टर
23. लड़ाईअ जो लर्ड़ाट ऐं कांयरनि जो कूकाट-- रचयिता-शाहनवाज पीरजादा

अँग्रेज सरकार द्वारा प्रतिबन्धित सिन्ध का यह साहित्य ब्रिटिश लायब्रेरी और इंडियन ऑफिस लायब्रेरी, लंदन में रखा गया है। इसकी खोज श्री हीरो ठकुर ने की और दबायल आवाज (दबाई हुए आवाजें) नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित की, जिसे सिन्धी अकादमी दिल्ली ने प्रकाशित किया है।

क्रमशः शेष अगले अंक में

सफरू थीन्दो तीर्थ का विमोचन

बीकानेर। रंगकर्मी एवं कवि सुरेश हिन्दुस्तानी के नये सिन्धी कविता संग्रह सफरू थीन्दों तीर्थ का विमोचन व्यास कॉलोनी में किया गया। विमोचन समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार राधाकिशन चान्दवानी ने कहा कि हिन्दुस्तानी की कविताएँ सामाजिक चेतना की कविताएँ है तथा ये कविताएँ आम आदमी के संघर्ष को परिलक्षित करती है। कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि आनन्द वी. आचार्य ने कहा कि सुरेश हिंदुस्तानी एक संवेदनशील निर्देशक होने के साथ-साथ कवि भी हैं तथा उनकी कविताओं में नाट्कीयता के पूरे तत्व विद्यमान है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सिन्धी लोक कलाकार चन्द्रप्रकाश आहुजा ने कहा कि सिन्धी में कविता संग्रह का प्रकाशन बहुत कम हो रहा है तथा ये कविता संग्रह सिन्धी साहित्य के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। इससे पूर्व विमोचित



संग्रह पर अपनी पाठकीय टिप्पणी में के. कुमार आहुजा ने कहा कि संग्रह की सिन्धी कविताएँ भाव बोध की कविताएँ है तथा छोटी कविताओं के माध्यम से बड़ी बात कहने की कोशिश की गई है। पुस्तक का परिचय सुरेश पाईवाल ने दिया। इस अवसर पर मनोज जोशी के निर्देशन में संग्रह की कविता शरणार्थी का नाट्कीय मंचन किया गया जिसमें जसराज सींवर तथा जयकिशन केशवानी ने अभिनय किया।

अपने लेखकीय वक्तव्य में सुरेश हिन्दुस्तानी ने कहा कि उनका प्रयास है कि अन्य भाषाओं की तरह सिन्धी भाषा में भी सृजन की निरंतरता होनी चाहिए तथा अधिकांश पत्र-पत्रिकाओं में सिंधी साहित्य को बराबर स्थान मिलना चाहिए। कार्यक्रम में प्रसिद्ध व्यंगकार बुलाकी शर्मा के प्रेषित वक्तव्य को भी पढ़कर सुनाया गया जिसमें उन्होंने संग्रह को सिन्धी साहित्य के लिए सुखद बताया। कार्यक्रम का संचालन सुरेश पाईवाल ने किया।

मन के दीप जलाने से जग में उजाला लाया जा सकता है : बाबा हरदेवसिंह

झाँसी। निरंकारी मिशन के प्रमुख गद्दीनशीन बाबा हरदेव सिंह जी महाराज गत दिनों झाँसी पधारे इस मौके पर झाँसी सहित दूरदराज क्षेत्रों से पधारे हजारों निरंकारी भक्तों ने बाबा हरदेव सिंह महाराज का भावभीना स्वागत किया। अपने भक्तों को संबोधित करते हुए बाबा जी ने फरमाया कि आज इन्सान को अपने जन्म की कद्र करनी चाहिए जीवन का सीमित सफर घृणा, ईर्ष्या, अभिमान के बिना व विनम्रतापूर्वक तय करना चाहिए। इन्सान को तरक्की पाने के लिए कर्मयुक्त जीवन जीना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि खुदगर्ज, अज्ञानी तथा लालची लोग संसार का वातावरण दूषित कर रहे हैं। संत कल्याणकारी कार्य करते हुए जीवन यात्रा तय कर रहे हैं तथा वातावरण में प्रेम के तराने 'भाई चारा' एवं एक-दूसरे के काम आने की भावना के बोल-बोल रहे हैं।



साधू, संत, पीर, पैगम्बर सभी ने इसे ही इन्सान के सफल जीवन का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन सबसे श्रेष्ठ जीवन है सबसे श्रेष्ठ जीवन प्राप्त करने के बाद आदमी घिनौने कार्य कर रहा है। रामजी को तो मानता परन्तु रामजी की बात नहीं मानता, रामजी की जय-जयकार करता है परन्तु अनुसरण रावण का करता है यह ठीक नहीं है। मन के दीप जलाने से जग में उजाला लाया जा सकता है। मन में रावणरूपी अंधकार को धारण करने से जागृति नहीं लाई जा सकती है। युगों-युगों से यही समझाया जा रहा है। परन्तु इन्सान इसे भूलता जा रहा है और इसे ही मजबूरी मान लेता है। सच्ची अमीरी ज्ञान की दौलत है, यह दौलत हमेशा कायम रहती है।

इस अवसर पर बीना नगर से भी सैकड़ों निरंकारी भक्तों ने भी वहाँ पहुँचकर बाबा हरदेव सिंह महाराज जी के दर्शनों का एवं उनके प्रवचनों का लाभ लिया। कार्यक्रम में भोपाल, विदिशा, सागर, ग्वालियर, दतिया, ललितपुर, डबरा, बांदा सहित अनेक अन्य क्षेत्रों से भक्तों ने पधारकर बाबा श्री का दर्शन लाभ लिया।

सागर में नारायण दास निरंकारी प्रमुख बने

सागर। संत निरंकारी सत्संग भवन सुभाष नगर में विशाल सत्संग का आयोजन किया गया। इसमें संत मंडल सत्संग ब्रांच सागर के नये प्रमुख नारायणदास निरंकारी को जोनल इंचार्ज डॉक्टर बी.के. कश्यप ने निरकारी परम्परा से दुपट्टा पहनाया गया।

इससे पूर्व प्रमुख रामचंद निरंकारी को बाजी ने ज्ञान प्रचारक की सेवा दी गई सागर ब्रांच के नये प्रमुख ने अपने प्रवचनों में कहा कि दास का यह सौभाग्य है कि दास ने पूज्य दयाराम, पूज्य दौलतराम जी के परिवार में जन्म लिया जहां शुरु से संत-महात्माओं का आना-जाना था और उनकी सेवा करने का अवसर मिलता था।

ज्ञातव्य हो कि नारायणदास निरंकारी स्वर्गीय दयाराम जोनल इंचार्ज (सागर) के सुपुत्र हैं। कार्यक्रम में सागर क्षेत्र के सांसद भूपेन्द्र सिंह ठाकुर ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज भौतिक सुख तो सारी दुनिया में भरा पड़ा है लेकिन अध्यात्मिक सुख हमें भारत वर्ष में मिलता है क्योंकि भारत देश संत महात्माओं का देश है, जहां अत्यात्मिक शांति का खजाना है। इस अवसर पर सागर के विधायक शैलेन्द्र जैन ने अपने सम्बोधन में निरंकारी सेवादल की सेवा की, प्रशंसा की कार्यक्रम में सिंधी समाज के गणमान्य नागरिक एवं धर्मप्रेमी जनता मौजूद थी, बीना से भी काफी संख्या में निरंकारी में निरंकारी महात्माओं ने पहुंचकर श्री नारायणदास निरंकारी का स्वागत किया एवं बधाईयाँ दी।

कहानी

छांव



- प्रो. इंदिरा बलदेव बुधरानी (पुना)

दिल में सोच्युम त हिन लेख जो उनवान छाया रखां पर वरी ख्याल आयो त मतां केरु इएं समझे त मां तव्हांखे छाया छोकरीअ जे बारे में बुधाए रही आहियां। पर शायद केरु इएं बि समझे त मां कहिंते लगल भूत-प्रेत जी छाया बाबत् लिखी रही आहियां। केतिरा अर्थ जो अनर्थ बि त कंदा आहिन। इनमें कहिंजो बि दोहु कोन्हे। सो सांईं तव्हांखे नेकी दिये। अचूं था गाल्ह जे गाटे ते। असांजी मम्मी बि त चवंदी आहे 'बचिड़ी, शल कदहिं कोसो वाऊ न लगदइ।'

वण जी छांव जो छा चइजे? वणंदड़ ऐं थधी मन खे मौज ऐं तन खे तरावट बख्शींदड! गोठन में जदहिं जञ निकंरदी आहे त नचंदा, टिपंदा गाईंदा, बैण्ड बाजन सां झूमंदा अगियां वधंदा रहंदा आहिन। घोड़े ते चड़िहियल घोट, कुंवार वण जे हेठां शीतल छांव में अची साही पटींदा आहिन। उहा सागी छोकरी वण जे छांव में फरासी, तदो विछाए बियन साहेड़ियुन सां रांद रुंद कंदी हुई। घर छदे उन्हीअ ई वण हेठां पढ़ाई कंदी हुई। अजु कुंवार बणिजी गोठ खां विदा थी रही आहे। वण दिल में साचियो त अहिड़ी जातल सुञातल कुंवार खे कहिड़ी सूखड़ी दियां? दियणी बि जरूर आहे। वण जे टारियुन ते वेठल पखी लातियूं लवण लगन था। कोयल मन मोहींदड़ आवाज में गाइण लगे थी, वण जा कुछ पन घोट कुंवार जे मथां किरन था। गोया वणु खेनि नज़राने जे रूप में उहे पन दिना ऐं पख़ियुन जे लातियुन वसीले आसीस कंदे ही लफ्ज़ चया 'माइके की कभी ना याद आए ससुराल में इतना प्यार मिले।' उस मां पंधु करे अची थकल टुटल कहिं वण हेठां ब घडियूं उसाइश वठण लाइ बीहबो त थकु ई लही वेंदो आहे।

पधरू सुकी वेंदो आहे। पाण खे ताज़ो तवानों समझबो आहे। उन वक्त वणु वरदान साबित थंदो आहे। इन्हीअ ई वण जी छांव में छोकरा छोकरियूं पींघा ठाहे लुदंदा आहिन ऐं मज़ो माणींदा आहिन, रादियूं कंदा आहिन।

बी छांव थींदी आहे पाड़ेसिरियुन जी। चवंदा आहिन त पाड़ो अबो अमड़ थींदो आहे। उन्हन सां कदहिं बि न फिटाइजे। 'का महिल कहिं जहिड़ी!' कख जो बि लख में त लख जो बि कख में कमु पवंदो आहे। ओखीअ सोखीअ में संदनि ई आसरो हूंदो आहे। घर जो वदो केदांहु बाहिर वेंदों आहे त पाड़ेवारन खे पारत करे पहिंजा बार बच्चा छदे वेंदों आहे। बीमारी सीमारीअ में बि त पाड़ेवारा ई कम ईंदा आहिन। वक्त ते का शइ (चीज़) खपे त पाड़ेवारा ई दुख-सुख में भाङे भाईवार थींदा आहिन। तहिंकरे पाड़ेवारन सां साज सलोक्त में हलण ई अकलमंदी आहे। असीं जहिं हंधि नौकरी करियूं था कहिं आफीस में, कम्पनीअ में, फैक्ट्रीअ में स्कूल, कालेज में, दुकानदार वटि या बिये कहिं बि हंधि त उतांजे मालिक जी छांव में रहणो ई पवंदो आहे। उन मां फायदो उहो आहे त मालिक जी छांव हेठि रहण सां पियो वधबो वीझबो सुखियो रहिबो। दीहुं सुख सां गुजरंदो। मन जी शांति रहंदी, घर गृहस्थीअ जो गादो आराम सां पियो हलंदो, तहिं करे बास जी छत्र छाया बि जरुरी आहे। आराम जूं घड़ियूं धारण लाइ इहा। छांव बि जरुरी आहे।

बी छांव थींदी आहे पाड़ेसिरियुन जी। चवंदा आहिन त पाड़ो अबो अमड़ थींदो आहे। उन्हन सां कदहिं बि न फिटाइजे। 'का महिल कहिं जहिड़ी!' कख जो बि लख में त लख जो बि करव में कमु पवंदो आहे। ओखीअ सोखीअ में संदनिई आसरो हूंदो आहे। घर जो वदो केदांह बाहिर वेंदों आहे त पाड़ेवारन खे पारत करे पहिंजा बार बच्चा छदे वेंदों आहे।

धन दौलत जी छांव बि अजीब छाया आहे। पैसे पदार्थ जे नशे जी छांव में धनवान बि रहंदो त संदसि गरीब मित्र पिण जीवन काटींदा। नाणे जी चकमकी छांव जे दिल लुभाईंदड़ कशिश में ऐब पिण सभु ढकजी वेंदा आहिन। इन छांव में माणहूं बेफिक्र थी जीवन गुजारे थो। हर हंधि संदस बोलबाला थिये थो। मानु-शानु बरकरार रहंदो अथस, ऐश पियो करे।

धन दौलत जी छांव बि अजीब छाया आहे। पैसे पदार्थ जे नशे जी छांव में धनवान बि रहंदो त संदसि गरीब मित्र पिण जीवन काटींदा। नाणे जी चकमकी छांव जे दिल लुभाईदड़ कशिश में ऐब पिणसभु ढकजी वेंदा आहिन। इन छांव में माणहूं बेफिक्र थी जीवन गुजारे थो।

सुहिणा-सुहिणा वस्त्र पियो पहिरे। मज़ाल आहे जो उन जे अगियां केरु कुछी सघे। उन छांव में दबदबो, टेगर, चतुरबाजी चोट चढ़िहियल हूंदा आहिन। नाणे जी छांव में वेठो रहे सवें अची सलामी भरींदा ऐं छांव खे वधीक छायादार कंदा।

उहदे इकबाल जी छांव जो छा चइजे? कुर्सीअ जी छांव में वेठल शख्स इयें समझंदो आहे त इहा कुर्सी मू सां सदाईं कायम आहे। कुर्सीअ जे छांव जे नशे में हू एतिरो त चूर थी वञे थो जो पाण जहिड़ो कहिंखे समझे ई नथो। इन किस्म जी छांव में वेठल माणहूं इएं समुझंदा आहिन त जे के आहिन से हू ई आहिन। खांउन को मथे आहे ई कोन। जेकी करे सघन था। हू ई करण में समर्थ आहिन। उहदे इकबाल जे नशे जी छांव में अची कहिंजो भलो करण त दूर रहियो पर पाण बियन लाइ खड्डु खोटण जा पह पियो पचाईंदो आहे। टिक सां वर लाहे छडींदो आहे।

अचो त हाणे पलउ पायूं। सिजु उभरंदो आहे त लहंदो पिण आहे। मथे जिक्र कयल सभु छाऊं नेठि हेठि लहियो अचन, पटि पवन। नेठि त वणु सुकी वेंदो टारियूं सुकी वेंदियूं, भज़ी पवंदियूं। पाड़े जी छांव नौकरी-चाकरी, धंधे, धाड़ीअ में सेठ, मालिक, आफीसर जी छांव, उहदे इकबाल जी छांव, इहे सभु बेबका ऐं बे जटादार आहिन। बालादस्त केदी महिल बि जेरदस्त ते नाराज़ थी मुंह मोड़े, नौकर खे लत हणी कढे, नौकर वञी उस में विहंदो पर उस कहिड़ी? दुनिया जे लाहियुन चाड़हियुन जी उस!

बेठलाईअ ते कहिड़ो भरवसो? धन दौलत, पैसे, पदार्थ जी छांव बि वंहदड़ ऐं हलंदड़ आहे। लही वेंदी त वरी उहाई उस, ऐश आराम हराम। उहे ई सुका, टुकर उहा ई दुखी जिंदगी, फाका ऐं रोज़ा।

पर हिकड़ी बी छांव आहे जा बे बका न आहे पर दाइमा रहंदड़ आहे, कदहिं बि लहंदड़ न आहे। सदाईं शीतलता बख्शींदड़ आहे, सुखदायक आहे। दाइमा आनंददायी आहे, उहा आहे दर्वेशन, संतन महात्माउन, सतपुरुषन जी छांव, उन्हनजी छांव में रहिबो त उस सदाईं असां खां किनारो कंदी। सतपुरख त पाण उस सहंदा आहिन, ततियूं-थधियूं सहंदा वाउ सहंदा पर बियन खे छांव में रखंदा।

संदनि महिर जी पाक नज़र जी छांव, शीतल बोलन, नर्साहत आमेज उपदेशन, निहाल कंदड़ मुश्क जी छांव सदा रहंदी। उस कदहिं बि न चढ़हंदी।

हमेशा शीतलता जो साथु रहंदो। अचो त अहिड़न ईश्वर जे एवजियुन महात्माउन जी छांव में रही वधूं वीझूं, जीवन सदाईं बाग बहार रखूं। रुहानी रहबर सतगुरन जी महिर मया जी सदा आनंद दायी छांव में रहंदासीं जिते उस आहे ई कोन, रुगो छांव ई छांव, लगातार छांव ऐ बेइन्तहा छांव हूंदी।

वो रूठा रहेगा उसूलों से जब तक,
नसीब उसके राज़ी न हों उससे तब तक।

क़दम दर क़दम आज़माइश है मेरी,
मुझे इम्तहानों में रक्खोगी कब तक।

गुनाह करके जीना बहुत ही कठिन है,
कचोटे-ज़मीर उसका उसको न जब तक।

ख़ुशी और ग़म मुझको यकसाँ रहे हैं,
न आया कभी कोई शिकवा भी लब तक।

सदा पीठ पर जख़्म खाए हैं 'देवी',
ये तोहफ़े मिले मुझको अपनों से अब तक।

– देवी नागरानी

कहानी

कहानी और किरदार

लेखिका : डॉ. कमला गोकलानी
अनुवाद : देवी नागरानी

गौरव बिस्तर पर करवट बदलता रहा, कोशिश के बावजूद भी उसे नींद नहीं आई। साथ में लेटी सीमा ने फिर से जानने की नाकामयाब कोशिश की। 'आखिर क्या हुआ है? इतने परेशान क्यों हो?' पर गौरव ने बिना जवाब दिये दूसरे बाजू पलटते हुए परमात्मा को प्रार्थना की, कि मानसी ने उसके मुत्तल्लक फैसला लेते समय अपने पुराने स्वभाव से काम लिया हो।

उसके सामने क्लास रूम का मंज़र रू ब रू हुआ। बीस बरसों की नौकरी में उसने खुद को इतना बौना महसूस नहीं किया। बोर्ड ऑफ एज्यूकेशन की ओर से सेंसर क्लासेस की परीक्षा जारी है। आज उसकी ड्यूटी रूम नं. 4 में रही उस कमरे में ड्यूटी देने से हरेक इनचार्ज कतराता है। आजकल आम तौर पर शागिर्द अड़ियल और ग़ैर जिम्मेदार ही हैं, पर रूम नं. 4 का राकेश! कह कर तौबा कर लो उसे नक़ल करने से रोकने वाले का, वो घर-बार डांवांडोल कर देता है, इसलिए राकेश के मामले में देखा-अनदेखा करना पड़ता है। पर गौरव ईमानदारी और इंतज़ाम का निर्वाह करने वाला है। इसलिये घर से निकलते वक्त भी सीमा ताकीद देती रही कि जानबूझ कर विवेक के ग़ुलाम बनकर अनचाही परेशानी न मोल लेना।

जैसे कि आज बोर्ड से चेकिंग के लिए ख़ास पार्टी आ रही है, इसलिये प्रन्सिपिल ने जानबूझ कर उसकी ड्यूटी रूम नं. 4 में लगाई।

गौरव बिस्तर पर करवट बदलता रहा, कोशिश के बावजूद भी उसे नींद नहीं आई। साथ में लेटी सीमा ने फिर से जानने की नाकामयाब कोशिश की। 'आखिर क्या हुआ है? इतने परेशान क्यों हो?' पर गौरव ने बिना जवाब दिये दूसरे बाज़ू पलटते हुए परमात्मा को प्रार्थना की, कि मानसी ने उसके मुत्तल्ल फैसला लेते समय अपने पुराने स्वभाव से काम लिया हो।

राकेश बेल बजने के 10 मिनट पश्चात ही क्लास में आता है। आज भी ऐसा ही हुआ, इसलिये गौरव ने यह सोचकर कि और शर्गिदों को लिखने में बाधा न हो, उसे बिना तलाशी के परीक्षा लिखने दी और उसने सोचा कि चोर को सुराग के साथ पकड़ने का मौका और भी मिलेगा।

अभी पाँच मिनट भी नहीं बीते कि चेकिंग पार्टी आ गई उसके कमरे में पार्टी की कन्ट्रोलर मिस मानसी पहुंची, जो अपने सख्त मिजाज़ के लिये मशहूर है। वो अक्सर अख़बार और मैग्जीनस में मानसी के बारे में पढ़ता था कि वह अपनी मेहनत और मजबूती के बलबूते पर एक आम टीचर से इस अहम ओहदे पर पहुंची है। पर यह जानकारी फ़कत गौरव को है, कि मानसी के सख्त दिल होने का जिम्मेदार वह खुद है, वह तो हंसती, खिलखिलाती मस्त रहने वाली 'ईजी गोइंग' लड़की थी, 'टेक इट ईज़ी' उसका तक़िया क़लाम रहा। इस कदर कि जिन्दगी के अहम संजीदा मोड़ पर भी उसने किसी फैसले को इतनी संजीदगी से नहीं लिया।

जैसे बाज़ की तेज नज़र शिकार पर होती है, वैसे मानसी भी सीधे राकेश के टेबल के पास आ खड़ी हुई। राकेश बेफिक्र होकर काग़ज पर से सवालों का जवाब ढूंढ रहा था। मानसी ने गुस्से से गौरव से कहा 'मास्टर साहब! इतनी ग़ैर जिम्मेदारी से ड्यूटी दे रहे हो? आपने इस लड़के की तलाशी ली थी। तुरन्त इसकी तलाशी ली जाये।' और फिर राकेश से मुखाबित होकर सख्ती से पूछा 'तुम्हारा नाम क्या है?' राकेश ने शरारती मुस्कान के साथ कहा '533495' मानसी ने कहा 'अपना अड्मिशन कार्ड दिखाओ'

राकेश ने जैसे ही जेब से अपना कार्ड निकाला, तो साथ में एक काग़ज ज़मीन पर गिर पड़ा। जाँच करने पर उस काग़ज पर नक़ल करने वाले मैटर की अनुक्रम सूची थी कि कौन सा मैटर कहाँ है। इस बीच राकेश की जेब से गौरव ने जवाबों के कुछ काग़ज निकाले, पर राकेश पर किसी बात का असर ही नहीं हुआ, इत्मीनान से जेब से कंघी निकाली, और अपने बालों को सँवारने लगा जिससे वे दोनों झेंप गए। मानसी को बीस साल पुराने वो मंजर याद आए जब गौरव भी ऐसे ही उसकी आँखों में देखकर बाल सँवारते हुए कहता था। 'मानू बस ऐसे ही उम्र भर तेरे नयनों में निहारता रहूँ'... और मानसी गर्दन झुकाकर शर्माती थी, कुछ पलों में मानसी माज़ी की यादों से बाहर आई जब गौरव चिल्लाया 'अरे इसके जुराबों में रामपुरी चाकू।'

राकेश के खिलाफ़ कानूनी कार्यवाही का केस तैयार करने का फैसला प्रिन्सिपल और तमाम टीम ने लिया, शायद यह जरुरी था, पर जैसे ही इस ग़ैर जिम्मेवार कार्य के लिए गौरव को दोषी ठहराते हुए उसके खिलाफ़ रिपोर्ट लिखने की शुरुवात मानसी ने की तो प्रिन्सिपल ने हाथ जोड़कर विनती की 'मैडम! ये ना इन्साफी नहीं करना। गौरव इस स्कूल का निहायत ही ईमानदार और मेहनती शिक्षक है। मैंने इस साल उसका नाम 'शिक्षक पुरुस्कार' के लिये प्रोपोज किया है। आपकी रिपोर्ट, उसकी की कई सालों की सेवा को दाग़दार बना देगी। दरअसल राकेश बदला लेने के लिये किसी भी हद तक गिर सकता है...।'

'हूँ' मानसी ने सख्त लहज़े में कहा 'वो लड़का तो मेरे ख़िलाफ़ भी क़दम उठा सकता है, इसका मतलब यह तो नहीं कि गुनाहगार को गुनाह करने की छूट दे दी जाये, उसके ख़िलाफ़ कोई कार्यवाही ही न की जाये?'

राकेश के खिलाफ़ कानूनी कार्यवाही का केस तैयार करने का फैसला प्रिन्सिपल और तमाम टीम ने लिया, शायद यह जरुरी था, पर जैसे ही इस ग़ैर जिम्मेवार कार्य के लिए गौरव को दोषी ठहराते हुए उसके खिलाफ़ रिपोर्ट लिखने की शुरुवात मानसी ने की तो प्रिन्सिपल ने हाथ जोड़कर विनती की 'मैडम! ये ना इन्साफी नहीं करना। गौरव इस स्कूल का निहायत ही ईमानदार और मेहनती शिक्षक है। मैंने इस साल उसका नाम 'शिक्षक पुरुस्कार' के लिये प्रोपोज किया है। आपकी रिपोर्ट, उसकी की गई सालों की सेवा को दाग़दार बना देगी।

इतने में 'पार्ट ए' पेपर के खत्म होने पर घंटी बजी और गौरव भी फ़ारिग होकर ऑफ़िस पहुंचा, और अत्यंत विनम्रता से कहा 'मैडम, आइ अम सारी (I am sorry...) दरअसल राकेश के क्लास में देर से आने के कारण मेरे मन में ड्यूटी और परिवार में फर्ज़ के बीच में जंग रही और आप आ गई, सीमा ने चलते-चलते भी कहा था बच्चों की कसम। वक्त की नज़ाकत देखते हुए फिलहाल काग़ज फाइल में रखें। वह एक बार फिर माज़ी की ओर लौट गई। इस सीमा ने ही उसे गौरव से जुदा किया था। कुछ दिन तो वह बेहद मायूस रही, पर जल्द ही खुद को संभलकर सारा ध्यान कैरियर पर लगा दिया। सोचती रही 'आज सीमा के एवज वही गौरव के बच्चों की माँ होती तो और क्या चाहती?' उसे याद आया कि वह और गौरव एक ही स्कूल में शिक्षक थे... हम ख़याली होने के नाते दोनों का उठना-बैठना साथ होता था... इंटरवेल के वक्त, फ्री पीरियड में भी, जब और शिक्षक ग़ैर जरूरी बातों में वक्त जाया करते थे तब ये दोनों चाय पीते-पीते कभी अदब और कला के बारे में तो, कभी बहस करते किसी नई कहानी या नावल पढ़ने के पश्चात उसका पोस्ट मार्टम करते उसके किरदारों की कमजोरियों और खूबियों पर राय पेश करते। गौरव हमेशा उन नाटकों पर अफ़सोस ज़ाहिर करता जिसमें नायक अपनी नायिका को अज़ाबों की गर्दिश में छोड़कर बुजदिली से मैदान छोड़कर भाग जाते। बहस करते मानसी उसे समझाने की कोशिश करती कि सच्चा प्यार करने वाले नायक के लिए जरुर कोई ऐसी मजबूरी रही होगी और वह बेहद लाचारी की हालत में प्यार को कुरबान करते हुए उस राह से मुड़ जाता होगा... सच्चा प्यार तो अमर है, कभी खत्म

होने वाला नहीं, बड़ी बात तो यह है कि शादी और प्यार का इतना गहरा संबंध नहीं कि बिना उसके दीवानापन छा जाये। विपरीत इसके शादी के बाद फ़र्ज़ और हकों की जंग में गृहस्थी की ओढ़ी हुई जिम्मेदारियों की वजह से प्यार का नफ़ीस, जज़्बा कुरबान हो जाता है।'

'पागल है वो नायक जो रात-दिन प्यार-प्यार तो करते हैं। पर वक्त आने पर पीठ दिखाकर नायिका को सारी जिन्दगी रोने के लिये छोड़ जाते हैं...' गौरव बेहद संजीदगी से कहता और मानसी खिलखिलाकर जवाब देती, 'गौरव! टेक इट ईजी' तुम हर बात को गंभीरता से लेते हो। किरदार और हक़ीक़ी जिन्दगी में बहुत फ़र्क है। लेखक कहानी लिखने के पहले अपने किरदार का अंत तय कर लेता है, जो कभी सुखांत तो कभी दुखांत होता है पर असली जिन्दगी में इन्सान हालात के बस होकर सुलह करते हुए फैसला करता है। ऐसे फैसले कभी अज़ाब देने वाले और दुखदाई भी होते हैं, और न चाहते हुए भी गलतफ़हमियां पैदा करने वाले भी और फिर दोनों के बीच में लंबी खामोशी छा जाती थी।

उसकी गुफ्तगू अब स्टॉफ रूम तक महदूद न रही थी, पर सुनसान वादियाँ, पहाड़ी-झरनों, बहती नदियाँ, पेड़-पौधों, उनकी मुलाकात के ज़ामिन रहे। ऐतिहासिक इमारतों की सैर करते वो दोनों भी खुद को किसी राजा-रानी से कम नहीं समझते, कभी-कभी मानसी गौरव से कहती 'अगर तुम्हारे माँ-बाप हमारे मेल-मेलाप को बर्दाश्त न कर पाए तो?' गौरव बिना किसी सोच के बुलंद आवाज़ में मर्दानगी दिखाते हुए कहता 'मानू दुनिया की कोई भी ताक़त तुझको मुझसे छीन नहीं सकती। मैं जल्द ही पिताजी को मनाकर इस रिश्ते को सामाजिक मान्यता दिलाऊंगा।'

आज सीमा का नाम सुनते मानसी थोड़ी देर के लिए डांवाडोल हुई पर फिर सोचा बिचारी सीमा का क्या दोष? यही कि वह एक धनवान की बेटी है और मानसी की गरीब विधवा माँ में दहेज दे पाने की तौफीक नहीं थी। ये नहीं तो कोई और सीमा गौरव की जीवन संगिनी बन जाती थी। कोई भी और किसी और का हक़ छीनकर कहाँ चैन पा सकेगी। मानसी ने उस स्कूल से अपना तबादला करा लिया था। पर सीमा के बारे में स्टॉफ से जानकारी मिली थी कि वह निहायत कोमल हृदय वाली नारी थी। उसे अगर पता होता तो वह खुद ही मानसी के रस्ते से हट जाती।

पर, जब गुरु ने घर में मानसी का जिक्र किया तो गोया तूफान बर्पा हो गया। गुरु को यह पता नहीं था कि घर में उसे एक धड़कते दिल वाला इन्सान न मानकर, एक 'चीज' समझकर उसके पिता ने उसका सौदा एक साहूकार की बेटी से कर दिया था और उनसे दहेज की बातचीत के आधार पर अपनी दो बेटियों के रिश्ते भी तय कर दिये थे। गौरव बहुत ही तड़पा पर उसके पिता ने उसे लिखे हुए परचे दिखाते हुए कहा कि अगर वह इन्कार करेगा तो दोनों उसके माँ-बाप आपघात कर लेंगे। पागलपन की हदों से गुज़रता हुआ गौरव स्कूल से छुट्टी लेकर घर बैठ गया, शायद मानसी से नज़रें मिलाने की उसमें क्षमता न थी- आखिर मानसी खुद उसके पास आई और गुरु ने आज जैसी ही लाचारगी से कहा था 'मानू, मेरे मन में प्यार और फ़र्ज़ के बीच जंग जारी है क्या फैसला लूं? मैंने कहा टेक ईट ईजी प्लीज, हम कोई कहानी के किरदार नहीं है। मेरी चिंता मत करो, मुझमें ये सदमा बर्दाश्त कर पाने का आत्मबल है।'

आज सीमा का नाम सुनते मानसी थोड़ी देर के लिए डांवाडोल हुई पर फिर सोचा बिचारी सीमा का क्या दोष? यही कि वह एक धनवान की बेटी है और मानसी की गरीब विधवा माँ में दहेज दे पाने की तौफीक नहीं थी। ये नहीं तो कोई और सीमा गौरव की जीवन संगिनी बन जाती। कोई भी और किसी और का हक़ छीनकर कहाँ चैन पा सकेगी। मानसी ने उस स्कूल से अपना तबादला करा लिया था। पर सीमा के बारे में स्टॉफ से जानकारी मिली थी कि वह निहायत कोमल हृदय वाली नारी थी। उसे अगर पता होता तो वह खुद ही मानसी के रास्ते से हट जाती। खैर जिन्दगी एक हक़ीकत है कोई कहानी नहीं। यह सोचकर मानसी ने गौरव के ख़िलाफ़ लिखी हुई रिपोर्ट फाड़ दी।

मातृभाषा के उत्थान हेतु विभूतियों को सोने से तोला जाये तो भी कम है : लाल

सभा का अन्तर्राष्ट्रीय अवार्ड 'सुहिणा सिंधी' समारोह सम्पन्न

इन्दौर। **अखिल भारत सिंधी बोली एवं साहित्य सभा** द्वारा सिंधू परिषद इन्दौर के सहयोग से विभिन्न क्षेत्रों में मातृभाषा के उत्थान हेतु ख्याति प्राप्त विभूतियों को गत दिवस इन्दौर विश्वविद्यालय के सभागृह में अवार्ड से नवाजा गया। सभा के प्रदेश जोनल चेयरमैन साबू रीझवानी ने बताया कि अखिल भारत सिंधी बोली एवं साहित्य सभा विगत 53 वर्षों से लगातार सिंधी भाषा, साहित्य, संस्कृति एवं कला के विकास हेतु पूरे भारत में भरसक प्रयास कर रही हैं। सभा द्वारा साहित्य, कला, संगीत, नृत्य, नाटक, पत्रकारिता, शिक्षा, सिंधियत, चित्रकारी तथा सिंधी भाषा के संरक्षण एवं अध्यापन के क्षेत्र में सराहनीय सेवाओं के प्रोत्साहन हेतु प्रति वर्ष 50,000/- से लेकर 25,000/- के आठ एवं 11,000/- के तीन नगद राशि के साथ शाल, परम्परागत टोपी एवं यादगार स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

रीझवानी ने बताया कि गत दिवस सम्पन्न गरिमामय समारोह में सिंधी साहित्य अवार्ड **डॉ. हूंदराज बलवानी**, सिंधी संगीत अवार्ड **श्रीमती कोशी लालवानी (दुबई)**, सिंधी ड्रामा अवार्ड **शरद भगतानी**, सिंधी भाषा बचाने में योगदान अवार्ड मारूई संस्था दिल्ली **सुश्री वीना श्रृंगी** को प्रदान किया गया। सिंधियत फैलाने हेतु अवार्ड **हांगकांग के लाल हरदासानी** को देकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त सिंधी पत्रकारिता हेतु **'रचना पत्रिका'** आदिपुर महाविद्यालय में सिंधी भाषा पढ़ाने हेतु **डॉ. कन्हैयालाल लेखवानी (पूना)** तथा सिंधियत के क्षेत्र में अवार्ड से **दिलीप टेकचंदानी (अहमदाबाद)** को सम्मानित किया गया। इसके साथ ही जूरी बैठक में अवार्ड देने के निर्णय लिये गये है, उनमें **सिंधी डायमंड स्पेशन इन्टरनेशनल अवार्ड दुबई के मूरजमल मंधनानी,** साहित्य क्षेत्र में लाइफ टाईम अचिवमेंट अवार्ड गोर्धन भारती (अजमेर) सिंधी पाकिस्तान के दो अवार्ड सिंधी सख्शियत अवार्ड जनाब अयाज़ गुल तथा **सिंध फनकार अवार्ड दीबासहर** को निकट भविष्य में प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा। **'सुहिणा सिंधी'** समारोह के मुख्य अतिथि **हांगकांग से पधारे लाल हरदासानी** ने बताया कि मातृभाषा के विकास हेतु सराहनीय सेवा करने वाले विभूतियों का जितना सम्मान किया जाये कम है यहाँ तक उन्हें सोने से भी तोला जाये तो भी कम होगा।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए सभा के अध्यक्ष **सुन्दर अगनानी** ने प्रभावी स्वागत भाषण दिया तथा मातृभाषा के अहिमयत भरा प्रतिवेदन पेश किया। अतिथि सिंधु परिषद इन्दौर के संस्थापक अध्यक्ष मनोहर देव ने सभा के नेक कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अतिथियों को भी सभा के अध्यक्ष सुन्दर अगनानी ने परम्परागत टोपी एवं शाल से सम्मानित किया गया। जबकि सभा के महासचिव **लक्ष्मण भम्भानी**, सभा के **जोनल चेयरमैन साबू रीझवानी** तथा संस्कृति चेयरमैन श्री सालवानी ने आकर्षक स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह में ख्याति प्राप्त कलाकार चुन्नीलाल वाधवानी का भी सम्मान किया गया। अशोक बुलानी के निर्देशन में हास्य नाटिका पेश कर वाहवाही लूटी। श्रीमति कोशी लालवानी ने भी मधुर गीत-संगीत से समा बांधा। कार्यक्रम में नगर की महान हस्तियाँ ईश्वर झामनानी, शंकर लालवानी, जवाहर मंगवानी, डॉ. जय परयानी, गुलाब ठाकुर, जे.पी., मूलचंदानी, केशव राजानी आदि ने समारोह की गरिमा बढ़ाई। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन श्रीमती संगीता अत्रे ने किया तथा आभार परिषद् के अध्यक्ष चुन्नीलाल वाधवानी ने व्यक्त किया।

घर जमाई

- सावन कुमार 'उद्दासी'

वसायम वञीं साहुरा, बणी घर जमाई,
पहिंजे पेर ते हुयम कुहाड़ी हलाई,
वयो आहियां फासी यारों महाजाल मां,
धिके सहुरो थो कढे मूंखे ससुराल मां।

देखारे थो सहुरो, हाणे मूंखे काठी,
वञे केदाहुं हाणे ही निबल नाठी,
अची कोई बचाए, हिन जंजाल मां,
धिके सहुरो थो कढे मूंखे ससुराल मां।

जुल्म ज़ाल जा आहिन मूंते, सदा सवाया,
हीसाए थी हर पल, आ कलजुग जी माया,
फाथो आहियां मां साहुरन जी टकसाल मां,
धिके सहुरो थो कढे, मूंखे ससुराल मां।

धोबीअ जे कुत्ते जहिड़ी आ हालत बणी,
रखे पति तव्हांजी शाल पाण धणी,
सिखो सबक यारों, मुहिंजे हाल मां,
धिके सहुरो थो कढे मूंखे ससुराल मां।

न का सहमन जी आदत, साली पले थी,
नका सिक सालन मां मूंखे मिले थी,
जीउ जलंदो रहे थो, हिन जंजाल मां,
धिके सुहरो थो कढे मूंखे ससुराल मां।

लगन ससु सभागीअ जा था मूंखे सुआ,
चवे वातु फाड़े थी, वञी मरू मुआ,
मिल्या केई सदमा हिन भोचाल मां,
धिके सहुरो यो कढे मूंखे ससुराल मां।

सूर साहुरन जा हिकु न मूंखे मिलन था,
बियो माइट बि जोइ जो मजू चवन था,
नित बरदों रहां थो, बरंदड़ मशाल मां,
धिके सहुरो थो कढे मूंखे ससुराल मां।

करे जेको भुल थो, बणी घर जमाई,
बिन्हीं जहान में तहिं आ इज्जत विञाई
मिले सुख थो पहिंजे घर में ई जाल मां,
धिके सहुरो थो कढे मूंखे ससुराल मां।

सिन्धु महक के सम्माननीय सदस्यों को जन्मदिन की बधाई एवं शुभकामनाएँ



सुंदरदास सुंदरानी
जन्मदिन - 1 मई
बृजलाल सुंदरानी
क्लाथ मर्चेन्ट, बीना (म.प्र.)

सुरेश कुमार गाबा
जन्मदिन - 3 मई
एन.जी. इंटरप्राइजेज
43, जेल रोड, इन्दौर (म.प्र.)

नीलेश कुमार भाटिया
जन्मदिन - 4 मई
भाटिया कलेक्शन
नावल्टी मार्केट, जेल रोड, इन्दौर (म.प्र.)

महेश दुहलानी
जन्मदिन - 18 मई
डी-2, अर्चना विहार कालोनी,
नेहरु नगर, बिलासपुर (छ.ग.)



विक्रम अशोक कुमार भाटिया
जन्मदिन - 24 मई
एसडीबी-157, आदिपुर (कच्छ)



जेठो पंजाबी
जन्मदिन - 27 मई
ओम अपार्ट-404,
उल्हास नगर-01



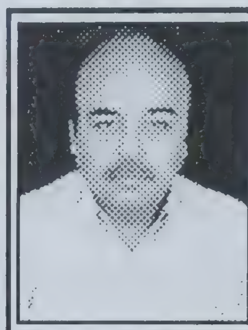
प्रकाश गुवालानी
जन्मदिन - 28 मई
गुवालानी चेम्बर
लिंक रोड, बिलासपुर (छ.ग.)



अशोक कुमार मेठवानी
जन्मदिन - 3 मई
गुरुनानक प्लाई स्टोर
स्टेशन रोड, बीना (म.प्र.)



शंकरलाल नागवानी
जन्मदिन - 3 मई
शंकर किराना स्टोर
कटोरा तालाब, रायपुर (छ.ग.)



विजय कुमार आहूजा
जन्मदिन - 15 मई
उमंग ट्रेडर्स
स्टेशन रोड, रायपुर (छ.ग.)

प्रताप के. मजीठिया
जन्मदिन - 21 मई
प्लाट-ए, वार्ड-6, राम बाग,
चार रास्ता, गांधीधाम



विष्णु गेहानी
(शिक्षाविद)
जन्मदिन - 26 मई
साधू वासवानी स्कूल
बैरागढ़, भोपाल



पुरुषोत्तम माखीजानी
जन्मदिन - 28 मई
पूजा स्टेट एजेन्सी
गांधीधाम (गुजरात)

घर की रोशनी

लेखिका-श्रीमती कमला बुटाणी
अनुवाद-धर्मप्रकाश तेजा

चीना हाथ में कंघी लेकर मम्मा कहती हुई आई

मम्मा-मम्मा मेरी दो चोटियाँ बनाओ।

कांता खाना बनाने के काम में व्यस्त थी, गुस्से से कहती है जाओ जाकर अपनी दादी माँ से बनवाओ। स्कूल में देर हो रही है?

चीना ने ना कहते हुए कहा मम्मा-दादी माँ बाल ठीक से नहीं बनाती तुम बनाओ ना 'मम्मा'। कांता ने जोर से एक थप्पड़ चीना के गाल पर मार दिया।

एक-दूसरे के पीछे लड़कियों के पैदा होने पर कांता का तो जैसे दिमाग ही खराब हो गया था। कौन उसके घर का दीपक जलायेगा कौन खानदान का चिराग रौशन करेगा। कौन इसका वारिस बनेगा?

कांता खुद ग्रेजुएट है शादी से पहिले वह स्टेनों के पद पर कार्य करती थी पर बाद में शादी होने के कारण उसे नौकरी छोड़नी पड़ी। दो बच्चियाँ होने पर भी कांता की सास और पति ने भी उसे कुछ नहीं कहा, बस यह तो उसके दिमाग का ही फितूर था। पता नहीं क्यों वह अपनी बच्चियों से दूर-दूर रहती थी। वे बेचारी तो दादी माँ के प्यार में पलकर बढ़ी हुई थी।

घर में एक चन्दर ही कमाने वाला था, इस कारण बच्चियों का कान्वेट में भी नहीं पढ़ा सकती थी और ना ही उनकी अच्छी परिवरिश के लिए ही उनके यहाँ पैसा था। वह हर समय लड़कियों को ही कोसती रहती थी और उनके ऊपर उसका गुस्सा लगा ही रहता था और ज्यादातर वह घर से बाहर रहने में ही सुकून महसूस करती थी। उसका न तो घर की देखभाल में मन लगता था और ना ही घर के सदस्यों की सेवा में ही मन लगता था।

किसी को पता नहीं होता था कि कांता दोपहर का समय कहाँ जाकर बिताती है? वह तो किसी न किसी सहेली का नाम लेकर चली जाती थी और चन्दर के ऑफिस से लौटने के समय ही लौटकर आती थी एक दिन कांता किसी गली में से आ रही थी कि उसकी सहेली ने उसे देखा और पूछा, कांता तुम आज यहाँ कैसे?

कांता भी उसे देखकर मुस्कराने लगी। काफी समय बाद दोनों सहेलियाँ आपस मिलकर बेहद प्रसन्न हुई थी। कांता ने देखा कि कंचन के बाल कटे हुए हैं, आँखों पे काला चश्मा और श्रीमती साड़ी पहनी हुई थी। कोई भी उसे देखकर उसकी रईसी का अंदाजा लगा सकता था।

कंचन ने कांता को देखते ही कहा, कांता आज मेरे घर चलो। मेरे पति रामचंदानी का यहाँ तबादला हुआ है। हम दो महीनों से यहाँ आए हैं।

कांता ने टालते हुए कहा, आज नहीं और किसी दिन चलूंगी। आज तो मैं जल्दी में हूँ ऐसा कहकर वह तेज कदम बढ़ाती हुए किसी मंदिर में जा पहुंची। साधु अपन धूनी लगाए बैठा था और कितनी औरतें हाथ जोड़कर आँखों को मूंदकर उसके सामने बैठी थी। बारी-बारी से हर एक औरत साधु के आगे आकर अपने दुखों की कहानी सुना रही थी। साधु उन्हें थोड़ी भभूत (राख) और पहनने के लिए एक धागा देता जा रहा था।

कांता भी उसे देखकर मुस्कराने लगी। काफी समय बाद दोनों सहेलियाँ आपस मिलकर बेहद प्रसन्न हुई थी। कांता ने देखा कि कंचन के बाल कटे हुए हैं, आँखों पे काला चश्मा और श्रीमती साड़ी पहनी हुई थी। कोई भी उसे देखकर उसकी रईसी का अंदाजा लगा सकता था। कंचन ने कांता को देखते ही कहा, कांता आज मेरे घर चलो। मेरे पति रामचंदानी का यहाँ तबादला हुआ है। हम दो महीनों से यहाँ आए हैं।

कांता भी साधुओं के चक्कर में ऐसा फंसी की रोज सहेली का बहाना कर मंदिर में आकर हवन और जाप कराती थी। बेटा होने के लालच में वह साधुओं को काफी पैसा देती थी। यह सब कुछ वह अपने पति से छुपाकर करती रही। उस दिन भी राख की पुड़िया और धागा लेकर घर की ओर जा रही थी अचानक रास्ते में बारिश हुई और कांता भीगते हुए आकर घर पहुंची। उस दिन चन्दर घर आ चुका था उसने कांता से पूछा कि वह आज कहां गई थी, तब कांता ने कहा, सहेली के यहां गई थी। उस दिन बात वहीं समाप्त हो गई।

कुछ दिनों के बाद कंचन रास्ते में फिर कांता से मिल गई, उसे जबरदस्ती वह अपने घर लेकर आई, कांता ने देखा कि कंचन का घर वाकई में कंचन का है। नये जमाने की सभी चीजों से सजाया हुआ था। कंचन ने घर आते ही अपनी सास के पाँव छुए। उसकी सास ने उसे आशीर्वाद दिया। फिर वह कांता के साथ बातें करने बैठी तब तक कंचन चाय नाश्ता लेकर आई।

ऐसे ही चाय का दौर चल रहा था कि दो बच्चियाँ वहाँ हँसती हुई आयी एक पाँच वर्ष की एक सात वर्ष की लग रही थी।

आते ही किलकारी करते हुए 'मम्मा-मम्मा' करके अपनी बाहें फैलाकर कंचन के गले में झूलने लगी। कंचन ने अपने गले से उनकी बाहें छुड़ाते हुए कहा, 'आरे बढ़की और छुटकी' आंटी को नमस्ते तो करो। दोनों बच्चियों ने शर्माते हुए नमस्ते की। उन्हें देखते ही कांता को अपनी बच्चियों की याद आ गई।

उसने कंचन से पूछ तुम्हे कितने बच्चे हैं ? कंचन ने कहा बस यही जो देख रही हो, सामने हैं। 'क्या तुम्हारी बच्चियाँ कान्वेंट में पढ़ती हैं ?'

कांता ने कहा, नहीं वे लोकल स्कूल में पढ़ती हैं।

कंचन ने कांता की ओर मुखाबित होकर कहा, कांता तुम्हें पता है कि मैं नौकरी करती हूँ, शाम को दोनों बच्चियों को मैं खुद पढ़ाती हूँ। दोनों क्लास में फर्स्ट आती हैं।

सुबह को भी मैं खुद उन्हें तैयार करके भेजती हूँ इन्होंने ट्यूटर नहीं रखा था। बच्चों को माँ-बाप द्वारा प्यार से पालना जरूरी है इससे बच्चों में अच्छे संस्कार पड़ते हैं, और खुद को भी संतोष मिलता है कि मेरा बच्चा क्या पढ़ा रहा है 'क्या करता है, कहां के संस्कार अपनाता है।'

कांता मन ही मन शर्मासार हुई। उसे अपनी बच्चियों पर दया आई उसे खुद का मन कचोटने लगा। वह बच्चों को पढ़ाना तो दूर की बात है उनके बात संवारने के कहने पर भी वह उन्हें डांटती है कितनी ना अच्छी है उसकी बच्चियाँ। जो भी दे दो, वह चुपचाप खा लेती थी। खुद ही पढ़कर होमवर्क और क्लास वर्क करती थी। न उसने खुद उन्हें प्यार दिया है, तब बच्चियाँ उन्हें कैसे प्यार करें। वे तो दादी माँ के साथ ही प्यार करती थी।

कांता मन ही मन शर्मासार हुई। उसे अपनी बच्चियों पर दया आई उसे खुद का मन कचोटने लगा। वह बच्चों को पढ़ाना तो दूर की बात है उनके बात संवारने के कहने पर भी वह उन्हें डांटती है कितनी ना अच्छी है उसकी बच्चियाँ। जो भी दे दो, वह चुपचाप खा लेती थी। खुद ही पढ़कर होमवर्क और क्लास वर्क करती थी। न उसने खुद उन्हें प्यार दिया है, तब बच्चियाँ उन्हें कैसे प्यार करें। वे तो दादी माँ के साथ ही प्यार करती थी।

जाते समय गेट के पास कांता ने उसे आहिस्ता से कहा, 'कंचन' क्या तुम्हें बेटे होने के तमन्ना नहीं है ? क्या तुम बेटे के लिये कोई कोशिश नहीं करती हो ?

कंचन ने हँसते हुए कहा 'न बाबा न कौन फिर रिस्क उठाएगा ?' मैंने तो दूसरी बच्ची के समय ही ऑपरेशन करा लिया, अब फिर काहे की तमन्ना ? कांता ने उदास होकर कहा 'मुझे तो बेटा होने की बहुत तमन्ना है।' कंचन ने हँसते हुए कांता के चेहरे को सहलाते हुए कहा अरे कांता, तू पढ़ी लिखी होकर सोलहवीं सदी की बातें कर रही हो, आजकल बेटे ओर बेटी में क्या अंतर है ?

पगली, लड़कियाँ माँ-बाप की बुढ़ापे में ज्यादा ही सेवा करती है। उनका अपने माँ-बाप के लिए ही सदा

मन भटकता है। घर के कामों में भी हाथ बंटाती है और बेटों की तरह आवारा होकर तंग भी नहीं करती फिर बेटे आजकल कौन सा शादी के बाद साथ रहते हैं। हर किसी को आजादी चाहिए। गर बेटा आवारा हो जाए तो समझो बुढ़ापे में दूसरा ही दुःख, आँखों की नींद भी हराम कर देते है मैं तुम्हें भी यह सलाह देती हूँ कि दोनों बच्चियों की परवरिश बेटों की तरह करके उन्हें भी डाक्टरी वगैरह करवाकर उनमें अच्छे संस्कार डाल जैसे वे भी समाज और देश की अच्छी सेवा कर सके। कांता के चेहरे का रंग बदलने लगा। कंचन से विदा लेकर वह पूरी रास्ते भर में सोचती आई। वह खुद को मन ही मन फटकारने लगी और सोचने लगी कि कैसे उसने बेटे के मोह में बेटियों को कैसे नजर अंदाज करके उन्हें प्यार, ममता और उनकी देखभल से उन्हें वंचित किया है, बेचारियों को सिर्फ फटकारती रहती हूँ। कितनी न अच्छी और बेचारियाँ मासूम है मेरी बच्चियाँ।

उसने चंद्र से भी बात की, उसने भी हां कहा। कांता-कंचन के ऑफिस में नौकरी के लिए गई और वह नौकरी उसे मिल गई। उसने अपने बच्चियों को इंग्लिश स्कूल में एडमीशन दिलवाई। रोज सुबह जल्दी उठकर बच्चियों का तैयार करती थी शाम को ऑफिस से लौटकर खाना बनाने से पूर्व टाईम निकालकर उन्हें पढ़ाती थी। समय गुजरते देर नहीं लगती। चीना अब सुंदर एक्टिव ग्रेजुएशन करके एयर होस्टेज बनी और टीना अपनी मेहनत और लगन से आई.ए.एस. करके आफिसर बन गई। आज कांता गर्व से सिर ऊँचा करके चलती है। उसे यह महसूस ही नहीं होता कि उसे बेटा नहीं है।

कैसे ने 'मम्मा-मम्मा' करके आकर चिपटती थी और एक मैं जो उन्हें धकेलकर दूर कर देती थी। सिर्फ बेटियों पर अपनी माँ जैसी ममता की मूर्त सास को भी बुढ़ापे में घर गृहस्थी का झंझट देकर मैं, साधुओं के पीछे दौड़ रही हूँ, वक्त और पैसा भी बर्बाद कर रही हूँ। कंचन सही बोल रही है, अगर बेटे की आस में तीसरी भी बेटी पैदा हो जाए तो फिर मैं क्या करूंगी।

तेज कदमों से वह घर पहुंची आज दोनों बच्चियों को अपनी बाहों से समेटकर वह प्यार करने लगी। उसने यह सोच लिया कि बच्चों को अच्छी एज्युकेशन दिलाने और घर का स्टैण्डर्ड बनाने के लिए वह फिर नौकरी करेगी, सासु तो वैसे भी घर को सम्हालती ही है।

उसने कंचन को दूसरे-दिन अपने विचार बताये, तो उसने कहा कि उनकी कम्पनी में एक स्टेनोग्राफर की जगह खाली है।

उसने चंद्र से भी बात की, उसने भी हां कहा। कांता-कंचन के ऑफिस में नौकरी के लिए गई और वह नौकरी उसे मिल गई। उसने अपने बच्चियों को इंग्लिश स्कूल में एडमीशन दिलवाई। रोज सुबह जल्दी उठकर बच्चियों का तैयार करती थी शाम को ऑफिस से लौटकर खाना बनाने से पूर्व टाईम निकालकर उन्हें पढ़ाती थी। समय गुजरते देर नहीं लगती। चीना अब सुंदर एक्टिव ग्रेजुएशन करके एयर होस्टेज बनी और टीना अपनी मेहनत और लगन से आई.ए.एस. करके आफिसर बन गई। आज कांता गर्व से सिर ऊँचा करके चलती है। उसे यह महसूस ही नहीं होता कि उसे बेटा नहीं है। बेटियाँ तो बेटों से भी ज्यादा लायक निकली। कांता-कंचन को कैसे भुला पाएगी, जिसने उसे नये जमाने की नई रोशनी दिखाई। सच भी है अगर लड़का घर का दीपक है तो लड़की घर की रोशनी।

कहानी

उलझन

रमेश की जुबान पर एक ही नाम की रट लगी रहती थी। उठते, बैठते और समझते सिर्फ उसी के नाम का ध्यान करता था और खाली पन्नों पर बैठकर उसी का बार-बार नाम लिखता था उसी नाम ने उसे बहुत उलझन में डाल दिया था रमेश के रिटायर होने में अभी 5 साल थे। उसे ईश्वर ने भी बेटियाँ दी थी। उसके घर में हर प्रकार के सुख मय्यसर थे, पर उसके मन को शांति नहीं थी। उसका मन हमेशा अशांत रहता था, मालूम नहीं क्यों? उसी सवाल की निशानी का जवाब सिर्फ रमेश दे सकता था। उसकी इसी हालत के कारण उसकी पत्नी विमला बहुत परेशान थी रमेश और विमला दोनों एक ही ऑफिस में नौकरी करते थे। रमेश की उलझन को सुलझाने और समझने के लिए विमला ने कई प्रयत्न किये कि रमेश की उलझन क्या है। आखिर विमला एक दिन कामयाब हुई और उसके दिल का हाल ले ही लिया। यहां सवाल हाल लेने का नहीं था पर उलझन को सुलझाने का हल ढूंढना था। रमेश ने अपनी दिल का राज खोलते हुए कहा कि मैं जब 23 वर्षों का था और नौकरी करते 4 वर्ष हुए थे तब मेरे परिवार वालों ने मेरी सगाई करवाई। जिस लड़की के साथ मेरी सगाई हुई थी उसका नाम मोहिनी था जैसा सुन्दर नाम था ऐसी उसकी सुंदरता थी उसमें शक नहीं है कि वह रंग की सांवली थी पर उसकी सुंदरता मन को मोहने वाली थी। वह सीधी और गुणवान लड़की थी। सिन्ध में मोहिनी हमारे नगर के और हमारे मोहल्ले में रहती थी दोनों साथ-साथ खेले थे दोनों एक-दूसरे के घर आते-जाते थे।

हिन्दुस्तान-पाकिस्तान होने के बाद भी यहाँ हिन्दुस्तान में आकर शहर के एक ही मोहल्ले में रहने लगे। दोनों का एक-दूसरे के लिए प्यार था। मोहिनी के पिता और मेरे पिता के बीच में बरसों से यानि कि पाकिस्तान में दोनों के बीच में विवाद पैदा हुआ। मोहिनी का बाप अभिमानी और घमण्डी था। पैसे और ओहदे के कारण व सभी से वाहियात बात करता था। यहां तक कि एक दिन मेरे पिता से भी उन्होंने गलत बात कर ली और वाहियात रिमार्क पास कर दिया। वह रिमार्क मेरे पिता के दिल में चुभ गये। मेरे पिता ने कसम खाई कि इस बात का मैं बदला लूंगा। सगाई के बाद मैंने सोचा कि कहीं शादी के बाद मेरा पिता मोहिनी को दुखी ना करें और उसके पिता के कारण मोहिनी से न बदला ले, यह बात मुझे पसंद नहीं थी। मैं नहीं चाहता था कि आगे चलकर अपना गृहस्थ जीवन दुखी करूं और कहीं मोहिनी वह दुख सह न सके, इस कारण मैंने मोहिनी से अपना रूख मोड़ लिया और शादी करने से इंकार किया और सगाई तोड़ दी और तुमसे शादी कर ली थोड़े-बहुत दिनों बाद मोहिनी की शादी एक इंजीनियर के साथ हुई। वह अपनी जिन्दगी बड़े मजे से गुजार रही थी उसे एक बेटा भी हुआ। जैसा कि मोहिनी बी.ए. पास थी इस कारण दोनों पति-पत्नि नौकरी करते थे। उनका बेटा एक अच्छे स्कूल में पड़ता था। दो वर्ष पहले मोहिनी और उसका पति स्कूटर से जा रहे थे कुदरत को शायद यह मंजूर नहीं था कि एक छोटा परिवार सुख, चैन और मस्ती से जिन्दगी गुजारें। काल शायद इसी तलाश में था कि किसी जगह मोहिनी के सुहाग ठिकाने लगाऊं। जिस वक्त दोनों स्कूटर से जा रहे थे तब स्कूटर स्लिप हो गया, दोनों गिर पड़े। स्कूटर से गिरने के बाद मोहिनी का पति वहीं मर गया और मोहिनी बच गई। जिस समय मैंने यह खबर सुनी, उसी समय मुझे बड़ा झटका लगा और पुरानी यादें ताजा हो आई। मेरे दिल में फिर मोहिनी के लिए प्यार उमड़ आया। मैं चाहता हूँ कि मोहिनी के पास जाकर माफी मांगू। जैसा कि मेरे पास दो बेटियाँ हैं और मोहिनी के पास एक बेटा है, मैं चाहता हूँ कि मोहिनी के बेटे को गोद लूँ और अपनी सम्पत्ति का वारिस बनाऊं। जिससे मेरे दिल का बोझ कम हो सके। इसी उलझन में हूँ कि क्या करूं और उसी सवाल का जवाब, आज, मैं तुमसे मांग रहा हूँ कि मैं क्या करूं? रमेश के यह शब्द सुनकर विमला चुप हो गई और उसने कोई जवाब नहीं दिया। रमेश की उलझन, उलझन में रह गई और वह खुद से पूछने लगा कि क्या मोहिनी यह बात कबूल करेगी?

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका -

सिन्धू महक का वार्षिक या आजीवन सदस्य बनने हेतु इस सदस्यता फार्म को काटकर पूर्ण रूप से साफ शब्दों में भरकर भेजें साथ सदस्यता शुल्क का ड्राफ्ट भी संलग्न कर भेजें।

पता -

धर्म प्रकाश तेजा

(सम्पादक) सिन्धू महक

एफ - 5, श्रद्धा अपार्टमेंट, संस्कार स्कूल के पास, लक्ष्मण नगर,

बैरागढ़, भोपाल (म.प्र.) - 462030, E-mail : sindhumahak@yahoo.com

मो. 09300691132, 09589024860 फैक्स - ....

प्रिय पाठकों,

आपसे अनुरोध है कि सिंधू महक पत्रिका के संबंध में अपने विचार एवं सुझाव पत्र के माध्यम से अवश्य भेजें, जिससे हम पत्रिका को और सुंदर बना सकें। आपके विचारों एवं सुझावों का हम स्वागत करेंगे।

(सम्पादक)

आग्रह

प्रिय पाठकों,

कृपया जब कभी भी आप सफर पर जाएं तो पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यक, राष्ट्रीय मासिक पत्रिका सिंधू महक अपने साथ ले जाएं। स्वयं पढ़ें औरों को पढ़ाएं।

सिंधु महक

मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान राज्यों में सर्वाधिक प्रसारित

एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट, संस्कार स्कूल के पास, बैरागढ़, भोपाल-462030

E-mail : Sindhumahak@yahoo.com, मोबाईल : 09589024860, 09300691132

कृपया अपना फोटो यहाँ पर चिपकायें।

(सदस्यता फार्म)

प्रति,

महाप्रबंधक (प्रसार)

सिंधू महक

सदस्यता हेतु शुल्क	
वार्षिक शुल्क	आजीवन शुल्क
200 रु.	2100 रु.

(डाक खर्च सहित)

विषय:- सदस्यता प्रदान करने बाबत्।

महोदय,

मैं सिंधू महक मासिक पत्रिका का नियमित सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। जिसके लिए आवश्यक धनराशि रु. .... का भुगतान नगद/डिमान्ड ड्राफ्ट/मनी आर्डर चैक क्र. .... के द्वारा भेजा जा रहा है।

मेरा पता निम्नानुसार है :-

1. नाम ....
2. जन्म दिनांक ....
3. डाक का पूरा पता ....
   ....
   ग्राम .... जिला .... प्रदेश .... पिन कोड ....
4. फोन नं. .... मोबाइल नं. .... फैक्स नं. ....
5. ड्राफ्ट/मनी आर्डर/चैक क्र. .... दि. .... धनराशि ....

नोट :- 1. ड्राफ्ट / मनी आर्डर / चैक सिंधू महक के नाम से भेजें। 2. फार्म हिन्दी में ही स्वच्छ अक्षरों में भरें।

सिंधु महक

मोबाईल : 09589024860, 09300691132

एफ-5, श्रद्धा अपार्टमेंट, संस्कार स्कूल के पास, पो.बाक्स नं. 5, बैरागढ़, भोपाल-462030

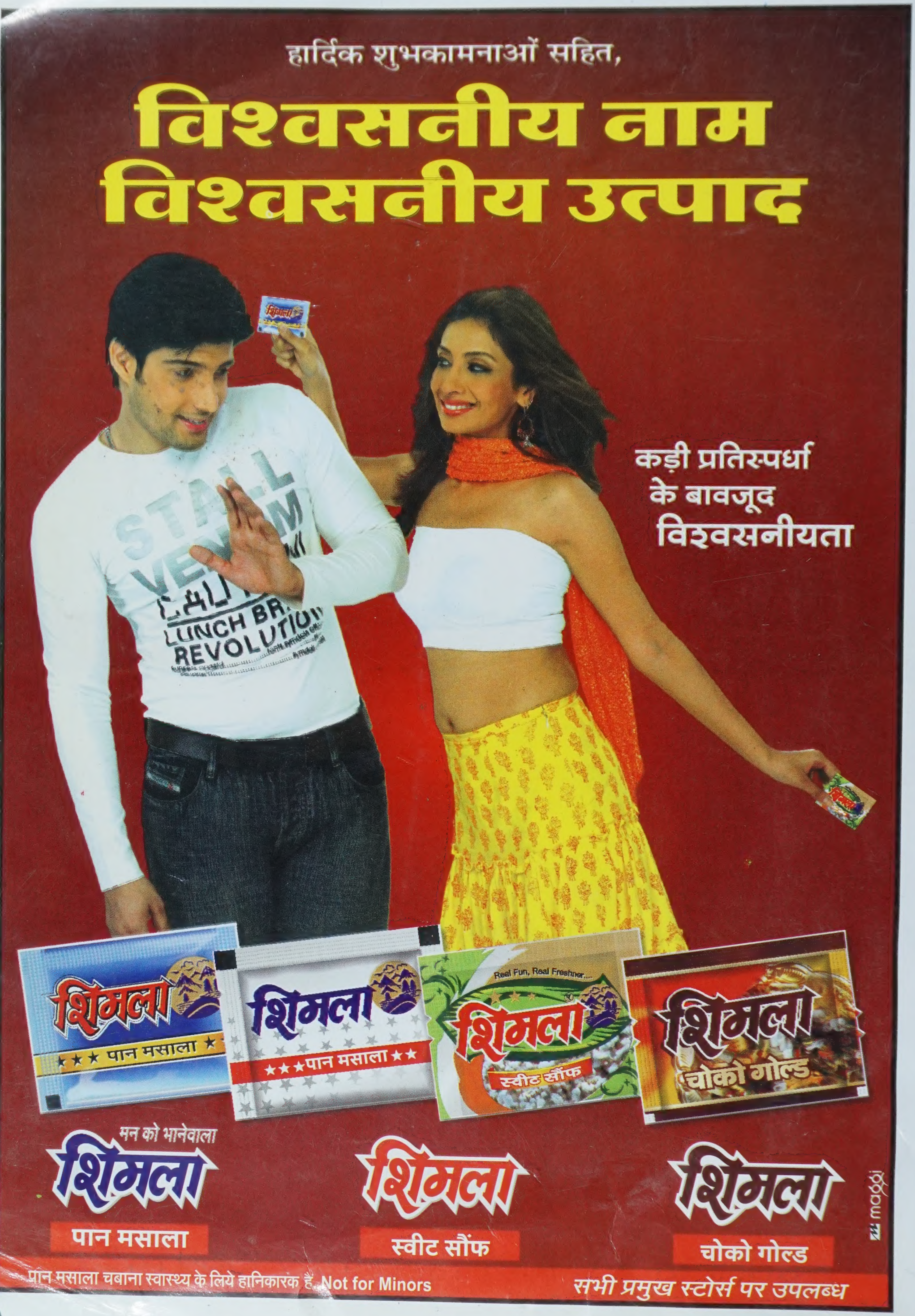
श्री .... को सिंधू महक का वार्षिक सदस्य बनाकर रुपये .... प्राप्त किये सधन्यवाद।

प्राप्तकर्ता का नाम ....

पद ....

दिनांक .... स्थान ....

हस्ताक्षर



हार्दिक शुभकामनाओं सहित,
विश्वसनीय नाम
विश्वसनीय उत्पाद
कड़ी प्रतिस्पर्धा
के बावजूद
विश्वसनीयता
शिमला
पान मसाला
शिमला
पान मसाला
Real Fun, Real Freshner....
शिमला
स्वीट सौंफ
शिमला
चोको गोल्ड
मन को भानेवाला
शिमला
पान मसाला
शिमला
स्वीट सौंफ
शिमला
चोको गोल्ड
पान मसाला चबाना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है. Not for Minors
सभी प्रमुख स्टोर्स पर उपलब्ध